शुक्ल पक्ष, 23 वर्ष, अंक 151 पृष्ठ 08 मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | मंगलवार 25 जून 2024 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

संसद सत्र का हुआ आगाज, हंगामा बरपा

नेता सदन एवं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शपथ ग्रहण की, विपक्ष ने नीट पर किया हंगामा

नई दिल्ली

18वीं लोकसभा के पहले सत्र की पहली बैठक में प्रधानमंत्री सहित मंत्रिपरिषद के सदस्यों ने शपथ ग्रहण की। प्रोटेम स्पीकर भर्तृहरि महताब की अध्यक्षता में सदन ने शुरूआत में राष्ट्रगान के बाद मौन रखा। इसके बाद नेता सदन एवं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शपथ ग्रहण की। नई संसद में पहले शपथ ग्रहण समारोह से पहले सुबह राष्ट्रपति भवन में महताब को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने शपथ दिलाई। राष्ट्रपति ने महताब को सहयोग करने के लिए पैनल भी तय किया था। इसमें कोडिकुन्नील सुरेश, टीआरबालू, राधा मोहन सिंह, फगन सिंह कुलस्ते और सुदीप बंदोपाध्याय का नाम शामिल था। इन्हें प्रधानमंत्री के बाद शपथ दिलाई जानी थी, लेकिन विपक्षी सदस्यों कोडिकुन्नील सुरेश, टीआरबालू और सुदीप बंदोपाध्याय शपथ के समय सदन में उपस्थित नहीं थे। बाकी तीनों पैनल सदस्यों ने शपथ ग्रहण की। इसके बाद कैबिनेट मंत्रियों राजनाथ सिंह, अमित शाह, नितिन गडकरी सहित एक-एक कर सबने शपथ ली। कैबिनेट के बाद स्वतंत्र प्रभार राज्यमंत्रियों और राज्यमंत्रियों ने शपथ ली। इसके बाद अल्फाबेटिकल क्रम में राज्यों के सासंदों को शपथ दिलायी जा रही है। सबसे पहले आंध्र प्रदेश से सांसदों ने शपथ ग्रहण की। ज्यादातर मंत्रियों ने अपने राज्य की भाषा में शपथ ली। केन्द्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान के शपथ ग्रहण के दौरान विपक्ष ने शोर किया। इस दौरान विपक्ष के नेता नीट-नीट शेम-शेम के नारे लगाने लगे। हाल ही में नीट की परीक्षा का पेपर लीक होने के मुद्दे से राजनीति गरमा हुई है। सदन की शुरूआत में विपक्ष के नेता हाथ में संविधान लिए हुए विरोध करने लगे। आज सदस्यों को शपथ दिलाई जाएगी और अध्यक्ष का चयन किया जाएगा। बुधवार को राष्ट्रपति का अभिभाषण होगा, जिस पर चर्चा होगी और प्रधानमंत्री का वक्तव्य होगा। परंपरा के तहत प्रधानमंत्री ने सुबह मीडिया को संबोधित किया। अब आज लोकसभा अध्यक्ष का चयन किया जाएगा।

इसके अगले दिन राष्ट्रपति का अभिभाषण होगा। राष्ट्रपति के अभिभाषण पर दोनों सदनों में चर्चा होगी, जिसका उत्तर प्रधानमंत्री देंगे। लोकसभा का पहला सत्र पूरा होने के बाद कुछ दिनों के अंतराल में बजट सत्र आयोजित किया जाएगा। इसमें वित्त मंत्री वित्त वर्ष 24-25 के लिए बजट पेश करेंगी।

पीएम को नीट विवाद पर बोलना चाहिए था: अब्दुल्ला

श्रीनगर

नेशनल कॉन्फ्रेंस के नेता उमर अब्दुल्ला ने सोमवार को कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को संसद सत्र के पहले दिन विपक्ष पर हमला करने के बजाय नीट विवाद पर बोलना चाहिए था। प्रधानमंत्री ने आज शपथ लेने से पूर्व संसद परिसर में कहा कि लोग विपक्ष से अच्छे कदमों की उम्मीद करते हैं, लेकिन अब तक यह निराशाजनक रहा है।

उमर अब्दुल्ला 18वीं लोकसभा के पहले दिन संसद परिसर में प्रधानमंत्री की टिप्पणियों पर प्रतिक्रिया दे रहे थे।

विपक्ष ने सत्र की शुरूआत संसद परिसर में विरोध प्रदर्शन से की

नई दिल्ली

18वीं लोकसभा का पहला सत्र आज सोमवार (24 जून) को शुरू हुआ। सत्र की शुरूआत प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के शपथ ग्रहण समारोह से हुई। विपक्ष ने पहले सत्र की शुरूआत संसद के बाहर संसद परिसर में विरोध प्रदर्शन से की। आईएनडीआईए के नेताओं ने संविधान की कॉपी लेकर संसद परिसर में विरोध प्रदर्शन किया। प्रदर्शन करने वालों में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष सोनिया गांधी और राहुल गांधी भी शामिल हुए। समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव, सांसद डिंपल यादव और तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) सांसद कल्याण बनर्जी सहित विपक्ष के अन्य सांसदों ने संविधान की कापी लेकर मार्च निकाला। प्रदर्शन को लेकर कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने कहा कि संविधान बचाने के लिए जो कोशिश हमने की थी, उसमें जनता हमारे साथ है। लेकिन मोदी जी ने संविधान को तोड़ने की कोशिश की, इसलिए आज यहां पर हम एकत्रित होकर विरोध कर रहे हैं।

भाजपा ने जेपी नड्डा को बनाया राज्यसभा में सदन का नेता

प्रोटेम स्पीकर भर्तृहरि महताब ने संसद की कार्यवाही की अध्यक्षता की

नई दिल्ली

भाजपा ने जेपी नड्डा को राज्यसभा में सदन का नेता बनाने का फैसला किया है। इससे पहले केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल सदन में यह जिम्मेदारी संभाल रहे थे, लेकिन उत्तर मुंबई लोकसभा सीट से सांसद चुने जाने के बाद उन्होंने राज्यसभा की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया था। अब जेपी नड्डा को ये दायित्व सौंपा गया है। गौरतलब है कि सोमवार से 18वीं लोकसभा का पहला संसद सत्र शुरू हो गया है। पहले दिन सभी नवनिर्वाचित सांसदों ने सदन की सदस्यता की शपथ ली। सदन का नेता होने के नाते सबसे पहले प्रधानमंत्री मोदी ने सदस्यता की शपथ ली। प्रोटेम स्पीकर भर्तृहरि महताब ने संसद की कार्यवाही की अध्यक्षता की।

सदन में हंगामे के आसार: संसद का पहला सत्र काफी हंगामेदार रह सकता है। विपक्षी गठबंधन ने कई मुद्दों पर सरकार के घेराव और हंगामे की तैयारी की है। इसमें नीट, पेपर लीक, रेल हादसे जैसे कई अहम मुद्दे शामिल हैं। बता दें कि पहला संसद सत्र 3 जुलाई तक जारी रहेगा।

अब कलबुर्गी एयरपोर्ट को मिली बम की धमकी

कलबुर्गी (कर्नाटक)

दिल्ली एयरपोर्ट के बाद अब कर्नाटक के कलबुर्गी एयरपोर्ट को बम की धमकी मिली है। पुलिस के मुताबिक तलाशी अभियान जारी है। सोमवार को यह धमकी ईमेल के माध्यम से दी गई है। पुलिस के मुताबिक एयरपोर्ट परिसर में बम निरोधक दस्ते और डॉग स्क्वॉड सघन जांच में जुटे हैं। कलबुर्गी के पुलिस आयुक्त चेतन आर ने बताया कि हवाईअड्डा निदेशक को आज सुबह एक अज्ञात आईडी से ईमेल मिला। इसमें दावा किया गया कि हवाईअड्डा परिसर में बम रखा गया है। उन्होंने कहा कि बम धमकी की सूचना मिलते ही बम निरोधक दस्ते को तुरंत मौके पर भेजा गया। विमान में सवार सभी यात्रियों को उतार लिया गया। हवाई अड्डे के सभी कर्मचारियों और यात्रियों को सुरक्षित स्थान पर भेज दिया गया है। परिसर में गहन तलाशी अभियान चलाया जा रहा है।

मणिपुर: भारी मात्रा में हथियार और गोला बारूद बरामद

इंफाल (मणिपुर)

असम राइफल्स और मणिपुर पुलिस द्वारा मणिपुर के थौबल जिले में चलाए गए संयुक्त अभियान में भारी मात्रा में हथियार और गोला-बारूद तथा युद्ध संबंधी सामान बरामद किया गया। असम राइफल्स की ओर से रविवार को जारी एक आधिकारिक बयान में यह जानकारी दी गई। आधिकारिक बयान के अनुसार, अभियान के दौरान एक 12 बोर सिंगल बैरल गन, एक 12 बोर बोल्ट एक्शन राइफल, एक 9 एमएम सीएमजी, गोला-बारूद और ग्रेनेड बरामद किए गए। यह अभियान वेथौ रिज क्षेत्र में हथियारों और गोला-बारूद की मौजूदगी के बारे में एक विशेष खुफिया सूचना के बाद शुरू किया गया था। असम राइफल्स की ओर से जारी आधिकारिक बयान में कहा गया है, 'मणिपुर के थौबल जिले के वेथौ रिज क्षेत्र में हथियारों और गोला-बारूद की मौजूदगी की विशेष खुफिया सूचना के आधार पर कार्रवाई करते हुए असम राइफल्स और मणिपुर पुलिस ने एक संयुक्त अभियान चलाया और एक 12 बोर सिंगल बैरल बंदूक, एक 12 बोर बोल्ट एक्शन राइफल, एक 9 एमएम सीएमजी, गोला-बारूद, ग्रेनेड और युद्ध संबंधी सामान बरामद किया।'

गोधरा से भी जुड़ रहे पेपर लीक के तार... शक के घेरे में 27 छात्र

गोधरा:

नीट-यूजी मेडिकल प्रवेश परीक्षा में हुई कथित गड़बड़ी के बीच सीबीआई की एक टीम जांच के लिए सोमवार को गुजरात के गोधरा शहर पहुंची। दरअसल, गोधरा पुलिस ने 8 मई को भारतीय दंड संहिता की विभिन्न धाराओं के तहत एक मामला दर्ज किया था। इन लोगों पर आरोप है कि उन्होंने 27 कैंडिडेट्स से 10-10 लाख रुपये लेकर नीट-यूजी परीक्षा पास कराने में मदद करने की कोशिश की थी। पंचमहल के पुलिस अधीक्षक हिमांशु सोलंकी ने बताया कि केंद्रीय जांच ब्यूरो की एक टीम गोधरा पहुंची और स्थानीय पुलिस अधिकारियों से मुलाकात की। उन्होंने कहा कि हम मामले की जांच के लिए उन्हें हरसंभव सहायता देंगे।

अज्ञात व्यक्तियों के खिलाफ दर्ज एफआईआर

पेपर लीक के दावों की जांच के लिए छात्रों द्वारा देश भर में किए जा रहे विरोध प्रदर्शनों और मुकदमों के बीच सीबीआई ने रविवार को अज्ञात व्यक्तियों के खिलाफ आईपीसी की धारा 120-बी (आपराधिक साजिश) और 420 (धोखाधड़ी) के तहत एक नई प्राथमिकी दर्ज की। गुजरात के गृह विभाग ने राज्य पुलिस द्वारा दर्ज किए गए पेपर लीक के मामलों को सीबीआई को सौंपने के लिए एक अधिसूचना जारी की।

हरियाणा सरकार को 'सुप्रीम' झटका

हाई कोर्ट ने नौकरियों में 5 नंबर बोनस को बताया था असंवैधानिक

नई दिल्ली

सुप्रीम कोर्ट ने हरियाणा सरकार की नौकरियों में सामाजिक और आर्थिक आधार पर पांच अतिरिक्त अंक देने के राज्य सरकार के फैसले को असंवैधानिक ठहराने के पंजाब और हरियाणा हाई कोर्ट के फैसले में दखल देने से इनकार कर दिया है। सुप्रीम कोर्ट ने हरियाणा सरकार से हाई कोर्ट में ही अपनी बात रखने को कहा। पंजाब और हरियाणा हाई कोर्ट ने हरियाणा सरकार की इस योजना में खामियां गिनाते हुए इसे रद्द करने का आदेश दिया था। दरअसल, हरियाणा सरकार ने नौकरियों में सामाजिक और आर्थिक आधार पर 5 अतिरिक्त अंक देने का फैसला किया था। हरियाणा सरकार के इस फैसले को पंजाब और हरियाणा हाई कोर्ट मे चुनौती दी गई थी, जिसे हाई कोर्ट ने असंवैधानिक ठहरा दिया था। हाई कोर्ट के इसी फैसले को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी गई थी। वहीं सीएम नायब सैनी ने कहा कि प्रदेश में भाजपा सरकार ने बिना पर्ची और बिना खर्ची के योग्यता के आधार पर नोकरी देने का माहौल बनाया था। अंत्योदय के आधार पर ऐसे अभ्यर्थियों को भी नौकरी दी गई जिनके परिवार में कोई अन्य सदस्य सरकारी नौकरी में नहीं था। साथ ही आर्थिक रूप से कमजोर स्थिति में भी थे। उन्होंने कहा कि इससे पहले कांग्रेस के शासन में बगैर पैसे के किसी को नोकरी नही मिलती थी।उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार ने अपने करीब दस साल के शासन में बगैर पर्ची और खर्ची के एक लाख बत्तीस हजार सरकारी नोकरी दी है।भूपेंद्र सिंह हुड्डा और रणदीप सुरजेवाला अपने दस साल के शासन में दी गई नौकरियों पर श्वेत पत्र जारी करें।

नौकरियों में पांच अंकों का प्रावधान जारी रहेगा: सीएम सैनी

चंडीगढ़

हरियाणा की भाजपा सरकार द्वारा सरकारी नौकरियों में भर्ती के समय कमजोर वर्ग के अभ्यर्थियों को सामाजिक आर्थिक आधार पर पांच अंक देने के प्रावधान को पंजाब और हरियाणा हाईकोर्ट द्वारा असंवेधानिक ठहराए जाने के बाद सोमवार को सुप्रीम कोर्ट द्वारा हाईकोर्ट के फैसले को सही ठहराने पर मुख्यमंत्री नायब सैनी ने कहा कि अंत्योदय उत्थान के नजरिए से लागू किया गया पांच अंक का प्रावधान जारी रखा जाएगा।उन्होंने कहा कि इस मामले में हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट के फैसले का समाधान पुनर्विचार याचिका दायर कर या विधानसभा में विधेयक पेशकर किया जाएगा। सुप्रीम कोर्ट में पांच अंको के मुद्दे पर हाईकोर्ट के फैसले को सही ठहराए जाने के तुरंत बाद नायब सैनी ने मीडिया से बातचीत में कहा कि सुप्रीम कोर्ट के फैसले से प्रदेश में पांच अंको के आधार पर की गई ग्यारह हजार भर्ती के रद्द होने जैसी स्थिति नही आने दी जाएगी।साथ ही सैनी ने कहा कि इसी सप्ताह पचास हजार और सरकारी नोकरी दी जायेंगी।

नायब सैनी ने कहा कि प्रदेश में भाजपा सरकार ने बिना पर्ची और बिना खर्ची के योग्यता के आधार पर नोकरी देने का माहौल बनाया था। अंत्योदय के आधार पर ऐसे अभ्यर्थियों को भी नौकरी दी गई जिनके परिवार में कोई अन्य सदस्य सरकारी नौकरी में नहीं था। साथ ही आर्थिक रूप से कमजोर स्थिति में भी थे।

उन्होंने कहा कि इससे पहले कांग्रेस के शासन में बगैर पैसे के किसी को नोकरी नही मिलती थी।उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार ने अपने करीब दस साल के शासन में बगैर पर्ची और खर्ची के एक लाख बत्तीस हजार सरकारी नोकरी दी है।

एसएंडपी ने भारत की आर्थिक वृद्धि दर का 6.8 फीसदी पर कायम रखा

नई दिल्ली

एसएंडपी ग्लोबल रेटिंग्स ने चालू वित्त वर्ष 2024-25 के लिए भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के वृद्धि दर अनुमान को 6.8 फीसदी पर कायम रखा है। रेटिंग एजेंसी ने कहा कि ऊंची ब्याज दरों और कम राजकोषीय प्रोत्साहन से मांग में कमी आएगी। पिछले वित्त वर्ष 2023-24 में भारतीय अर्थव्यवस्था 8.2 फीसदी की दर से बढ़ी है। एसएंडपी ग्लोबल रेटिंग्स ने सोमवार को एशिया प्रशांत के लिए जारी आर्थिक परिदृश्य में कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था अपनी आर्थिक वृद्धि के साथ हैरान कर रही है। एजेंसी का अनुमान है कि चालू वित्त वर्ष में भारत की आर्थिक वृद्धि दर घटकर 6.8 फीसदी पर आ जाएगी। एसएंडपी ने अनुमान जताया कि वित्त वर्ष 2025-26 और 2026-27 में भारतीय अर्थव्यवस्था क्रमशः 6.9 फीसदी और सात फीसदी की दर से बढ़ेगी। एजेंसी ने चीन के लिए 2024 के अपने आर्थिक वृद्धि दर के अनुमान को 4.6 फीसदी से बढ़ाकर 4.8 फीसदी कर दिया है। चालू वित्त वर्ष 2024-25 के लिए एसएंडपी का भारत के लिए आर्थिक वृद्धि दर का अनुमान रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) के अनुमान से कम है। इसी महीने आरबीआई ने अनुमान जताया था कि चालू वित्त वर्ष में देश की अर्थव्यवस्था 7.2 फीसदी की दर से बढ़ेगी।

सरोगेसी से मां बनने वाली महिला कर्मचारी भी ले सकेंगी मैटर्निटी लीव

नई दिल्ली

केंद्र सरकार ने शासकीय महिला कर्मचारियों को सरोगेसी से मां बनने पर भी मैटर्निटी लीव देने का फैसला किया है। इसके लिए सरकार ने 50 साल पुराने नियम में बदलाव करते हुए, ऐसी स्थिति में 180 दिनों का मातृत्व अवकाश देने की अनुमति दी है। साथ ही पिता भी 15 दिन का पितृत्व अवकाश ले सकेंगे। कार्मिक मंत्रालय ने केंद्रीय सिविल सेवा (अवकाश) में संशोधित नियमों की अधिसूचना जारी करते हुए इसकी जानकारी दी। सरोगेसी के मामले में, सरोगेट मां, साथ ही दो से कम जीवित बच्चों वाली कमीशनिंग मां को 180 दिनों का मातृत्व अवकाश दिया जा सकता है, यदि दोनों में से कोई एक या दोनों सरकारी कर्मचारी हैं। गौरतलब है कि अब तक सरोगेसी के जरिए बच्चे के जन्म की स्थिति में महिला सरकारी कर्मचारियों को मातृत्व अवकाश देने का कोई नियम नहीं था।

सीएम केजरीवाल को फिलहाल सुप्रीम कोर्ट से राहत नहीं

आज आएगा हाईकोर्ट का फैसला

नई दिल्ली

सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली आबकारी घोटाला मामले में दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को फिलहाल कोई राहत नहीं दी है। जस्टिस मनोज मिश्रा की अध्यक्षता वाली वेकेशन बेंच ने ट्रायल कोर्ट से मिली जमानत पर अंतरिम रोक को चुनौती देने वाली याचिका पर अगली सुनवाई 26 जून को करने का आदेश दिया। कोर्ट ने कहा कि इस बीच अगर दिल्ली हाई कोर्ट अपना आदेश पारित करती है तो उसे सुप्रीम कोर्ट में दाखिल किया जाए। सुनवाई के दौरान केजरीवाल की ओर से वरिष्ठ वकील अभिषेक मनु सिंघवी ने कहा कि हाई कोर्ट से जमानत पर रोक अभूतपूर्व है, ऐसा आज तक नहीं हुआ है। सिंघवी ने अपनी दलील देते हुए कहा कि अगर हाई कोर्ट से उनकी जमानत रद्द हो जाती तो वह निश्चित रूप से जेल वापस जाएंगे। जैसा कि सुप्रीम कोर्ट की अंतरिम जमानत के बाद हुआ था। वैसे भी उनके भागने का कोई खतरा नहीं है।

सिंघवी ने कहा कि मान लीजिए कि हाई कोर्ट ने ईडी की याचिका खारिज कर दी तो उस स्थिति में बिना कारण जेल में बिताए दिनों की भरपाई कैसे की जा सकेगी। तब जस्टिस मनोज मिश्रा ने कहा कि एक-दो दिन में हाई कोर्ट के इस मामले पर आदेश जारी करने की संभावना है। इस पर सिंघवी ने कहा कि ट्रायल कोर्ट से केजरीवाल के पक्ष में फैसला आने के बाद उन्हें अंतरिम तौर पर क्यों नहीं रिहा किया जा सकता है ? तब जस्टिस मिश्रा ने कहा कि अगर हम अभी कोई आदेश पारित करते हैं तो हम मामले पर हाई कोर्ट से पहले ही फैसला सुना देंगे। सिंघवी ने कहा कि हाई कोर्ट ने इस मामले पर सुबह साढ़े दस बजे ही बिना कारण बताए ही स्थगन आदेश पारित कर दिया।

हमने हाई कोर्ट में उन 10 फैसलों को रखा है, जिसमें कहा गया है कि एक बार जमानत दिए जाने के बाद उसे विशेष कारणों के बिना रोका नहीं जा सकता। उन्होंने कहा कि अगर हाई कोर्ट जमानत का आदेश देखे बिना स्टे का आदेश दे सकता है तो सुप्रीम कोर्ट क्यों नहीं कर सकता, सुप्रीम कोर्ट भी कर सकता है। तब जस्टिस मनोज मिश्रा ने कहा कि अगर हाई कोर्ट ने कुछ गलत किया है तो क्या हम भी गलत करेंगे। राऊज एवेन्यू कोर्ट ने 20 जून को अरविंद केजरीवाल को नियमित जमानत दी थी। केजरीवाल की जमानत का जब फैसला सुनाया जा रहा था तो ईडी की ओर से पेश वकील जोहेब हुसैन ने राऊज एवेन्यू कोर्ट से बेल बांड भरने के लिए 48 घंटे का वक्त देने की मांग की थी,

टैंकर ने बाइक सवार को मारी टक्कर पांच लोगों की हुई दर्दनाक मौत

अखंड भारत संदेश

जंघई। सरायममरेज थानांतर्गत चौका बरना मार्ग पर सोरों पेट्रोल पंप के समीप जंघई की तरफ से तेज रफ्तार में राख भरकर जा रही टैंकर ने बरना की तरफ से आ रहे बाइक सवार को जोरदार टक्कर मार दिया जिससे पांच लोगों की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई मृतकों के मांस के लोथड़े सड़क पर जगह जगह बिखर गए। देखते ही देखते भारी भीड़ जमा हो गई सूचना पर इंस्पेक्टर सरायममरेज योगेश प्रताप सिंह एवं चौकी इंचार्ज जंघई संजय कुमार मौर्य अपने स्टाफ के साथ मौके पर पहुंचे और भीड़भाड़ को बगल करके शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम हेतु प्रयागराज भेज दिया। सड़क हादसे की सूचना पर एसीपी हंडिया, इंस्पेक्टर हंडिया भी मौके पर पहुंचे। सरायममरेज एसएचओ योगेश प्रताप सिंह ने बताया कि सोरों पेट्रोल पंप के पास राख से लदे टैंकर ने तेजी व लापरवाही पूर्वक चलाते हुए शादी में शामिल होकर कर लौट रहे सुपर स्प्लेंडर बाइक सवार को टक्कर मार दिया। बाइक सवार पांच लोगों में विकास पुत्र बल्ली उम्र 25 वर्ष, सुम्मरी पत्नी देवकी उम्र करीब 60 वर्ष, जनता पत्नी नमकीन उम्र करीब 34 वर्ष, दीवाना पुत्र नमकीन उम्र करीब 7 वर्ष, लक्ष्मी पुत्री नमकीन उम्र करीब 8 माह निवासी गण चौकी खुर्द थाना मीरगंज जनपद जौनपुर की मौके पर ही मृत्यु हो गई। सूचना पाकर पुलिस बल द्वारा मौके पर पहुंचकर शवों को कब्जे में लेकर मर्चरी भेजवाया गया। मौके पर ही टैंकर और टैंकर चालक को भी कब्जे में लिया गया। मृतक के परिजनों को सूचित किया गया है तहरीर प्राप्त होने पर आवश्यक विधिक कार्रवाई अमल में लाई जाएगी।

रेस्टोरेंट में नाबालिक के साथ छेड़खानी पर हंगामा, तोड़फोड़ फायरिंग का आरोप

अखंड भारत संदेश

हनुमानगंज। सरायइनायत थाना क्षेत्र के हनुमानगंज स्थित एक रेस्टोरेंट में रविवार की शाम एक नाबालिग के साथ हुई अश्लील हरकत को लेकर जमकर हंगामा हुआ। इस दौरान दो समुदाय के लोग आमने सामने आ गए। आनन फानन में पहुंची पुलिस रेस्टोरेंट संचालक को पकड़ कर थाने ले गई। तो वही दूसरा पक्ष रेस्टोरेंट को बंद करने को लेकर हंगामा शुरू कर दिया। पुलिस ने किसी तरह लोगों को समझा बूझकर मामला शांत कराया। देर रात पुलिस में दो युवको के खिलाफ पाक्सो सहित कई धाराओं में मामला दर्ज कर एक को जेल भेज दिया। बताया जाता है कि हनुमानगंज स्थित एक रेस्टोरेंट में क्षेत्र की ही एक लड़की गई थी। वहां पर मौजूद युवक ने उसके साथ बदतमीजी की पीड़िता घर जाकर मामले की जानकारी परिजनों को दी तो नाराज परिजन रेस्टोरेंट में पहुंचकर हंगामा करने लगे हंगामा होता देख आरोपी वहां से भाग निकला। तभी मौके पर लोगों की भारी भीड़ जमा हो गई मामला दो समुदाय से जुड़ा होने के कारण आनन फानन में पुलिस भी मौके पर पहुंच गई। लड़की के परिजनों का आरोप था कि रेस्टोरेंट संचालक की वजह से आरोपी भाग निकला और उसकी सह पर सब कुछ हुआ है। पुलिस रेस्टोरेंट संचालक को गिरफ्तार कर थाने लाई लेकिन वही लड़की पक्ष की तरफ से जूट लोग रेस्टोरेंट के सील करने की बात पर खड़े गए। किसी तरह पुलिस सभी को समझा कर मामला शांत कराई देर रात पुलिस ने दो लोगो के खिलाफ पाक्सो सहित कई गंभीर धाराओं में मामला दर्ज किया है।

न्यूज झरोखा

सीएचसी शंकरगढ़ में आपरेशन से जुड़वा बच्चों का प्रसव

शंकरगढ़। जिले के अंतिम छोर पर स्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र शंकरगढ़ में अब आपरेशन से प्रसव की व्यवस्था पूरी तरह से बहाल हो गई है। दो दशक बाद आपरेशन से प्रसव की सुविधा बहाल होने के उपरांत सोमवार को आपरेशन से जुड़वा बच्चों का प्रसव करवाया गया। सोमवार को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र शंकरगढ़ पर इमरजेंसी ड्यूटी के दौरान ऑपरेशन करके स्त्री रोग विशेषज्ञ डा. रीता सिंह द्वारा जुड़वा बच्चों का प्रसव करवाया गया। महिला लाभार्थी रोहिणी, जो कि शंकरगढ़ की रहने वाली हैं। आज पूर्वाह्न प्रसव पीड़ा शुरू होने पर परिजन सीएचसी शंकरगढ़ आए। अस्पताल की टीम ने गर्भवती रोहिणी की जांच की, जिसमें पता चला कि सामान्य प्रसव संभव नहीं है, क्योंकि गर्भस्थ शिशु उल्टी (विपरीत) अवस्था में हैं, साथ ही गर्भनाल भी गर्दन पर लिपटी हुई है। ऐसे में सामान्य प्रसव की कोई गुंजाइश नहीं थी। डा. रीता सिंह ने बताया कि गर्भवती रोहिणी की जांच के बाद प्रसव का फैसला लिया गया। इससे परिजनों को अवगत कराया गया। परिजनों की सहमति के उपरांत सीएचसी अस्पताल की ओपीडी में आपरेशन से प्रसव करवाया गया। रोहिणी ने जुड़वा बच्चों को जन्म दिया है। दोनों बच्चे स्वस्थ हैं। जुड़वा बच्चों के जन्म पर परिजन भी खासे खुश नजर आए और अस्पताल में मिठाई बांटकर खुशी जाहिर की। अधीक्षक डा. अभिषेक सिंह ने बताया कि सीएमओ डा. आशु पांडेय की पहल पर सीएचसी शंकरगढ़ में आपरेशन से प्रसव की सुविधा हाल ही में शुरू हुई है और इसका लाभ भी क्षेत्रीय लोगों को मिलने लगा है।

आयुष्मान कार्ड का नही मिल पा रहा लाभ भटकने को हुए मजबूर

मांडा। क्षेत्र के 69 ग्राम पंचायतों में इस सत्र में कुल 14 हजार आयुष्मान कार्ड के लक्ष्य रखे गए थे, जिनमें अभी तक मात्र 58 सौ आयुष्मान कार्ड बन पाए हैं। विकास खंड मांडा द्वारा मिली जानकारी के अनुसार ग्राम पंचायतों में ग्राम सचिवालय द्वारा छह यूनिट वाले कार्ड धारकों के अभी तक कुल 58 सौ सात आयुष्मान कार्ड बन पाए हैं। अब नये नियम के अनुसार सभी कार्ड धारकों के आयुष्मान कार्ड अगले वर्ष से शुरू होंगे।इस वर्ष 14 हजार आयुष्मान कार्ड बनने का लक्ष्य था, लेकिन तमाम कार्ड धारकों के परदेश में होने तथा अन्य कार्ड धारकों के उपेक्षा के चलते लक्ष्य पूर्ण नहीं हो सका। आयुष्मान कार्ड के लिए परेशान खास मांडा निवासी मोहन सिंह का कहना है कि उनकी पत्नी गंभीर बीमारी से जूझ रही हैं। वे सैकड़ों चक्कर मांडा खास ग्राम सचिवालय व सीएचसी मांडा के लगा चुके, लेकिन उनका कार्ड तकनीकी कमी बताकर ब्लॉक व सीएचसी कर्मचारी नहीं बना रहे हैं। आयुष्मान कार्ड धारकों का कहना है कि इसका उपयोग प्रयागराज के कुछ चिंहित अस्पतालों में ही होता है, इसलिए इसे बनवाने का कोई लाभ नहीं है।

फेसबुक द्वारा एक लाख लकी ड्रा में इनाम निकलने की सूचना पर युवक ने पचीस हजार गंवाया

मऊआइमा। साइबर अपराधियों ने लोगों से पैसा ठगने का अनेकों प्रकार के हथकंडे अपना रहे हैं।और लोगों को कंगाल करने पर तुले हुए हैं। एक युवक को एक लाख इनाम का झांसा देकर पचीस हजार रूपया ठग लिया। युवक ने इसकी आन लाइन शिकायत दर्ज कराई है। जानकारी के मुताबिक मऊआइमा कस्बा के मोहम्मद नजीर के पास एक नम्बर से फोन आया बताया गया है कि आपका फेसबुक पर एक लाख रुपए इनाम निकला है। बताया गया है कि नजीर से पहले22 एक मोबाइल नम्बर पर पचीस हजार रूपया मांगवाया गया।कहा गया कि यह पैसे के लिए कागजात में लगे गें। नजीर ने पांच हजार दे दिया। बताया गया है कि बाद में जालसाजों ने खाता नम्बर एटीएम कार्ड व्हाट्सएप्प पर मांगा कर खाते में बचा बीस हजार रूपया निकाल कर मोबाइल नम्बर बंद कर लिया गया।इस घटना से आहत मोहम्मद नजीर ने इसकी शिकायत आन लाइन साइबर क्राइम को की है।

इफ्को ऑफिसर एसोसिएशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष का प्रयागराज आगमन पर हुआ स्वागत

अखंड भारत संदेश

सहसों। इफको ऑफिसर एसोसिएशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष जितेंद्र तिवारी का प्रयागराज आगमन होने पर लोगों ने भव्य स्वागत किया गया। मृदुभाषी विशाल हृदय व सरल व्यक्तित्व के धनी जितेंद्र तिवारी इफ्को फर्टिलाइजर जैसी बड़ी संस्था जो आज पूरे विश्व में विद्यमान है। इफ्को आफीसर्स एसोसिएशन पर एक छत्र राज करने एवं यूनियन के चाणक्य का नाम जितेंद्र है। इफ्को फूलपुर यूनिट से अपने राजनीतिक सफर की शुरूआत कर पहली बार कर्मचारी संघ अध्यक्ष का चुनाव लड़े और विजय श्री हासिल किया उसके बाद वह आज तक पीछे मुड़कर नही देखा। इस अवसर पर उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए जितेंद्र तिवारी ने कहा कि प्रयागराज वासी एवं यहाँ की मिट्टी मेरे रोम रोम में समाया हुआ है प्रयागराज हमारी कर्मभूमि रही है। उन्होंने इशारों इशारों में यह भी कहा कि जनता की सेवा के लिए होने वाले आगामी आम चुनाव में प्रयागराज से अपनी किस्मत आजमा सकते हैं। वह अपने पुराने मित्रों में पूर्व विधायक मुस्तफा सिद्दीकी के पुत्र का आकस्मिक निधन हो जाने पर उनके आवास पर जाकर शोक संतप्त परिवार से मिलकर गहरा दुःख प्रकट करते हाल चाल जाना। इस मौके पर विपिन पांडेय, मनीष तिवारी क्षेत्र पंचायत सदस्य, अतुल पांडेय, चंद्रभान पटेल, रवि यादव, अनुराग तिवारी (अध्यक्ष इफ्को ऑफिसर्स संघ फूलपुर यूनिट), पंकज पांडेय अध्यक्ष कर्मचारि संघ इफ्को, विनय यादव, पवन पांडेय,भूपेंद्र मिश्र पप्पू जिला उपाध्यक्ष किसान मोर्चा भाजपा, चंदन यादव ग्राम प्रधान, हर्षित, फैजल अहमद सहित आदि लोग मौजूद रहे।

जानलेवा हमला व तोड़फोड़ के आरोपितों को बचाने मे जुटी पुलिस

मांडा के मोनाई गाव का मामला, जानलेवा हमले व तोड़फोड़ मे बहस के बाद हाई कोर्ट शख्त, दिए निर्देश

मांडा। दिघिया पुलिस चौकी क्षेत्र के मोनाई गाव मे बीते माह दबँगो द्वारा घर में घुसकर की गई तोड़फोड़ व जानलेवा हमला के मामले मे विवेचना से नाराज वादी की शिकायत पर इलाहाबाद हाई कोर्ट ने अहम निर्देश दिया है। साथ ही निष्पक्ष विवेचना के साथ शीघ्र प्रक्रिया पुरी करने का भी निर्देश दिया है। गौरतलब हो कि मांडा थाना क्षेत्र के मोनाई गाव निवसी श्याम बाबू ने आरोप लगाते हुए बीते माह हुल्का गाव के दबँग किस्म के लोगो पर घर में घुसकर मारपीट, तोड़फोड़ व जानलेवा हमला साहित आईपीसी के तहत कुल आठ सुसंगत धाराओ मे नामजद केस दर्ज कराया था। जिसकी विवेचना एसआई सन्नेस् बाबू गौतम द्वारा प्रचलित है। लेकिन वादी का आरोप है कि पुलिस अभियुक्तों को संरक्षण देने मे जुटी है। इससे नाराज वादी ने इलहाबाद हाई कोर्ट मे याचिका दायर किया। जिस पर वादी के अधिवक्ता शैलेश कुमार उपाध्याय व दिव्यांशु तिवारी ने बहस किया। विवेचना मे की जा रही लापरवाही को सुनकर न्यायमूर्ति एस.सी.त्रिपाठी व न्यायमूर्ति सुरेंद्र सिंह ने शख्त आदेश दिया है कि मामले की विवेचना शीघ्र व निष्पक्ष की जाए।

जमीन विवाद में करछना के एक अधिवक्ता की जमकर पिटाई से थाने का धेराव

अखंड भारत संदेश

करछना। थाना क्षेत्र के चनैनी गांव गांव निकासी राकेश शुक्ला जो तहसील में करछना में वकालत करते हैं उनका और गांव में एक पक्ष से जमीन का कुछ विवाद चल रहा था जिसको लेकर सोमवार को दोनों पक्षों में जमकर मार पीट और लाठी डंडे एक पत्थर चले इसके विरोध में करछना थाने पर मुकदमा पंजीकृत किए जाने को लेकर तहसील करछना के अधिवक्ताओं ने थाना परिसर पर करछना कोहडार घाट मार्ग पर घंटों जाम कर दिया वकीलों का विरोध था कि थाना अध्यक्ष करछना ने उनके साथ अभद्रता की जबकि ऐसा नहीं था थाना तहसील और थाना के गेट दोनों आमने-सामने हैं अधिवक्ता के ऊपर हुए हमले को लेकर बार एसोसिएशन के सभी अधिवक्ता पदाधिकारी के साथ थाना अध्यक्ष खिलाफ करछना कोहडार घाट मार्ग पर घंटो जाम लगा दिया और पुलिस प्रशासन के खिलाफ मुदार्बाद के नारे लगाए जबकि थाना अध्यक्ष ने मामले की घटना को संज्ञान में लेते हुए अधिवक्ता के ऊपर हुए हमले को लेकर मुकदमा पंजीकृत आरोपियों के लिए तलाश शुरू कर दी उसके बावजूद भी अधिवक्ता आक्रोशित अपनी भड़ास निकालते हुए पुलिस के खिलाफ नारे लगाते रहे लगभग दो बाद समझाने से शांत हुए।

विहिप व बजरंग दल ने किया फूलपुर कोतवाली का घेराव, चक्काजाम

अखंड भारत संदेश

मारपीट करने के आरोपियों के साथ ही पीआरवी के दरोगा पर कार्रवाई करने की मांग पर अड़े रहे कार्यकर्ता, यात्रियों को घंटों वाहन में ही बैठे रहे

फूलपुर। पीआरवी के दरोगा पर अभद्रता का आरोप लगाते हुए विहिप व बजरंग दल के कार्यकताओं ने सोमवार को कोतवाली का घेराव कर दिया। दरोगा पर कार्रवाई करने की जिद पर अड़े कार्यकताओं ने मांग पूरी न होते देख दोपहर में प्रयागराज - जौनपुर मार्ग पर वाहनों को खड़ी कर चक्का जाम कर दिया जिससे फूलपुर नहर से लेकर तहसील तक भारी जाम लग गया। डीसीपी गंगानगर से प्रतिनिधिमंडल के मिलने व कठोर कार्रवाई के आश्वासन के बाद जाम खत्म हुआ तब राहगीरों ने राहत की सांस ली। सरायममरेज थाना क्षेत्र के मोहद्दीनपुर निवासी दीपक सिंह बजरंग दल के कार्यकर्ता हैं।उनका गांव के ही राजा यादव से भूमि विवाद को लेकर विवाद चल रहा है। आरोप है की रविवार की शाम बौड़ई लंका के सामने दोनों पक्षों में विवाद हो गया जिसमें विपक्षियों ने दीपक सिंह की पिटाई कर दी। सूचना पर पहुंची कोतवाली पुलिस ने किसी तरह मामले को शांत करवाया। दीपक सिंह के भाई देवेन्द्र सिंह की तहरीर पर पुलिस ने राजा यादव व सतीष यादव के साथ ही अन्य आरोपियों के खिलाफ मुकदमा पंजीकृत कर लिया। वहीं मामले की जानकारी होने पर विहिप व बजरंग दल के कार्यकताओं ने सोमवार को यह आरोप लगाते हुए कोतवाली का घेराव कर दिया की पीआरवी के दरोगा द्वारा बजरंग दल के कार्यकर्ता दीपक सिंह से अभद्रता की गई।उनकी मांग थी की आरोपी दरोगा के खिलाफ कार्रवाई की जाए साथ ही नामजद आरोपियों की अतिशीघ्र गिरफ्तारी हो। मांगे पूरी न होते देख कार्यकताओं ने फूलपुर में भयंकर जाम की स्थिति उत्पन्न कर दी जिससे स्थानीय लोगों के साथ ही अन्य यात्रियों को भीषण गर्मी में घंटों रूकना पड़ा। वहीं उच्चाधिकारियों द्वारा दिए गए आश्वासन पर किसी तरह पुलिस ने जाम को खुलवाया तब जाकर राहगीरों ने राहत की सांस ली।

तय समय से देरी होने पर प्रतियोगी छात्रों ने किया हंगामा

हनुमानगंज। एसएससी परीक्षा में निर्धारित समय से देरी होने पर प्रतियोगी छात्रों ने जमकर हंगामा किया सूचना पर कई थानों की फोर्स मौके पर पहुंच गई किसी तरह छात्रों को समझा बूझाकर मामला शांत कराया गया। अंदावा स्थित सीता सिंह सुनीता सिंह विद्यालय में सोमवार को एसएससी की परीक्षा थी। शाम को 5 बजे से होने वाली परीक्षा में देरी होने पर बाहर खड़े छात्र हंगामा करने लगे बताया जाता है कि सर्वर डाउन होने के कारण पहले से परीक्षा दे रहे छात्रों को अधिक समय दिया गया जिसकी वजह से चौथी पाली में परीक्षा देने आए प्रतियोगी छात्रों को देर होने लगी। डेढ़ घंटे अधिक समय बीत जाने के कारण छात्रों के सब्र का बांध टूट गया और हंगामा कर करने लगे। वही परीक्षा करा रही संस्था ने कहा कि सभी को तय समय दिया जाएगा छात्र मानने को तैयार नहीं थे सूचना पर कई थानों की फोर्स मौके पर पहुंच गई। नाराज कई छात्रों ने इस दौरान परीक्षा का बहिष्कार कर दिया। परीक्षा देने आए दीपक राजपूत का कहना था कि सरकार किसी को नौकरी देना ही नहीं चाहती है कभी पेपर लीक तो कभी सर्वर डाउन की परेशानी से हम लोग कब तक जूझते रहेंगे।

सरकार के ड्रग्स व नशामुक्त अभियान में इफको हर कदम साथ : संजय कुदेशिया

मादक पदार्थों के दुरूपयोग व तस्करी की रोकथाम के लिए इफको कर्मियों ने ली शपथ

फूलपुर। इफको में सोमवार को सामुदायिक केन्द्र में मादक पदार्थ के दुरुपयोग और अवैध तस्करी के खिलाफ जन जागरण पखवाड़ा. मनाया गया। इस दौरान तथा इफको के कर्मचारियों को मादक पदार्थों के दुरूपयोग एवं अवैध रूप से तस्करी की रोकथाम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की शपथ दिलाई गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि स्वापक नियंत्रण ब्यूरो क्षेत्रीय इकाई, गोरखपुर के सहायक निदेशक अजय कुमार रहे। उन्होंने कहा कि संयुक्त राष्ट्र की आम सभा ने 26 जून 1988 को प्रतिवर्ष नशीली दवाओं के दुरुपयोग और अवैध तस्करी के खिलाफ अंतर्राष्ट्रीय दिवस मनाने का फैसला किया। इस परिप्रेक्ष्य में 12 जून से 26 जून तक स्वापक नियंत्रण पखवाडा मनाया जाता है। मादक पदार्थों के दुष्प्रभाव पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा की नारकोटिक्स ड्रग्स हमारे शरीर एवं मस्तिष्क के साथ-साथ केंद्रीय तंत्रिका तंत्र को किसी भी स्तर तक प्रभावित कर सकता है। हिरोइन, चरस, गांजा, कोकीन को हम नारकोटिक्स ड्रग्स के रूप में देखते है। अवसाद की स्थिति, सामाजिक बहिष्कार या अकेलापन, स्वास्थ्य संबंधी गलतफहमी, कुसंग आदि कारणों को उन्होंने ड्रग्स सेवन का कारण बताया। वरिष्ठ कार्यकारी निदेशक (इकाई प्रमुख) संजय कुदेशिया ने कहा कि नशा व ड्रग्स को रोकने के लिए भारत सरकार के इस अभियान में हम सभी लोग प्रतिबद्ध है। इस दौरान इसके प्रति जागरूकता हेतु एक लघु फिल्म भी दिखायी गयी। साथ ही केन्द्रीय विद्यालय में भी बच्चों को नारकोटिक्स ड्रग्स रोकथाम हेतु शपथ दिलायी गयी कार्यक्रम का कुशल संचालन शरद अग्निहोत्री व धन्यवाद ज्ञापन रेखा मिश्रा ने किया। इस दौरान महाप्रबंधक क्रमशः संजय वैश्य, एम.डी. मिश्र, ए.पी.राजेन्द्रन,संयुक्त महाप्रबंधक क्रमशः अनिता मिश्रा, पी.के.सिंह, संजय भंडारी, पी.के.पटेल,अरूण कुमार, अरवेन्द्र कुमार, विभागाध्यक्ष मानव संसाधन शम्भू शेखर, इफको ऑफिसर्स एसोसिएशन महामंत्री स्वयम् प्रकाश तथा बड़ी संख्या में इफको कर्मचारी कार्यक्रम में मौजूद रहे।

सहायक महानिरीक्षक निबंधन प्रयागराज के विशेष अनुमति पर 6 बजे तक कराई गई रजिस्ट्री

रजिस्ट्री ऑफिस के विस्तार के लिए पांच सौ वर्ग मीटर जगह देने को तैयार है बार एसोसिएशन सोरांव

सोरांव। बीते शुक्रवार को सोरांव में तैनात लिपिक इंद्रमणि तिवारी से एक बैनामे में फ्लूड लगे होने के कारण लौटा दिया था जिसको लेकर लिपिक के साथ बार एसोसिएशन के अध्यक्ष और महामंत्री के सामने कोई बाहरी व्यक्ति ने अभद्र व्यवहार किया था। मामले को लेकर निबंधक विभा द्विवेदी तिवारी ने एक्शन लेते हुए निबंधक ऑफिस में कार्य बहिष्कार कर दिया था। जिसको लेकर सोमवार को सहायक महानिरीक्षक निबंधन प्रयागराज राकेश चंद्रा सहित करछना,सदर प्रथम,द्वितीय संग फूलपुर के उप निबंधक भी आए। मामले को लेकर अधिवक्ता संघ के साथ वार्ता करनें के पश्चात करीब तीन बजे रजिस्ट्री शुरू कराई गई। तथा एआईजी के विशेष अनुमति पर रजिस्ट्री का कार्य शाम 6 बजे तक किया गया। लेकिन सरवर की स्थिति खराब होने के कारण खबर लिखने जाने तक कुल 9 रजिस्ट्री ही हो पाई थी। इतना ही नहीं एआईजी प्रयागराज ने निबंधक कार्यालय के सभी कमरों का निरीक्षण भी किया साथ ही साथ बार एसोसिएशन सोरांव के अध्यक्ष केके मिश्रा,वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रेम बहादुर सिंह व महामंत्री रमेश नारायण मिश्रा,प्रशासन मंत्री प्रदीप केसरवानी संग बार एसोसिएशन कार्यालय में बैठकर रजिस्ट्री ऑफिस के विस्तार पर भी चर्चा हुई। जिसको लेकर अधिवक्ताओं ने रजिस्ट्री ऑफिस बनाने के लिए 500 वर्ग मीटर जगह देने की सहायक महानिरीक्षक निबंधन से कहा। सहायक महानिरीक्षक निबंधन प्रयागराज राकेश चंद्रा ने बताया कि लिपिक के साथ हुई मारपीट किसी बाहरी व्यक्ति ने किया था जिसको सोरांव के अधिवक्ताओं ने बाहरी व्यक्ति को डांट फटकार कर गेट से बाहर निकाल दिया था। अधिवक्ता और निबंधन कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों के साथ एक अच्छा तालमेल देखने को मिला। तथा निबंधक कार्यालय का विस्तार करने के लिए अधिवक्ताओं ने प्रयाप्त जगह भी देने की बात कही। बहुत जी जल्द कार्यालय का विस्तार करने के लिए विभागीय कागजी कार्यवाही की जाएगी। वही उपनिबंधक सोरांव विभा द्विवेदी तिवारी ने बताया कि एआईजी प्रयागराज संग बार एसोसिएशन सोरांव के अध्यक्ष केके मिश्रा और महामंत्री संग अधिवक्ताओं की बैठक हुई तथा पूर्व दिनों लिपिक के साथ हुई घटना की बातों को निंदनीय कृत्य करार दिया गया। तथा आगामी दिनों में ऐसी घटना की पुनरावृत्ति नही होने की बात हुई।

मेजा के सलैया कला सामुदायिक केंद्र में आयोजित हुई उत्तर-प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा लोक-सुनवाई कार्यक्रम

मेजा ऊर्जा निगम दूसरे स्टेज में स्थापित करेगा 800 मेगावाट की तीन प्रस्तावित इकाइयां -

स्टेज 2 की इकाइयों की स्थापना से निगम की कुल स्थापित क्षमता 1320 मेगावाट से बढ़कर होगी 3720 मेगावाट

आगामी समय में मेजा ऊर्जा निगम बनेगी यूपी की सबसे बड़ी विद्युत उत्पादन कंपनी

मेजा। उत्तर प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड नें सोमवार को मेजा तहसील में स्थित ग्राम सलैया कला के सामुदायिक विकास केंद्र कोहड़ार में मेजा ऊर्जा निगम के प्रस्तावित मेजा स्टेज 2 के लिए लोक-सुनवाई कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम के दौरान परियोजना प्रभावित ग्राम निवासी निकटवर्ती ग्राम वासी स्थानीय जन-प्रतिनिधि कोरांव विधायक राजमणि कौल, हितधारक, वरिष्ठ पत्रकार एवं क्षेत्रीय प्रशासन के अधिकारीगण मौजूद रहे। लोक-सुनवाई कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रयागराज की अपर जिलाधिकारी प्रयागराज श्रीमती पूजा मिश्रा एवं क्षेत्रीय अधिकारी उत्तर-प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड डॉ एस.सी शुक्ला ने किया। लोक सुनवाई के दौरान मेजा ऊर्जा निगम अधिकारियों द्वारा दूसरे स्टेज में स्थापित की जाने वाली 800 मेगावाट की तीन प्रस्तावित इकाइयों के बारे में विस्तार से बताया गया। अधिकारियों ने बताया कि पर्यावरण संरक्षण को ध्यान में रखते हुए मेजा ऊर्जा निगम द्वारा मेजा स्टेज 2 के तहत सबसे उन्नत अल्ट्रा-सुपर क्रिटिकल तकनीक का इस्तेमाल कर तीनों इकाइयों (3७800 मेगावाट) की स्थापना की जायेगी। अल्ट्रा-सुपर क्रिटिकल प्रौद्योगिकी पर आधारित ये इकाइयां पारंपरिक इकाइयों की तुलना में कम कोयले की खपत करती हैं। मेजा स्टेज 2 का विस्तार मौजूदा परिसर के भीतर किया जाएगा! हालाँकि अतिरिक्त 114 हेक्टेयर ऐश डाइक और रेलवे साईडिंग के लिए प्रस्तावित है। जन-प्रतिनिधियों एवं आसपास के गांवो की जनता ने भी अपने सुझावों एवं विचारों को सभी के समक्ष साझा किया। मेजा ऊर्जा निगम द्वारा चलाई जा रही नैगम सामाजिक दायित्व के अंतर्गत कल्याणकारी कार्यक्रमों एवं गतिविधियों के बारे में भी जानकारी साझा की गयी और प्रबंधन को आने वाले समय में इन सभी योजनाओं को और अधिक बढ़ाने का सुझाव भी दिया साथ ही आसपास के क्षेत्र के समग्र विकास के लिए कल्याणकारी योजनाओ का बजट बढ़ाने का भी अनुरोध किया। उल्लेखनीय है कि मेजा स्टेज 2 की इकाइयों की स्थापना से मेजा ऊर्जा निगम की कुल स्थापित क्षमता 1320 मेगावाट से बढ़ कर 3720 मेगावाट हो जायेगी। आगामी वर्षों में मेजा ऊर्जा निगम उत्तर-प्रदेश की सबसे बड़ी विद्युत उत्पादक कंपनी बन जाएगी। गौरतलब है कि बढ़ी हुई क्षमता के साथ मेजा ऊर्जा निगम जो एनटीपीसी एवं उत्तर-प्रदेश राज्य विद्युत निगम लिमिटेड का संयुक्त उपक्रम है और आने वाले समय में वह न केवल प्रदेश के विकास में बल्कि देश के भी विकास में एक अहम भागेदारी निभाएगा और प्रदेश की बिजली आपूर्ति के लिए अपनी प्रतिबद्धता भी दर्शाएगा। मेजा ऊर्जा निगम व्यावसायिक उत्कृष्टता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व के सर्वोच्च मानकों को बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध है। सार्वजनिक सुनवाई का सफल समापन देश एवं प्रदेश के विकास को जिम्मेदारी से शक्ति देने के लिए कंपनी की प्रतिबद्धता की पुष्टि करता है। कार्यक्रम के दौरान लोक जनसुनवाई की अध्यक्षता कर रही एडीएम प्रशासन श्रीमती पूजा मिश्रा ने आस पास के गांवों से आए हुए लोगों द्वारा किए गए सवालों को निगम के संबंधित अधिकारियों द्वारा यथोचित जवाब देने के साथ साथ उनकी जायज समस्याओं का समाधान किए जाने का आश्वासन दिया। इस मौके पर बड़ी संख्या में ग्रामीण पुरुष एवं महिलाओं के अलावा कई गांव के प्रधान जनप्रतिनिधि एवं मेजा ऊर्जा निगम के अधिकारी कर्मचारी प्रमुख रूप से मौजूद रहे।

मण्डलीय उद्योग बंधु समिति की बैठक सम्पन्न

मण्डलायुक्त ने लाभार्थीपरक योजनाओं में मानक के अनुरूप प्रगति सुनिश्चित किए जाने के दिए निर्देश, निवेश मित्र पोर्टल पर प्राप्त प्रकरणों का समयान्तर्गत निस्तारण सुनिश्चित करें

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। मण्डलायुक्त विजय विश्वास पंत की अध्यक्षता में सोमवार को गाँधी सभागार में मण्डलीय उद्योग बंधु समिति की बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में लाभार्थीपरक योजनाएँ यथा- : प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम, मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार कार्यक्रम, एक जनपद एक योजना की समीक्षा पर समस्त उपायुक्त उद्योग को निर्देशित किया गया कि लाभार्थीपरक योजनाओं में मानक के अनुरूप प्रगति सुनिश्चित की जाए। उपायुक्त उद्योग नियमित रूप से प्रत्येक माह जिला उद्योग बन्धु बैठक आयोजित कराते हुए निवेश मित्र पोर्टल पर प्राप्त प्रकरणों के निस्तारण समयान्तर्गत सुनिश्चित करें। उ०प्र० एमएसएमई प्रोत्साहन नीति- 2017 एवं 2022 की समीक्षा में समिति द्वारा सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देशित किया गया कि उद्यमियों द्वारा वांछित प्रपत्र अविलम्ब उपलब्ध कराये, जिससे उद्यमियों को नियमानुसार उपादान का लाभ यथाशीघ्र मिल सके। मेसर्स त्रिवेणी इलेक्ट्रोप्लास्ट प्रा.लि. प्रयागराज के लम्बित भुगतान के सम्बन्ध में समिति/अध्यक्ष महोदय द्वारा संयुक्त आयुक्त उद्योग को निर्देश दिये गये कि लम्बित भुगतान हेतु बजट आवंटन एवं विलम्ब के लिए दोषी अधिकारियों के विरूद्ध कार्यवाही हेतु प्रमुख सचिव, उच्च/प्राविधिक शिक्षा उ०प्र० शासन को पत्र प्रेषित किए जाए। बैठक में संयुक्त आयुक्त उद्योग (लालजीत सिंह), एसएन पाण्डेय, उपायुक्त राज्यकर, विद्युत विभाग के वरिष्ठ अधिकारी, क्षेत्रीय अधिकारी यूपीसीडा/ मण्डल के समस्त उपायुक्त उद्योग, सहायक श्रमायुक्त प्रयागराज, प्रधानाचार्य आईटीआई नैनी तथा अन्य अधिकारियों के साथ साथ मेसर्स त्रिवेणी इलेक्ट्रोप्लास्ट प्रा.लि. नैनी, प्रयागराज, मुरारी लाल अग्रवाल, नटवर लाल भारतीय (सदस्य उ०प्र०व्यापारी कल्याण बोर्ड) एवं उद्यमी संघों अध्यक्ष/ प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

दहेज सामाजिक कुरीतियों को देता है बढ़ावा, दहेज लेना एवं देना अपराध : जिला दहेज प्रतिषेध अधिकारी

प्रयागराज। जिला दहेज प्रतिषेध अधिकारी/ जिला प्रोबेशन अधिकारी/ जिला बाल संरक्षण अधिकारी सर्वजीत सिंह ने जानकारी देते हुए बताया है कि दहेज एक सामाजिक बुराई है जिसके कारण समाज में महिलाओं के प्रति अकल्पनीय यातनाएँ और अपराध उत्पन्न हुए हैं तथा भारतीय वैवाहिक व्यवस्था प्रदूषित हुई है। दहेज शादी के समय दुल्हन के ससुराल वालों को लड़की के परिवार द्वारा नकद या वस्तु के रूप में किया जाने वाला भुगतान है। आज सरकार न केवल दहेज प्रथा को मिटाने के लिये बल्कि बालिकाओं की स्थिति के उत्थान के लिये कई कानून (दहेज निषेध अधिनियम 1961) और योजनाओं द्वारा सुधार हेतु प्रयासरत है। इस समस्या से छुटकारा पाने में लोगों की सामाजिक और नैतिक चेतना को प्रभावी बनाना, महिलाओं को शिक्षा तथा आर्थिक स्वतंत्रता प्रदान करना एवं दहेज प्रथा के खिलाफ कानून को प्रभावी ढंग से लागू करना मददगार हो सकता है। दहेज प्रथा न केवल अपराध है बल्कि अनैतिक भी है। इसलिये दहेज प्रथा की बुराइयों के प्रति समाज की अंतरात्मा को पूरी तरह से जगाने की जरूरत है ताकि समाज में दहेज की मांग करने वालों की प्रतिष्ठा कम हो जाए। दहेज सम्बन्धित किसी भी शिकायत के लिये जिला दहेज प्रतिषेध अधिकारी सर्वजीत सिंह मोबाइल नम्बर 7518024051, वन स्टॉप सेन्टर अथवा 181 महिला हैल्पलाइन व चाइल्ड हेल्पलाइन, 1098 तथा अधिक जानकारी हेतु कार्यालय जिला प्रोबेशन अधिकारी/ दहेज प्रतिषेध अधिकारी, विकास भवन, प्रयागराज या कार्यालय वन स्टॉप सेन्टर, (कल्वीन हॉस्पिटल के सामने)सम्पर्क कर सकते हैं।

पानी के लिए मचा हाहाकार बहादुरगंज के मोहल्ले वासियों ने किया चक्का जाम

अखंड भारत संदेश

पानी का टैंकर आया लेकिन लोगों ने कहा वापस ले जाओ यह पानी कितनी देर चलेगा एक घंटा दो घंटा उसके बाद क्या होगा

प्रयागराज। बहादुरगंज लोकनाथ मार्ग पर महिलाओं पहुंची और नारेबाजी करते हुए सड़क पर बैठ गई और चक्काजाम कर दी। लोगों का आरोप है कि बहादुरगंज के 100 से अधिक परिवारों को कई दिन से पानी नहीं मिलने पर महिलाओं ने सोमवार को चक्काजाम कर दिया। आक्रोशित महिलाएं शाम को बहादुरगंज लोकनाथ मार्ग पर पहुंची और नारेबाजी करते हुए सड़क पर बैठ गई। मार्ग को बांस से घेर दिया। पुराने शहर के अति व्यस्त मार्ग पर वाहनो का आवागमन ठप होने से अफरा तफरी मच गई। मार्ग के दोनों ओर वाहनों की कतार लगने की सूचना पर कोतवाली थाने की फोर्स पहुंची और चक्काजाम कर रहीं महिलाओं से बातचीत शुरू की। महिलाओ ने कहा एक सप्ताह तक लो प्रेसर से पानी आ रहा था। पिछले पांच दिन से बिलकुल पानी नहीं मिल रहा है। कई बुजर्ग महिलाओं ने कहा कि पास के मोहल्लों से सुबह शाम पानी लाकर घर का काम चला रहे हैं। भीषण गर्मी में पानी के संकट से निजात दिलाने की कोशिश भी नहीं हो राही है। महिलाओं की शिकायत सुनने के बाद फोर्स ने पानी के संकट से निदान दिलाने का आश्वासन दिया। आज से भेजा जाएगा टैंकर इस आश्वासन के बाद महिलाएं सड़क से हटीं तो वाहनों का आवागमन शुरू हुआ। कोतवाली थाने में जलकल के इंजीनियर, पार्षद सुनीता चोपड़ा और लोगों के साथ थानेदार रोहित तिवारी ने बातचीत की। जलकल के इंजीनियरों ने अन्य नलकूप से पानी संकट से जूझ रहे मोहल्ले में सप्लाई शुरू करने का आश्वासन दिया। मोहल्ले में तत्काल पानी का टैंकर भेजने को भी कहा गया है। थाने में बैठक के बाद पार्षद सुनीता चोपडा ने बताया कि शिवाजी पार्क का नलकूप बंद होने से मोहल्ले की जलापूर्ति बाधित हुई। नलकूप की मरम्मत में कई दिन लग सकते हैं इसलिए वैकल्पिक सप्लाई का मंगलवार से इंतजाम होगा। मोहल्ले में तुरंत पानी के टैंकर लगाए जाएगे।

शास्त्री पुल से चोरी हुई रेलिंग बरामद

झूंसी। महाकुंभ को देखते हुए शास्त्री पुल पर भी रेलिंग की मरम्मत व रंगाई पुताई का कार्य चल रहा है जिसका कार्य बलिया के रहने वाले सुमित सिंह द्वारा किया जा रहा है। सुमित ने पुलिस से लिखित शिकायत करते हुए बताया कि काफी दिनों से शास्त्री पुल पर लगाई जा रही रेलिंग चोरी हो रही थी। लाखो का माल एक ट्रक के करीब चोरी होने के बाद सुमित कबाड़ियों की दुकान में खोज शुरू की रविवार को पता चला कि झूंसी के रिजवान उल्ला की कबाड़ की दुकान पर चोरी हुई रेलिंग पड़ी है। मौके पर 13 रेलिंग बरामद हुई पुलिस रिजवान उल्ला के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच कर रही है।

आम के तीन खड़े हुये सूखे पेड़ की निलामी 08 जुलाई को राजकीय उद्यान-खुशरूबाग में

प्रयागराज। मुख्य उद्यान विशेषज्ञ, औद्यानिक प्रयोग एवं प्रशिक्षण केन्द्र, खुशरूबाग श्री कृष्ण मोहन चैधरी ने बताया है कि राजकीय उद्यान, खुशरूबाग, प्रयागराज में आम के तीन पेड़ सूखे खड़े हुये है, जिसकी निलामी 08.07.2024 को अपरान्ह 02:00 बजे खुली बोली के माध्यम से गठित समिति के समक्ष बोलीदाताओं की उपस्थिति में की जायेगी।

जिलाधिकारी की अध्यक्षता में पीसीपीएनडीटी जिला सलाहकार समिति की बैठक सम्पन्न

डीएम ने अल्ट्रासाउण्ड केन्द्रों का नियमित रूप से निरीक्षण करते रहने के दिए निर्देश

प्रयागराज। जिलाधिकारी नवनीत सिंह चहल की अध्यक्षता में सोमवार को संगम सभागार में पीसीपीएनडीटी जिला सलाहकार समिति की बैठक आयोजित की गयी। बैठक में नवीन केन्द्रों के रजिस्ट्रीकरण हेतु 19, पुराने संचालित केन्द्रों के नवीनीकरण हेतु 06, केन्द्र पर नये चिकित्सकों की सेवा जोड़ने हेतु 10, केन्द्र पर पुराने चिकित्सक की सेवा समाप्ति हेतु 5, केन्द्र का पता परिवर्तन हेतु 06, केन्द्र परअल्ट्रासाउण्ड/ सीटी स्कैन/ एमआरआई मशीन स्थापना हेतु प्राप्त हुए 12 आवेदन पत्रों को अनुमोदन हेतु समिति के समक्ष प्रस्तुत किया गया। बैठक में सर्वप्रथम विगत बैठक में लिए गए निर्णयों के अनुमोदन की समीक्षा की गयी। पीसीपीएनडीटी के नोडल अधिकारी डॉ0 ए0के0 तिवारी ने बताया कि पिछली बैठक में लिए गए निर्णयों का पूर्ण रूप से अनुपालन कर लिया गया है। बैठक में जिलाधिकारी ने कहा कि जिन नए केन्द्रो के रजिस्ट्रीकरण हेतु आवेदन किया गया है, वहां पर नियुक्त होने वाले चिकित्सकों के लिए निर्धारित मानक योग्यता सुनिश्चित करते हुए केन्द्र का भौतिक निरीक्षण के पश्चात ही पंजीकरण की कार्रवाई पूर्ण की जाये। इसके साथ ही साथ उन्होंने नवीनीकरण वाले आवेदन पत्रों पर निर्धारित मानक को सुनिश्चित करते हुए नवीनीकरण की कार्यवाही करने के लिए कहा है। उन्होंने कहा कि केन्द्र पर नये चिकित्सक की सेवा जोड़ने के लिए चिकित्सक से शपथपत्र अवश्य लिया जाये। उन्होंने संचालित हो रहे केन्द्र पर पुराने चिकित्सक की सेवा समाप्ति हेतु किए गए आवेदनों के सम्बंध में उक्त केन्द्र पर नए चिकित्सक की नियुक्ति के बाद ही केन्द्र संचालित करने के निर्देश दिए है। जिलाधिकारी ने केन्द्र का पता परिवर्तन हेतु प्राप्त आवेदनों के सम्बंध में नोडल अधिकारी को केन्द्र के नए पते का भौतिक सत्यापन कराने के पश्चात ही अनुमति देने के लिए कहा है। उन्होंने सभी केन्द्रों पर नियुक्त चिकित्सकों को अपनी विधा में ही कार्य करने के लिए कहा है। जिलाधिकारी ने अल्ट्रासाउण्ड केन्द्रों का नियमित रूप से निरीक्षण करते रहने के निर्देश दिए है। इस अवसर पर मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ. आशु पाण्डेय सहित पीसीपीएनडीटी के सदस्य गण उपस्थित रहे।

छेड़खानी की पुलिस आयुक्त से की शिकायत

झूंसी। थाना क्षेत्र की एक महिला ने छेड़खानी की शिकायत पुलिस आयुक्त से की है। महिला का आरोप है की शिकायत के बाद भी पुलिस आरोपी के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं कर रही है। पीड़िता ने पुलिस आयुक्त से लिखित शिकायत करते हुए बताया कि उसके पति का दोस्त जो कि गांव का ही है घर आता जाता था। उसको कही से मेरा नम्बर मिल गया तो वह फोन कर परेशान करने लगा अश्लील बातें करता था फोन काट देने से बार-बार फोन करने लगा बात ना करने पर पति की हत्या की धमकी देने लगा पखवाड़े भर पहले घर में कोई नहीं था वह घर में घुसकर अश्लील हरकत करने की कोशिश की विरोध करने पर महिला के साथ मारपीट की जब दूसरे दिन वह अपने पति के साथ आरोपी के घर उलाहना देने गई तो उसके पति को भी बुरी तरह मार गया। पीड़ित ने में मामले को लिखित शिकायत स्थानीय पुलिस स्टेशन की जब कोई कार्रवाई नहीं हुई तो उसने अब उच्च अधिकारियों से कार्रवाई की गुहार लगाई है।

सोमवार को पुलिस कमिश्नर तरुण गाबा ने संभाला कार्यभार, अधिकारियों संग की बैठक

प्रयागराज। पुलिस कमिश्नर तरुण गाबा सोमवार को प्रयागराज पहुंचे। जहां उन्होंने अपना कार्यभार संभालते हुए अधिकारियों संग अहम बैठक की। उन्होंने जिले के सभी डीसीपी, एसीपी के साथ बैठक कर जिले में अपराध की समीक्षा करते हुए कड़ा निर्देश दिया। तरुण गाबा प्रयागराज के दूसरे पुलिस आयुक्त बनाये गए हैं। पहले पुलिस कमिश्नर रमित शर्मा ने बड़ी ही सरलता से अपराध और अपराधियों पर अंकुश लगाया था। जिन्हें बरेली में एडीजी पद भेजा गया है। बरेली के आईजी रहे तरुण गाबा को प्रयागराज की कमान सौंपी गई है। गाबा चंडीगढ़ के मूल निवासी है। यह 2001 बैच के आईपीएस अधिकारी हैं। पहले यह सीबीआई में भी तैनात रह चुके हैं। पुलिस कमिश्नरेट प्रणाली लागू होने के बाद वह दूसरे पुलिस आयुक्त हैं। तबादला आदेश जारी होने के तीसरे दिन सोमवार को गाबा ने कार्यभार ग्रहण कर अधिकारियों के साथ अहम बैठक की और महत्वपूर्ण निर्देश दिए। महाकुंभ 2025 को देखते हुये यह जिम्मेदारी उन्हें दी गई है।

न्यूज झरोखा

रुद्रा संगम सोसाइटी के चुनाव में दयानाथ शुक्ल अध्यक्ष एवं संदीप सिंह सचिव निर्वाचित

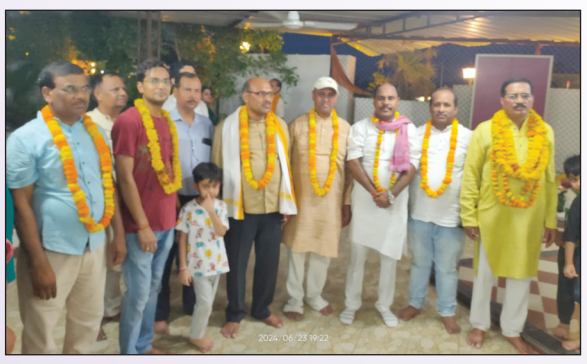

झूंसी। रुद्र संगम अपार्टमेंट अंदावा झूँसी में सोसाइटी का चुनाव संपन्न हुआ। सोसायटी बायलाज के अनुसार चुनाव में कुल दस प्रत्याशियों का चयन किया जाता है। जिसमें पांच पदाधिकारी एवं पांच टावर प्रतिनिधियों का चयन किया जाना था। चुनाव में रुद्रा के कुल 256 फ्लैट ओनर्स ने भाग लिया। चुनाव शांतिपूर्ण संपन्न हुआ। चुनाव में तीन पैनल आमने-सामने थे। जिसमें अध्यक्ष दयानाथ शुक्ला जी अपने प्रतिद्वंदी अनिल सिंह को एवं सचिव पद में संदीप सिंह ने एस के पांडेय को अप्रत्याशित वोटों के अंतर से पराजित किया। उपाध्यक्ष पद पर अशोक यादव, कोषाध्यक्ष पद पर धीरज सिंह तथा संयुक्त सचिव पद पर सचिन त्रिपाठी, टावर प्रतिनिधि में क्रमशः टावर एक से चंद्रेश तिवारी टावर दो से अखिलेश मौर्या टावर तीन गामा प्रसाद एवं टावर चार से रविकेश, टावर पाँच से चंद्रशेखर सिंह विजयी घोषित किए गए। विजय के उपरांत अध्यक्ष दयानाथ शुक्ला ने अपनी संकल्प को दोहराते हुए एक सुरक्षित, स्वच्छ एवं पारदर्शी समिति के गठन की बात दोहराई गई। नव निर्वाचित सचिव संदीप सिंह ने सोसायटी के सुरक्षा व्यवस्था एवं साफ सफाई को दुरुस्त करने की बात करते हुए आपसी भाईचारे को बनाए रखने की बात कही साथ ही बताया कि रुद्रा संगम के सभी सदस्य एक परिवार की तरह हैं जहां आपसी सौहार्द को ही प्राथमिकता दी जाती है। सभी फ्लैट ओनर्स का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए एक पारदर्शी समिति के गठन का संकल्प लिया गया। सभी चयनित पदाधिकारी ने सोसाइटी के चुनाव में भाग लेने वाले समस्त सदस्यगण एवं मातृ शक्तियों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

नैनी में महिला ने फांसी लगाकर जान दी

नैनी। नैनी क्षेत्र के मामा भांजा चकगरीब दास इलाके में एक विवाहिता ने रविवार देर रात पति से विवाद के बाद फांसी लगा ली। सूचना पर पहुंची पुलिस व परिजनों ने उसे फंदे से उतारकर इलाज के लिए एसआरएन में भर्ती कराया जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। मामा भांजा चकगरीब दास इलाके में रहने वाली ममता (28) पत्नी सिकंदर ने रविवार देर रात पति से कहासुनी के बाद पंखे के चुल्ले से दुपषटे का फंदा बनाकर फांसी लगा ली। ममता को फांसी पर लटका देख परिजनों ने शोर मचाना शुरू कर दिया। मौके पर पुलिस भी पहुंच गई और उसे एसआरएन अस्पताल में भर्ती कराया, जहां देर रात उसकी मौत हो गई। ममता ने 6 -7 साल पहले सिकंदर से प्रेम विवाह किया था। उनके दो बच्चे है। कुछ समय से उसकी पति से आये दिन विवाद होता था। ममता की मौत की सूचना पर उसके पिता दिल्ली से प्रयागराज के लिए निकल चुके है। जो सोमवार देर रात तक पहुंच जाएंगे।

ई रिक्शा चालक से मामूली विवाद में ट्रांसपोर्टर पर हमला

नैनी। नैनी क्षेत्र के खरकौनी इलाके में इलेक्ट्रिक बस स्टेशन के पास सोमवार सुबह एक ट्रांसपोर्टर पर आधा दर्जन से अधिक लोगों ने लाठी डंडे से हमला कर दिया। जिसमें ट्रांसपोर्टर को गंभीर चोटे आई। जहांगीराबाद गंजिया इलाके में रहने वाले मो. फैजान (48) पुत्र मो. एहसान ट्रांसपोर्टर हैं। उनके कई ट्रक चलते हैं। रविवार को फौजान का खरकौनी इलाके में रहने वाले एक ई रिवशा चालक से किसी बात पर विवाद हो गया था। सोमवार को फैजान किसी काम से अपनी बाइक से इलेक्ट्रिक बस स्टेशन के पास गया था। जहां पहले से बैठे ई रिक्शा चालक समेत आधा दर्जन से अधिक लोगों ने उस पर लाठी डंड से हमला कर दिया। सूचना पर पुलिस और परिजन भी मौके पर पहुंच गई। घायल को सीएचसी चाका ले जाया गया। जहां से फैजान को कॉल्विन रेफर कर दिया गया।

कार्यालय ग्राम पंचायत बेला अहिरान, वि.खं. माण्डा, प्रयागराज

पत्रांकः मेमो/ग्राम पं. वि. अ./कोटेशन/ 2024-25 — **निविदा सूचना** — दिनांक : 24.06.2024

ग्राम पंचायत **बेला अहिरान** में राज्य वित्त/पंचम राज्य वित्त/15वाँ वित्त आयोग/मनरेगा/राष्ट्रीय ग्रामीण स्वच्छता मिशन/कायाकल्प योजना स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण योजना/सार्वजनिक शौचालय निर्माण आदि योजनाओं/कार्यक्रमों के अन्तर्गत नाला नाली निर्माण एवं मरम्मत, खडन्जा, निर्माण एवं मरम्मत, कूप का जीर्णोद्धार, इण्डिया मार्का 2 हैण्डपम्प की मरम्मत/रिबोरिंग/स्थापना एवं प्लेटफार्म निर्माण एवं मरम्मत, सोख्ता गड्ढा का निर्माण, इण्टरलाकिंग कार्य, एम डी एम शेड निर्माण में प्रयुक्त होने वाली सामग्री आपूर्ति, एल.ई.डी. इलेक्ट्रिक बल्ब, सोलर/स्ट्रीट लाइट, पानी का टैंकर, बाउन्ड्री वाल का निर्माण/मरम्मत ह्यूम पाइप, विद्यालय/पंचायत भवन एवं आंगनबाड़ी केन्द्र की मरम्मत एवं खिड़की/दरवाजा आदि की रंगाई-पुताई/कोविड़-19 बचाव हेतु ब्लीचिंग पाउडर सेनेटाइजर मास्क, फागिंग मशीन, फुट स्प्रेयर/पावर स्प्रेयर/सफाई कर्मी किट एवं अन्य उपकरण तथा इस कार्य में प्रयुक्त होने वाली सामग्री एवं परियोजना बोर्ड की आपूर्ति हेतु पंजीकृत फर्मो से दिनांक 25.06.2024 से 04.07.2024 तक सीलबन्द निविदा अधोहस्ताक्षरी कार्यालय में आमंत्रित की जाती है। जो दिनांक 05.07.2024 को अपराहन 02:00 बजे उपस्थित फर्मो के समक्ष खोली जायेगी। सामग्री की मात्रा ग्राम पंचायत में स्वीकृत प्राक्कलन के अनुसार पृथक-पृथक होगी। निविदा ग्राम पंचायतों में वित्तीय वर्ष 2024-25 अन्तर्गत कराए जाने वाले सभी कार्यो हेतु प्रभावी होगी। निविदा व शर्तः- (1) निविदा को बिना कारण बताये पर्णू एवं आंशिक संशोधन अथवा निरस्त करने का पूर्ण अधिकार अधोहस्ताक्षरी को होगा। (2) रूपये 100 के नान ज्यूडीशियल स्टाम्प पेपर पर एक रूपये का रसीदी टिकट लगाकर अनुबन्ध लिखना होगा कि परियोजना पूरी होने की अवधि तक अनुबन्ध मान्य होगा, इससे पहले निविदा/आफर वापस लेने पर धरोहर धनराशि जब्त कर ली जायेगी। (3) फर्म का टिन नं0/पैन नं0 तथा सामगी आपूर्ति पर देय कर/टी.डी.एस. कटौती की जिम्मेदारी फर्म की होगी।

कमलेश कुमार यादव, ग्राम प्रधान, ग्राम पंचायत बेला अहिरान, वि0 ख0 माण्डा प्रयागराज

कमल कुमार, ग्राम विकास अधिकारी, ग्राम पंचायत बेला अहिरान, वि0 ख0 माण्डा प्रयागराज

कार्यालय ग्राम पंचायत बामपुर, वि.खं. माण्डा, प्रयागराज

पत्रांकः मेमो/ग्राम पं. वि. अ./कोटेशन/ 2024-25 — **निविदा सूचना** — दिनांक : 24.06.2024

ग्राम पंचायत **बामपुर** में राज्य वित्त/पंचम राज्य वित्त/15वाँ वित्त आयोग/मनरेगा/राष्ट्रीय ग्रामीण स्वच्छता मिशन/कायाकल्प योजना स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण योजना/सार्वजनिक शौचालय निर्माण आदि योजनाओं/कार्यक्रमों के अन्तर्गत नाला नाली निर्माण एवं मरम्मत, खडन्जा, निर्माण एवं मरम्मत, कूप का जीर्णोद्धार, इण्डिया मार्का 2 हैण्डपम्प की मरम्मत/रिबोरिंग/स्थापना एवं प्लेटफार्म निर्माण एवं मरम्मत, सोख्ता गड्ढा का निर्माण, इण्टरलाकिंग कार्य, एम डी एम शेड निर्माण में प्रयुक्त होने वाली सामग्री आपूर्ति, एल.ई.डी. इलेक्ट्रिक बल्ब, सोलर/स्ट्रीट लाइट, पानी का टैंकर, बाउन्ड्री वाल का निर्माण/मरम्मत ह्यूम पाइप, विद्यालय/पंचायत भवन एवं आंगनबाड़ी केन्द्र की मरम्मत एवं खिड़की/दरवाजा आदि की रंगाई-पुताई/कोविड़-19 बचाव हेतु ब्लीचिंग पाउडर सेनेटाइजर मास्क, फागिंग मशीन, फुट स्प्रेयर/पावर स्प्रेयर/सफाई कर्मी किट एवं अन्य उपकरण तथा इस कार्य में प्रयुक्त होने वाली सामग्री एवं परियोजना बोर्ड की आपूर्ति हेतु पंजीकृत फर्मो से दिनांक 25.06.2024 से 04.07.2024 तक सीलबन्द निविदा अधोहस्ताक्षरी कार्यालय में आमंत्रित की जाती है। जो दिनांक 05.07.2024 को अपराहन 12:30 बजे उपस्थित फर्मो के समक्ष खोली जायेगी। सामग्री की मात्रा ग्राम पंचायत में स्वीकृत प्राक्कलन के अनुसार पृथक-पृथक होगी। निविदा ग्राम पंचायतों में वित्तीय वर्ष 2024-25 अन्तर्गत कराए जाने वाले सभी कार्यो हेतु प्रभावी होगी। निविदा व शर्तः- (1) निविदा को बिना कारण बताये पर्णू एवं आंशिक संशोधन अथवा निरस्त करने का पूर्ण अधिकार अधोहस्ताक्षरी को होगा। (2) रूपये 100 के नान ज्यूडीशियल स्टाम्प पेपर पर एक रूपये का रसीदी टिकट लगाकर अनुबन्ध लिखना होगा कि परियोजना पूरी होने की अवधि तक अनुबन्ध मान्य होगा, इससे पहले निविदा/आफर वापस लेने पर धरोहर धनराशि जब्त कर ली जायेगी। (3) फर्म का टिन नं0/पैन नं0 तथा सामगी आपूर्ति पर देय कर/टी.डी.एस. कटौती की जिम्मेदारी फर्म की होगी।

पूजा तिवारी, ग्राम प्रधान, ग्राम पंचायत बामपुर, वि0 ख0 माण्डा प्रयागराज

कमल कुमार, ग्राम विकास अधिकारी, ग्राम पंचायत बामपुर, वि0 ख0 माण्डा प्रयागराज

कार्यालय ग्राम पंचायत नहवाई, वि.खं. माण्डा, प्रयागराज

पत्रांकः मेमो/ग्राम पं. वि. अ./कोटेशन/ 2024-25 — **निविदा सूचना** — दिनांक : 24.06.2024

ग्राम पंचायत **नहवाई** में राज्य वित्त/पंचम राज्य वित्त/15वाँ वित्त आयोग/मनरेगा/राष्ट्रीय ग्रामीण स्वच्छता मिशन/कायाकल्प योजना स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण योजना/सार्वजनिक शौचालय निर्माण आदि योजनाओं/कार्यक्रमों के अन्तर्गत नाला नाली निर्माण एवं मरम्मत, खडन्जा, निर्माण एवं मरम्मत, कूप का जीर्णोद्धार, इण्डिया मार्का 2 हैण्डपम्प की मरम्मत/रिबोरिंग/स्थापना एवं प्लेटफार्म निर्माण एवं मरम्मत, सोख्ता गड्ढा का निर्माण, इण्टरलाकिंग कार्य, एम डी एम शेड निर्माण में प्रयुक्त होने वाली सामग्री आपूर्ति, एल.ई.डी. इलेक्ट्रिक बल्ब, सोलर/स्ट्रीट लाइट, पानी का टैंकर, बाउन्ड्री वाल का निर्माण/मरम्मत ह्यूम पाइप, विद्यालय/पंचायत भवन एवं आंगनबाड़ी केन्द्र की मरम्मत एवं खिड़की/दरवाजा आदि की रंगाई-पुताई/कोविड़-19 बचाव हेतु ब्लीचिंग पाउडर सेनेटाइजर मास्क, फागिंग मशीन, फुट स्प्रेयर/पावर स्प्रेयर/सफाई कर्मी किट एवं अन्य उपकरण तथा इस कार्य में प्रयुक्त होने वाली सामग्री एवं परियोजना बोर्ड की आपूर्ति हेतु पंजीकृत फर्मो से दिनांक 25.06.2024 से 04.07.2024 तक सीलबन्द निविदा अधोहस्ताक्षरी कार्यालय में आमंत्रित की जाती है। जो दिनांक 05.07.2024 को अपराहन 11:00 बजे उपस्थित फर्मो के समक्ष खोली जायेगी। सामग्री की मात्रा ग्राम पंचायत में स्वीकृत प्राक्कलन के अनुसार पृथक-पृथक होगी। निविदा ग्राम पंचायतों में वित्तीय वर्ष 2024-25 अन्तर्गत कराए जाने वाले सभी कार्यो हेतु प्रभावी होगी। निविदा व शर्तः- (1) निविदा को बिना कारण बताये पर्णू एवं आंशिक संशोधन अथवा निरस्त करने का पूर्ण अधिकार अधोहस्ताक्षरी को होगा। (2) रूपये 100 के नान ज्यूडीशियल स्टाम्प पेपर पर एक रूपये का रसीदी टिकट लगाकर अनुबन्ध लिखना होगा कि परियोजना पूरी होने की अवधि तक अनुबन्ध मान्य होगा, इससे पहले निविदा/आफर वापस लेने पर धरोहर धनराशि जब्त कर ली जायेगी। (3) फर्म का टिन नं0/पैन नं0 तथा सामगी आपूर्ति पर देय कर/टी.डी.एस. कटौती की जिम्मेदारी फर्म की होगी।

मंजूर अली, ग्राम प्रधान, ग्राम पंचायत नहवाई, वि0 ख0 माण्डा प्रयागराज

कमल कुमार, ग्राम विकास अधिकारी, ग्राम पंचायत नहवाई, वि0 ख0 माण्डा प्रयागराज

कार्यालय ग्राम पंचायत मड़ार, वि. ख. माण्डा प्रयागराज

पत्रांकः मेमो/ग्राम पं. वि. अ./कोटेशन/ 2024-25 — **निविदा सूचना** — दिनांक : 24.06.2024

ग्राम पंचायत **मड़ार** वि0 ख0 माण्डा, प्रयागराज में स्वच्छ भारत मिशन के अन्तर्गत ठोस तरल अपशिष्ट प्रबन्धन योजना के अन्तर्गत ई-रिक्शा, इण्टरलाकिंग, नाली निर्माण, पंचायत भवन, विद्यालय कायाकल्प, स्ट्रीट लाइट, सामुदायिक शौचालय, हैण्डपम्प मरम्मत/रीबोर, प्रधान/पंचायत सहायक/केयर टेकर मानदेय, अमृत सरोवर, सी.एच.सी., कूड़ावाहन, वृक्षारोपड़ आवश्यक सामग्री, सीमेन्ट, मोरंग, बालू, सरिया, ईट, गिट्टी आदि की आपूर्ति का कार्य एस.एल.डब्ल्यू.एम. की धनराशि से कार्य होना प्रस्तावित है। निविदा दिनांक 25.06.2024 से 29.06.2024 तक किसी भी कार्य दिवस में कार्यालय ग्राम पंचायत मड़ार में 3:30 बजे तक जमा की जा सकती है। तथा दिनांक 01.07.2024 को अपरान्ह 2 बजे अधोहस्ताक्षरी कार्यालय में गठित समिति के समक्ष खोली जायेगी। निविदा की स्वीकृत/अस्वीकृत का अधिकार गठित समिति का होगा। प्राक्कलन के अनुसार सामग्री घट बढ़ सकती है। निविदा दाताओं की जी.एस.टी. पैन फार्म का रजिस्ट्रेशन की प्रमाणित छायाप्रति संलग्न कर देना होगा।

क्र0	कार्य का नाम	अनुमानित धनराशि
1.	काली रोड से जोधा पटेल के घर तक 100 मीटर इण्टरलाकिंग कार्य	3.95 लाख
2.	कुंज बिहारी के घर से नेपाली अली के घर तक 200 मीटर सम्पर्क नाली निर्माण कार्य	4.00 लाख
3.	काली सड़क से रिंकू मिश्रा के घर तक 100 मीटर इण्टरलाकिंग कार्य	3.95 लाख
4.	विजय शंकर कुशवाहा के घर से प्रभूनाथ गुप्ता के घर तक 100 मीटर इण्टरलाकिंग कार्य	3.95 लाख
5.	भगौती प्रसाद के घर से गया पटेल के घर तक 100 मीटर इण्टरलाकिंग कार्य	3.95 लाख
6.	काली सड़क से अंगद मिश्रा के घर तक 60 मीटर इण्टरलाकिंग कार्य	2.95 लाख
7.	खलियान से इंदल कुशवाहा के घर तक 40 मीटर इण्टरलाकिंग कार्य	2.40 लाख
8.	भिन्न-भिन्न स्थानों पर होम पाइप कार्य	

संतोष कुमार, ग्राम प्रधान, ग्राम पंचायत मड़ार, वि0 ख0 माण्डा प्रयागराज

बृजेश द्विवेदी, ग्राम विकास अधिकारी, ग्राम पंचायत मड़ार, वि0 ख0 माण्डा प्रयागराज

साथी अधिवक्ता पर जानलेवा हमले को लेकर पनपा आक्रोश, एसडीएम का किया घेराव

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। साथी अधिवक्ता पर हुए जानलेवा हमले में आरोपियों की गिरफ्तारी न होने को लेकर सोमवार को यहां वकीलों में आक्रोश भड़क उठा। नाराज वकीलों ने तहसील में पुलिस व प्रशासन के खिलाफ विरोध प्रदर्शन कर एसडीएम का घेराव किया। कार्यवाही न होने पर वकीलों ने आन्दोलन की भी चेतावनी दी है। सांगीपुर के शनि विश्वकर्मा तहसील में अधिवक्ता हैं।

शनिवार की रात जमीनी विवाद में अधिवक्ता शनि व उनके परिवार पर विपक्षियों ने जानलेवा हमला

कार्यवाही की मांग को लेकर एसडीएम को ज्ञापन सौंपते लालगंज के अधिवक्ता

बोल दिया। अधिवक्ता की तहरीर पर पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ हत्या के प्रयास समेत गम्भीर धाराओं में केस दर्ज कर लिया है। पुलिस ने विपक्षियों की भी तहरीर पर अधिवक्ता के खिलाफ क्रास केस दर्ज किया हैं। सोमवार को तहसील में चुटहिल अधिवक्ता शनि पहुंचे और साथियों को आपबीती सुनाई तो आक्रोश पनप उठा। संयुक्त अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष संदीप सिंह तथा महामंत्री सूर्यकांत निराला की अगुवाई में अधिवक्ता पुलिस प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी करते एसडीएम कार्यालय पहुंच गये। यहां नारेबाजी सुनकर एसडीएम प्रवीण द्विवेदी अधिवक्ताओं के बीच पहुंचे। अधिवक्ताओं ने घटना पर नाराजगी जाहिर करते हुए अधिवक्ता के हमलावरों की चैबीस घंटे के अन्दर गिरफ्तारी की मांग उठायी। अध्यक्ष संदीप सिंह व महामंत्री सूर्यकांत निराला ने कार्यवाही न होने पर आन्दोलन की चेतावनी दी। पूर्व अध्यक्ष ज्ञानप्रकाश शुक्ल ने कहा कि पीड़ित अधिवक्ता का केस दर्ज होने के बाद बिना जांच के क्रास केस लिखा जाना पुलिस की मनमानी है। एसडीएम ने सीओ से वार्ता कर समुचित कार्यवाही का भरोसा दिलाया। तब जाकर वकीलों का गुस्सा ठंडा हुआ। नारेबाजी के चलते दोपहर तक तहसील में न्यायिक व प्रशासनिक कामकाज बाधित दिखा। इस मौके पर राममोहन सिंह, अनिल त्रिपाठी महेश, संतोष पाण्डेय, शैलेन्द्र सिंह, विपिन शुक्ला, शैलेन्द्र मिश्र, नामवर सिंह, उदयनाथ तिवारी, दीपेन्द्र तिवारी, गयाप्रसाद मिश्र, विनोद मिश्र, सिंटू मिश्रा, दीवेन्द्र तिवारी, विनय शुक्ल, गयाप्रसाद मिश्र आदि अधिवक्ता रहे।

मल्हूपुर के दो बच्चों का श्रेष्ठा परीक्षा में चयन, परिजनों में खुशी की लहर

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय द्वारा आयोजित श्रेष्ठा परीक्षा का परिणाम शुक्रवार को घोषित हुआ। उच्च प्राथमिक विद्यालय मल्हूपुर मानधाता प्रतापगढ़ के छात्र अमन कुमार ऑल इण्डिया रैंक-504 तथा ऋषभ कुमार ऑल इण्डिया रैंक-1317 का चयन हुआ है।

राज्य अध्यापक पुरस्कार से सम्मानित शिक्षक श्याम प्रकाश मौर्य ने बताया कि श्रेष्ठा परीक्षा में अनुसूचित जाति के कक्षा आठ और दस में अध्ययनरत उन विद्यार्थियों को शामिल किया जाता है, जिनके अभिभावकों की वार्षिक आय ढाई लाख से कम हो। कक्षा 9वीं और 11वीं के लिए पूरे देश के विद्यार्थियों के लिए तीन हजार सीटें आवंटित हैं, जिनमें से 1500 सीटें कक्षा 9वीं और शेष 1500 सीट कक्षा 11वीं के विद्यार्थियों के लिए आरक्षित हैं। चयनित विद्यार्थियों को आवासीय सीबीएसई विद्यालयों में निःशुल्क शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्राप्त होता है। बच्चों व अभिभावकों ने बताया कि इस परीक्षा की तैयारी के लिए श्याम सर अतिरिक्त क्लास के साथ-साथ पाठ्यपुस्तक, मॉडल पेपर, पाठ्य वस्तु का प्रिन्ट आउट निःशुल्क वितरित कर बच्चों को सफलता अर्जित कराने में सराहनीय योगदान दिया हैद्य जानकारी के लिए श्याम सर द्वारा बनाया गया मॉडल पेपर, क्विज प्रदेश के सभी बच्चों तक पहुँच रहा है जिससे बच्चों को परीक्षा की तैयारी करना आसान हो गया है। जिले स्तर पर राष्ट्रीय आय एवं योग्यता आधारित छात्रवृति परीक्षा की तैयारी के लिए एक व्हाट्सप ग्रुप बनाया गया है जिसमें पूरे जिले के बच्चों के लिए शैक्षिक विडियो व पाठ्य सामग्री प्रेषित की जाती है। अभी हाल ही राष्ट्रीय आय का रिजल्ट घोषित हुआ था जिसमें आपके मार्गदर्शन जिले में सबसे ज्यादा 19 बच्चे पास हुए हैं।

राज्यसभा सदस्य प्रमोद तिवारी ने अग्नि पीड़ित परिवारों को दी सहायता

विधायक की ओर से सौंपी मदद

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। राज्यसभा में विपक्ष के उपनेता प्रमोद तिवारी ने रामपुर खास विधानसभा क्षेत्र के डभियार गांव में हाल ही में दलित बस्ती में हुई आगजनी से प्रभावित पीड़ितो से मुलाकात की। क्षेत्रीय विधायक आराधना मिश्रा मोना तथा स्वयं की ओर से अग्निपीड़ित प्रभावितों को रहन-सहन के लिए किट तथा निजी सहायता प्रदान की।

गांव के जियालाल, अच्छे लाल, राधेश्याम, घनश्याम, रामआसरे के घर पखवारे भर पहले आगजनी में गृहस्थी का सामान नष्ट हो गया था। आगजनी में दो मवेशियों की मौत भी हो गयी थी। वहीं क्षेत्र के अर्रो, रामपुर बावली, घुइसरनाथ धाम, भोजपुर,

अग्निपीड़ित परिवारों से मुलाकात करते राज्यसभा सदस्य प्रमोद तिवारी।

कैथौला, रायपुर तियांई में राज्यसभा सदस्य प्रमोद तिवारी ने क्षेत्रीय विधायक आराधना मिश्रा मोना के द्वारा स्वीकृत करायी गयी विकास परियोजनाओं की प्रगति को लेकर भी जानकारियां जुटायी। उन्होनें कार्यकर्ताओं तथा क्षेत्रीय लोगों से विधायक मोना की अगुवाई में यहां जारी विकास योजनाओं के संचालन में सहयोग मांगा। वहीं लालगंज चैक तथा अमावां व भोजपुर एवं रायपुर तियांई आदि स्थानों पर राज्यसभा सदस्य प्रमोद तिवारी का गर्मजोशी से स्वागत हुआ भी दिखा। इस मौके पर प्रतिनिधि भगवती प्रसाद तिवारी, प्रमुख अमित सिंह पंकज, सांगीपुर प्रमुख अशोक सिंह बबलू, मीडिया प्रभारी ज्ञानप्रकाश शुक्ल, आशीष उपाध्याय रहे।

शहर की विभिन्न समस्याओं को लेकर कांग्रेस ने किया प्रदर्शन

छह सूत्रीय मांग पत्र जिलाधिकारी को सौंपा

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। विभिन्न स्थानीय समस्याओं को लेकर आज कांग्रेस जनों ने जिलाध्यक्ष डॉ0 नीरज त्रिपाठी के नेतृत्व में जिलाधिकारी कार्यालय पर प्रदर्शन किया तथा छह सूत्रीय ज्ञापन जिलाधिकारी को सौंपा। मांगों को न पूरा करने पर जिलाधिकारी को चेतावनी देते हुए एक सप्ताह बाद पुनः सड़क पर उतरकर आंदोलन करने की बात कही।

जिलाध्यक्ष ने जहां पर एक ओर ज्ञापन के माध्यम से जनपद में स्थापित गो-शालाओं में चारा-पानी के अभाव में मर रही गायों का मामला उठाया तो वहीं दूसरी ओर प्रतापगढ़ नगर में कुछ वर्षों पहले बिछाई गई सीवर लाइन को न चालू किये जाने का मुद्दा उठाया और ज्ञापन के माध्यम से कहा कि उ0प्र0जल निगम और नगर पालिका

जिलाधिकारी को मांग पत्र देते जिलाध्यक्ष डा0 नीरज तिवारी।

परिषद ने उक्त प्रोजेक्ट में करोड़ों का घोटाला किया है, जिसमें थ्त् भी दर्ज है, परंतु आज तक कोई प्रभावी कार्यवाही नहीं हो सकी, प्रकरण की उच्च स्तरीय जांच कराकर कठोरतम कार्यवाही की जानी चाहिए। डॉ0 त्रिपाठी ने नगर के कुछ वार्डों में जल भराव की समस्या की ओर भी जिलाधिकारी का ध्यान आकृष्ट किया, साथ ही नगर में अघोषित विद्युत कटौती का मामला भी उठाया और कहा कि फाल्ट होने पर संबंधित सभी अधिकारियों का मोबाइल स्विच ऑफ हो जाता है, ज्ञापन में कहा गया है कि लो-वोल्टेज की समस्या से नगरवासी जूझ रहे हैं। इसे दूर किया जाना चाहिए। ज्ञापन लेते हुए जिलाधिकारी ने मांगों को पूरा करने हेतु एक सप्ताह का समय लिया है। इस अवसर पर वरिष्ठ उपाध्यक्ष डा0वी0के0सिंह, नगर अध्यक्ष इरफान अली, पीसीसी सदस्य डॉ0 प्रशांत देव शुक्ल, कांग्रेस सेवादल अध्यक्ष महेन्द्र शुक्ला, कोषाध्यक्ष वेदांत तिवारी, प्रेम शंकर द्विवेदी, राम लवट यादव, यूथ कांग्रेस अध्यक्ष नफीस अहमद, संजय इश्तियाक, मो0 असलम खान, सचिव सुरेश मिश्र, इन्द्रानंद तिवारी आदि लोग मौजूद रहे।

इनवर्टर की बैटरी फटने से बैंक की शाखा में लगी आग

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। इनवर्टर की बैटरी फटने से बैंक ऑफ़ बड़ौदा के फ्रेंच आईजी में आग लगने के कारण बैंक के अंदर कैश के साथ लैपटॉप व अन्य जरूरी चीज जलकर राख हो गया। दयालगंज बाजार में अजय यादव पुत्र महादेव यादव निवासी आसपुर देवसरा ने बैंक ऑफ़ बड़ौदा की फ्रेंच आईजी खोल रखा है शनिवार को शाम पांच बजे के करीब शाखा को बंद कर अपने घर चला गया था रविवार सरकारी छुट्टी होने की वजह से कामकाज बंद थे जिससे वह रविवार को बैंक खोलने नहीं आया। रविवार की देर रात शाखा के अंदर मौजूद इनवर्टर की बैटरी फटने के कारण बैंक में आग लग गई आग लगने की जानकारी सुबह बाजार वासियों को हुई तो अजय यादव को घटना की सूचना दी। मौके पर आकर शटर खोल देखा तो लैपटॉप, फर्नीचर, इनवर्टर, काउंटर, जरूरी कागजात के साथ रुपए जलकर राख हो गए।

कूलर में उतरे करंट की चपेट में आने से युवक की हुई मौत, परिजनों में मचा कोहराम

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। घर के अंदर लगे कलर के करंट की चपेट में आने से युवक झुलस गया। गंभीर हालत में उसे सीएचसी लाया गया। जहां इलाज के उपरांत डॉक्टर ने गंभीर लाल के चलते जिला मेडिकल कॉलेज के लिए रेफर कर दिया। इलाज के दौरान मेडिकल कॉलेज में युवक की मौत हो गई। कोतवाली इलाके के ढाखापुर गांव के रहने वाले बृजेश कुमार ओझा रविवार की सुबह खाना पीना खाकर घर के अंदर आराम करने के लिए गया था। कूलर में पहले से ही करंट परवह था जिसकी चपेट में आने से वह गंभीर रूप से झुलस गया। आनन-फानन में परिजन इलाज के लिए उसे पट्टी सीएचसी लेकर आए। इलाज के उपरांत गंभीर हालत को देखते हुए डॉक्टर ने उसे बेहतर इलाज हेतु मेडिकल कॉलेज के लिए रेफर कर दिया। जहां पर इलाज चल रहा था दोपहर में उसकी मौत हो गई। वहीं बड़ा बेटा प्रशांत, छोटा बेटा सिद्धार्थ, पत्नी नम्रता ओझा पति की मौत की खबर मिलते ही पत्नी व बेटे का रो-रो कर बुरा हाल हो गया। परिजन शव को लेकर दाह संस्कार के लिए प्रयागराज के लिए रवाना हो गए।

मासूमों में सनातन के संस्कार रोपित कर रहा एक चिकित्सक

प्रत्येक रविवार कुंडा मे आयोजित होती है वेदशाला

अखंड भारत संदेश

कुण्डा, प्रतापगढ़। सनातन संस्कृति और उसके मूल्यों को आने वाली पीढ़ी मे रोपने के लिए हर रविवार को शिवपुरम स्थित कुंडलेश्वर महादेव मंदिर परिसर मे संस्कारशाला और वेदांतशाला का आयोजन किया जा रहा है, जहाँ मासूम बच्चों मे सनातन संस्कृति और उसके मूल्यों के प्रति उन्हे तैयार किया जा रहा है।

डा. अर्पित कृष्ण एक चिकित्सक हैं। संस्कारशाला मे जहाँ बच्चों को

संस्कारशाला में बच्चों को पुस्तक देते चिकित्सक।

उनकी संस्कृति और सनातन धर्म के मूल्यों के विषय मे बताया जा रहा है वहीं सभी बच्चों को जाते समय एक भगवत गीता की पुस्तक भी दी जा रही है। उन्होंने बताया कि बच्चों को संस्कारशाला और बड़ों को वेदांतशाला ले चलने का मुख्य उद्देश्य यही है कि हम भारतीय संस्कृति और सनातन धर्म के पुनरुत्थान की ओर चलें। संस्कारशाला और वेदांतशाला प्रत्येक रविवार सुबह 8:30 बजे से शुरू होती है सभी अपने 2 वर्ष से अधिक के बच्चों सहित स्वयं भी पधार सकते है और इसका लाभ उठा सकते हैं। इस अभियान मे उनके साथ राजश्री पांडे, संदीप पाण्डेय, विपुल मिश्र, अमित मिश्र, शुभम तिवारी, अनुज कृष्ण, तुषार पांडेय आदि की भूमिका सराहनीय है।

पुलिस व वन विभाग की मिली भगत से धड़ल्ले से हो रही हरे पेड़ों की कटाई

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। कोतवाली क्षेत्र में पुलिस एवं वन विभाग की मिली भगत से फलदर एवं छायादार वृक्षों की दिनदहाड़े धड़ल्ले से कटाई हो रही है। वन माफिया प्रतिबंधित पेड़ों पर दिन दहाड़े इलेक्ट्रिक आरा चलवा रहे हैं और प्रतिबंधित पेड़ आम, महुआ समेत अन्य पेड़ो की कटाई कर रहे हैं। बता दें कि पट्टी तहसील क्षेत्र में अवैध रूप से आरा मशीन का संचालन भी हो रहा है। जो कि वन विभाग व पुलिस की मिली भगत से बेधड़क होकर चलाए जा रहे है। अवैध आरा मशीन इन आरा मशीन संचालक को द्वारा बिना किसी रोक-टोक के आरा मशीन का संचालन किया जा रहा है और क्षेत्र में पेड़ों की कटान जोरदार हो रही है।

बोलेरो सवार बारातियों ने युवक को दौड़ा दौड़ा कर पीटा

युवक की पिटाई के बाद बोलेरो में जबरिया बैठाने का प्रयास

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। बोलेरो सवार बरातियों को साइट न देना बाइक सवार को महंगा पड़ गया। सरेराह आधा दर्जन बोलेरो सवार बरातियों ने युवक को बाईपास तिराहे पर दौड़ा दौड़ा कर पीटा। तथा गाड़ी में जबरिया बैठाने का प्रयास किया। इस दौरान आसपास के दुकानदार पहुंचकर युवक की किसी तरह जान बचाई। सूचना पर पहुंची डायल 112 पुलिस मामले की जांच कर वापस लौट गई।

फतनपुर थाना क्षेत्र कैलीडीह से एक बारात सैफाबाद जा रही थी। इस दौरान एक बाइक सवार ने बोलेरो को साइड नहीं दिया। इसी बात से खुन्नस खाएं बरातियों ने युवक को पट्टी कोतवाली क्षेत्र के उडैयाडीह बाजार में रोककर रोककर लात घूसों से उसकी पिटाई करने लगे तथा बोलेरो में घसीट कर बैठाने लगे। युवक के शोर मचाने पर जुटे आसपास के दुकानदार ने किसी तरह युवक की जान बचाई। पीड़ित युवक ने घटना की सूचना डायल 112 पुलिस को दी। मौके पर पहुंची पुलिस मामले की जांच कर वापस लौट गई।

परिचर्चा में नेत्रदान की बतायी गयी महत्ता, आशा कार्यकत्री ने लिया संकल्प

लालगंज, प्रतापगढ़। लक्ष्मणपुर ब्लाक के गजराही सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में नेत्रदान के महत्व पर परिचर्चा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में मौजूद आशाओं तथा लोगों को युवा सामाजिक सेवा संस्थान के विशेषज्ञों ने नेत्रदान की प्रक्रिया की जानकारियां प्रदान की। परिचर्चा में आलोक शुक्ला तथा विशाल मिश्रा ने नेत्रदान के द्वारा समाज को मिलने वाले सकारात्मक प्रभाव की जागरूकता प्रदान की। कार्यक्रम में डॉ. आलोक रंजन ने भी विषय पर प्रकाश डाला। वहीं जागरूकता के तहत आशा कार्यकत्री राजकुमारी गुप्ता ने नेत्रदान के लिए संकल्प प्रपत्र भरा। राजकुमारी के संकल्प की कार्यक्रम में जुटे लोगों ने जमकर सराहना की।

शांतिपूर्ण चुनाव सम्पन्न कराने वाले अधिकारियों को एसपी ने किया सम्मानित

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिले के पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल ने लोकसभा का चुनाव शांतिपूर्ण निष्पक्ष तरीके से सकुशल संपन्न करने वाले पुलिस विभाग के अधिकारियों को प्रसन्नता देकर सम्मानित किया।

इस दौरान पुलिस अधीक्षक ने अपर पुलिस अधीक्षक पूर्वी दुर्गेश कुमार सिंह को प्रशस्ति पत्र दिया। बता दें कि लोकसभा का चुनाव पुलिस अधिकारियों द्वारा शांतिपूर्ण निष्पक्ष ढंग से सकुशल संपन्न करवाया था। एडिशनल एसपी पश्चिमी संजय राय को उनके अच्छे कार्य पर प्रशस्ति पत्र दिया गया। इसके अलावा सीओ सिटी

अधिकारी को सम्मानित करते एसपी सतपाल अंतिल।

शिवनारायण, सीओ रानीगंज विनय प्रभाकर साहनी को भी एसपी ने प्रशस्ति पत्र दिया। साथ ही ऑफिस में काम करने वाले कई पुलिस अधिकारियों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया है।

जेसीबी की टक्कर से घायल बाइक सवार की मौत, कोहराम

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। रिश्तेदारी जा रहा युवक रास्ते में जेसीबी की चपेट में आने से गम्भीर रूप से घायल हो गया। इलाज के लिए प्रयागराज ले जाते समय उसकी मौत हो गयी। अमेठी जिले के गुड़िया ताला निवासी अड़तीस वर्षीय सुभाष वर्मा पुत्र राजाराम वर्मा रविवार की रात करीब नौ बजे बाइक से जिले के सांगीपुर थानान्तर्गत असांव गांव में एक रिश्तेदार के घर जा रहा था। घुइसरनाथ पुत्र के समीप जेसीबी ने बाइक में जोरदार टक्कर मार दिया। जेसीबी की चपेट में आने से गम्भीर रूप से घायल बाइक सवार युवक का एक पैर भी कट गया। उसे इलाज के लिए स्वरूपरानी अस्पताल प्रयागराज ले जाया जा रहा था लेकिन रास्ते में ही युवक की मौत हो गयी। इधर दुर्घटना के बाद जेसीबी अनियंत्रित हो कर पलट गयी और उसका चालक मौके से भाग निकला। युवक के मौत की जानकारी होने पर परिवार के लोगों में कोहराम मच गया। एसओ मनीष तिवारी कहा कहना है कि शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजवाया गया है। मृतक के मौसेसे भाई नागेश्वर वर्मा की तहरीर पर अज्ञात जेसीबी चालक के खिलाफ गैर इरादतन हत्या का मुकदमा दर्ज किया गया है। जेसीबी को कब्जे में लेकर थाने लाया गया है। घटना की जांच की जा रही है।

चार आरोपियों के खिलाफ धमकी व मारपीट का मुकदमा

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। रंजिश को लेकर गाली गलौज मारपीट व जान से मारने की धमकी की घटना पर पुलिस ने चार लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है। लालगंज कोतवाली के केशवपुर गांव निवासी संदीप सरोज पुत्र सुक्खू ने पुलिस को दी गयी तहरीर में कहा है कि उन्नीस जून की शाम करीब छह बजे गांव के संदीप, सर्वेश पुत्रगण राजेन्द्र सरोज तथा राजेन्द्र सरोज पुत्र देवतादीन व भोला पुत्र देवीदीन उसके दरवाजे पर पहुंचे और गाली देते हुए उसे लाठी डंडे से मारापीटा। आरोपियों ने दरवाजे पर खड़ी पीड़ित की बाइक में भी तोड़फोड़ कर क्षतिग्रस्त कर दिया। जांच के बाद पुलिस ने चार लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है।

घर में हुई चोरी की घटना में अज्ञात के खिलाफ केस दर्ज

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। घर में हुई चोरी घटना में पुलिस ने जांच के बाद अज्ञात आरोपी के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया हैं। लालगंज कोतवाली के चकौड़िया अझारा निवासी आदर्श कुमार तिवारी पुत्र ओमप्रकाश तिवारी ने पुलिस को दी गयी तहरीर में कहा है कि बारह जून की रात अज्ञात चोर पीछे के दरवाजे से घर में घुस आये और आलमारी व बक्से का ताला तोड़कर उसके रखी पैंतालीस हजार की नकदी व लाखों के जेवरात चुरा ले गये। जांच के बाद पुलिस ने रविवार की देर शाम अज्ञात चोर के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है।

मारपीट व धमकी को लेकर केस

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। रंजिश में हुई मारपीट गाली गलौज की घटना को लेकर पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ हत्या के प्रयास समेत कई धाराओं में मुकदमा दर्ज किया हैं। लालगंज कोतवाली के नेवाज खा का पुरवा तकिया खानापट्टी गांवकी बदरून्ननिशा पत्नी निजाम अहमद को दी गयी तहरीर में कहा है कि बीस जून की दोपहर पुरानी रंजिश को लेकर गांव के गुलशेर व उसके पुत्रगण सालिल, साहिब, कैफ तथा लाल मोहम्मद एक राय होकर उसके दरवाजे पर पहुंचे और उसके पति निजाम अहमद को जमकर मारापीटा। गम्भीर चोट लगने से वह बेहोश हो गये। बीच बचाव में पहुंची पीड़िता व उसके बेटे सिराज को भी आरोपियों ने जमकर मारा-पीटा। आरोपियों ने घर में घुसकर गृहस्थी के सामानों में भी तोड़फोड़ किया। जांच के बाद पुलिस ने पांच लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है।

बढ़ता ताप, घटता जीवन विषय पर हुई कार्यशाला

विज्ञान क्लब ने राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में किया आयोजन

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सराय आनादेव में दो दिवसीय ग्रीष्मकालीन कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला विज्ञान क्लब के तत्वावधान में बढ़ता ताप, घटता जीवन विषय पर आयोजित हुई।

क्लब संचालक एवं कार्यशाला

कार्यशाला में मौजूद शिक्षक व छात्राएं।

आयोजक अनिल कुमार निलय ने बताया कि कार्यशाला का उद्देश्य पर्यावरणीय संकट एवं प्रलय के मुहाने पर खडी सम्पूर्ण समष्टि के संरक्षण हेतु आवश्यक पहल पर विमर्श व उनका धरातलीय संपादन करना तथा जनजागृति है। इस वर्ष गर्मी में तापमान ने अर्धशतक के अविश्वसनीय आकड़े को पार किया जो कि आगामी वर्षों में पर्यावरण व मानव सहित समस्त जीव-जन्तुओं के जीवन पर मंडरा रहे भीषण संकट का प्रत्यक्ष संकेत है। सैकड़ों लोग इस वर्ष ही गर्मी से काल-कवलित हुए हैं। प्रथम दिवस पर वैश्विक तापन,हरित गृह प्रभाव, ऊर्जा संरक्षण, पेयजल संदोहन व भूजल संरक्षण, प्रदूषण नियंत्रण, ओज़ोन क्षय आदि गम्भीर पर्यावरणीय विषयों पर विद्यार्थियों से गहन विमर्श किया गया। कार्यशाला के दूसरे दिन कोमल विश्वकर्मा, श्रेया सिंह, साक्षी सिंह, शिखा वर्मा, वृद्धि सिंह, आकांक्षा, सिमरन कोरी, मानसी आदि विद्यार्थियों ने इन समस्याओं के प्रमुख कारकों एवं निराकरणीय पहल पर विशिष्ट विचार प्रस्तुत किये।

प्रभावी पैरवी कर अभियुक्तों को अधिक से अधिक सजा दिलाने का एडीएम ने दिए निर्देश

अभियोजन सम्बन्धी कार्यों की समीक्षा में अभियोजन अधिकारी एवं शासकीय अधिवक्ताओं को निर्देश

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी अपर जिलाधिकारी अरूण कुमार गोंड द्वारा उदयन सभागार में अभियोजन सम्बन्धी कार्यों की विस्तृत समीक्षा की गई।बैठक में संयुक्त निदेशक, अभियोजन ने अप्रैल-मई माह के कार्यवृत्त प्रस्तुत किये, जिसमें यह पाया गया कि सत्र-न्यायालय में निस्तारित मुकदमों में सजा का प्रतिशत कम है तथा अधिकांश जमानत स्वीकृत हुई है, जिस पर अपर जिलाधिकारी ने प्रभावी पैरवी करने के निर्देश दियें। एडीएम ने सभी अभियोजन अधिकारी एवं शासकीय अधिवक्ताओं को निर्देशित किया कि प्रभावी पैरवी करते हुए अधिक से अधिक सजा दिलायी जाय। इसके साथ ही उन्होंने अभियोजन अधिकारियां को गैगेस्टर ऐक्ट, एससी/एसटी, महिला उत्पीड़न और पाक्सों के मामलों में विशेष ध्यान देते हुए प्रभावी पैरवी करने के भी निर्देश दिये।

आईजीआरएस पोर्टल की शिकायतों को अधिक प्रभावी ढंग से निस्तारण के सम्बन्ध में प्रशिक्षण

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी अपर जिलाधिकारी अरूण कुमार गोंड की अध्यक्षता में उदयन सभागार में आईजीआरएस पोर्टल के माध्यम से आमजन-मानस की प्राप्त शिकायतों को अधिक प्रभावी ढंग से निस्तारण कराने तथा संतुष्टिपरक बनाये जाने के सम्बन्ध में राजस्व एवं पुलिस विभाग के अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया गया मुख्यमंत्री की मंशा के अनुरूप शिकायतों के निस्तारण को अधिक प्रभावी और संतुष्टिपरक बनाये जाने के लिए विभिन्न बिंदुओं पर जानकारी/ प्रशिक्षण दिया गया। उन्होंने शिकायतों के गुणवत्तापूर्ण निस्तारण एवं फीडबैक प्रणाली की जानकारी दी। इसके साथ ही वर्तमान में सीएम हेल्पलाइन एवं ऑनलाइन प्राप्त हो रहीं अधिक संख्या में शिकायतों को अधिकारियों द्वारा रैण्डम आधार पर फीडबैक लिए जाने एवं संतुष्टि से सम्बन्धित आवश्यक साक्ष्य लगाये जाने आईजीआरएस रैकिंग के सम्बन्ध में भी प्रशिक्षण दिया गया। अपर जिलाधिकारी ने जमीन विवाद के प्रकरण को राजस्व एवं पुलिस को संयुक्त रूप से निस्तारण करने के निर्देश दियें प्रशिक्षण में अपर पुलिस अधीक्षक अशोक कुमार वर्मा एसडीएम एवं तहसीलदारगण सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण/ कर्मचारी गण उपस्थित रहें।

दहेज एक सामाजिक बुराई, दहेज लेना एवं देना अपराध

कौशाम्बी जिला दहेज प्रतिषेध अधिकारी जिला प्रोबेशन अधिकारी नीरज कुमार ने अवगत कराया है कि समाज में हो रही दहेज लेने व देने जैसी कुरीतियों की रोकथाम के लिए महिला कल्याण विभाग द्वारा चलाई जा रही योजना दहेज प्रतिषेध अधिनियम-1961 के अन्तर्गत यदि जनपद में कोई भी व्यक्ति दहेज की मांग करता है तो वह दहेज प्रतिषेध अधिनियम 1961 के तहत अपराध की श्रेणी में आयेंगा। जनपद में महिला यदि ससुरालीजनों द्वारा दहेज से सम्बन्धित पीड़ित की जाती है तो तत्काल जिला प्रोबेशन अधिकारी (जिला दहेज प्रतिषेध अधिकारी) के समक्ष लिखित शिकायत प्रस्तुत कर सकती है। घरेलू हिंसा से पीड़ित कोई भी महिला अपनी शिकायतो वन स्टाप सेन्टर के टोल फ्री नम्बर 181 एवं वन स्टाप सेन्टर कार्यालय नम्बर .05331-298022..पर अपनी शिकायत दर्ज करा सकती है, जिससे महिलाओं के प्रति होने वाले अत्याचार उत्पीड़न को कम किया जा सके। सरकार द्वारा महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए बहुत सी योजनायें संचालित की जा रही है। यथा-मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना, मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना, स्पान्सरशिप योजना, दहेज से पीड़ित महिलाओं को कानूनी सहायता अनुदान, पति की मृत्यु उपरान्त निराश्रित महिला की पुत्रियों की शादी अनुदान योजना, यदि पति की मृत्यु उपरान्त निराश्रित महिला के साथ कोई व्यक्ति विवाह करता है तो उसको दम्पत्ति पुरस्कार दिया जायेगा। जनपद स्तर पर यू0पी0 बोर्ड में हाईस्कूल एवं इण्टरमीडियट में प्रथम 10 स्थान प्राप्त करने वाली मेधावी छात्राओं को भी पुरस्कृत किया जाता है। अधिक जानकारी के लिए जिला प्रोबेशन अधिकारी कार्यालय विकास भवन अथवा कार्यालय सखी वन स्टॉप सेन्टर जिला अस्पताल परिसर, मंझनपुर में भी सम्पर्क किया जा सकता है।

न्यूज झरोखा

स्टेट बैंक भरवारी के मुख्य प्रबंधक के पद पर भानु प्रकाश ने ग्रहण किया कार्यभार

मैनेजर ने पद पर ग्रहण किया कार्यभार इससे पहले प्रतापगढ़ मे थे तैनात 2008 बैच के है शाखा प्रबंधक

भरवारी कौशाम्बी नगर पालिका परिषद भरवारी में स्थिति भारतीय स्टेट बैंक की शाखा में नए मुख्य शाखा प्रबंधक भानु प्रकाश ने पद भार ग्रहण कर लिया है एस मौके पर कर्मचारियों के अलावा तमाम लोग मौजूद थे 'बता दे की शुक्रवार को नए मुख्य शाखा प्रबंधक भानू प्रकाश ने भरवारी स्थित भारतीय स्टेट बैंक में मुख्य शाखा प्रबंधक का पदभार ग्रहण कर बैंक के सभी कर्मचारियों से परिचय प्राप्त किए ' साथ ही यह भी बताया कि इससे पहले मैं प्रतापगढ़ में बतौर मुख्य शाखा प्रबंधक के तौर कर कार्यरत था 2008 बैच में मैं सहायक बैंक मैनेजर के पद पर उनकी नियुक्ति हुई थी बाद में प्रतापगढ़ में उनका प्रमोशन हो गया प्रतापगढ़ से मुख्य प्रबंधक के पद पर ट्रांसफर होकर कौशाम्बी जनपाद की मुख्य बाजार भरवारी नगर पालिका परिषद की भारतीय स्टेट बैंक में मुख्य शाखा प्रबंधक के पद पर तैनात हो गया हू साथ ही पूर्व में तैनात मुख्य शाखा प्रबंधक लल्लन बैठा का तबादला कानपुर होने पर चार्ज ले लिया एक प्रश्न के जवाब मे कहा कि कर्मचारियों की कमी पर यथा शीघ्र मांग की गई है प्राथमिकता के तौर कर सभी ग्राहकों का सम्मान के साथ कार्य सुचारू एवम सुलभ तरीके से करना मेरी पहली प्राथमिकता होगी '

कमालपुर में साक्षरता एवं सहायता शिविर का आयोजन

कौशाम्बी राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण लखनउ द्वारा प्रस्तावित एक्शन प्लान एवं जनपद न्यायाधीश अनुपम कुमार के निर्देशन तथा जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के तत्वाधान में पंचायत भवन-कमालपुर में अपर जिला जज/सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण श्रीमती पूर्णिमा प्रांजल की अध्यक्षता मे वैवाहिक मामलों, वैकल्पिक विवाद समाधान एवं महिलाओं के अधिकार विषय पर साक्षरता एवं सहायता शिविर का आयोजन किया गया। अपर जिला जज/सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा महिलाओं को उनके अधिकार, घरेलू हिंसा एवं वैवाहिक मुकदमों के बारे में विस्तार से बताया गया।इस अवसर पर तहसीलदार पुष्पेन्द्र गौतम, नायब तहसीलदार अंकिता पाठक, पी0एल0वी, श्रीमती ममता देवी व श्रीमती संगीता कुशवाहा एवं ग्राम प्रधान श्रीमती रामरती सहित ग्राम की अन्य महिलायें उपस्थित रहीं।

भैंस बेचने जा रहे चार मवेशी चोर गिरफ्तार चोरी की 3 भैंस व पिकप बरामद

अझुवा कौशांबी सैनी कोतवाली पुलिस द्वारा चार मवेशी चोरों को गिरफ्तार कर जेल भेजा गया है यह सभी चोर प्रतापगढ़ के एक गांव से भैंस चुरा कर बोलोरो पिकअप में लाद कर कर सैनी कोतवाली क्षेत्र में बेचने की फिराक में थे। अझुवा चौकी इंचार्ज अरुण कुमार मौर्य ने बताया कि राहुल पटेल पुत्र भोलानाथ पटेल विकास पटेल पुत्र शंकर लाल पटेल अभिषेक पटेल पुत्र महेंद्र पटेल निवासीगण उदयपुर थाना रानीगंज जनपद प्रतापगढ़ गुफरान पुत्र लल्लन उर्फ मोइनुद्दीन निवासी कुसफरा थाना डेल्हू पुर को सैनी कोतवाली के लोहदा पुल के पास से गिरफ्तार कर उनके कब्जे से तीन भैंस व एक पिकअप बरामद की है। आरोपियों ने प्रतापगढ़ जनपद के उगई पुर से तीन भैंस चोरी की थी सैनी कोतवाल जे के शर्मा ने बताया कि भैंसों को कुसुमा देवी निवासी गोविंद पुर गोरियों को सुपुर्द कर पिकप को सीज किया गया है 4 भैंस चोर आरोपियों को न्यायालय भेजा गया है।

दबंग महिला आम रास्ते में करवा रही मकान निर्माण जबरिया लगाया दरवाजा

ग्रामीणों ने कहा कि छोटी समस्या का ध्यान नहीं दिया गया तो बढ़ सकती है गंभीर समस्या

अझुवा कौशांबी सैनी कोतवाली के ग्राम सभा धुमाई में आम रास्ता में दबंग महिला ने दीवाल खड़ी कर जबरिया दरवाजा लगा लिया है जिसकी शिकायत वर्तमान प्रधान,पूर्व प्रधानों ने ग्रामीणों के साथ पुलिस वा प्रशासन से की है प्रधान प्रतिनिधि मुकेश सिंह पूर्व प्रधान राजा सिंह पूर्व प्रधान गुलाब सोनकर संतलाल अंकित कुमार आजाद संदीप कुमार आजाद सरवन कुमार आजाद बच्चा लाल राहुल छोटू सिंह सहित कई दर्जन ग्रामीणों ने तहसील प्रशासन और थाना चौकी पुलिस को सूचना देकर बताया कि गांव की गीता देवी पत्नी स्व. रामस्वरूप अपना पुराने मकान में नई दीवाल खड़ी कर नए सिरे से दरवाजा लगा रहे है सामने मात्र 4 फिट का खड़ंजा लगा है दरवाजा लगने के बाद रास्ता बिल्कुल अवरुद्ध हो जायेगा ग्रामीणों के विरोध से महिला ने कुछ दिन कार्य स्थगित कर दिया बीते 2 दिनों से फिर से दरवाजा लगाने का पुनः प्रयास कर रही है ग्रामीणों ने जनहित के लिए अविलंब मौका मुआयना करने की दरख्वास्त की है।

सालों के साथ मिलकर भौजी को बार बार पीट रहा देवर

कौशाम्बी संदीपन घाट थाना क्षेत्र के शेरगढ़ निवासी गीता देवी पत्नी अनिल कुमार का देवर अमित कुमार अपने सालों के साथ मिलकर अपनी भाभी गीता देवी को कई बार गाली गलौज कर जान से मारने की धमकी देते हुए मारपीट चुका है जिस महिला परेशान और प्रताड़ित है मामले की सूचना गीता देवी ने पुलिस चौकी मूरतगंज को दिया मामले की सूचना संदीपनघाट थाना पुलिस को भी गीता देवी ने दिया लेकिन मामले में पुलिस गीता के पति और देवर को जेल भेजने की धमकी देकर के सुलह समझौता कर देती है जिससे बार-बार पिटाई करने वाले गीता देवी के देवर अमित कुमार का मनोबल बढ़ा हुआ है 23 जून को फिर गीता देवी और उसके पति अनिल कुमार को गाली गलौज करते हुए बेरहमी से पीटा गया मामले की शिकायत चौकी पुलिस से हुई दंपति चौकी पुलिस पहुंचे वहां अमित और उनके साले पहले से मौजूद थे पुलिस ने दोनों पक्षों से बात करने के बाद समझौता कर दिया पुलिस का यह कानून लोगों को नहीं समझ में आ रहा है की मारपीट करो और चौकी जाने के बाद मार खाने वाला मारने वाले से समझौता कर ले मुकदमा मत लिखाओ चौकी से समझौते के बाद जैसे ही गीता और उसके पति घर पहुंचे फिर उनके साथ देवर ने गाली गलौज की अब सवाल उठता है कि पुलिस का इकबाल कहां खत्म हो गया है कि महिला के साथ बार-बार मारपीट उसका देवर कर रहा है और पुलिस समझौता कर रही है समझौते के बाद हमलावर पुलिस की बात नहीं मान रहा है बार-बार अपराध कर रहा है मारपीट करने वाले को समझौता के बहाने चौकी पुलिस कब तक बचाती रहेगी आखिर उस हमलावर से चौकी पुलिस के क्या रिश्ते हैं महिला को न्याय कैसे मिलेगा।

विवाहिता की मौत के जिम्मेदारों के बिक गए खेत नहीं हुई गिरफ्तारी !

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। सैनी थाना क्षेत्र के गनपा निवासी रंजीता पाल की शादी इसी थाना क्षेत्र के अट सराय में राम मूरत के साथ हुई थी शादी के बाद से रंजीता के साथ ससुराली अत्याचार करते थे ससुरालयों की अत्याचार का जिसने भी वीडियो देखा है उसके रूह कांप गए हैं कई बार विवाहिता न्याय मांगने थाना पहुंची लेकिन विवाहिता को न्याय नहीं मिला न्याय की उम्मीद से विवाहिता ने पुलिस अधीक्षक से भी फरियाद की थी लेकिन उसे न्याय नहीं मिल सका ससुराली जनों की अत्याचार पुलिस से दुत्कार के बाद विवाहिता ने 5 जनवरी 2024 की भोर में ट्रेन के आगे छलांग लगाकर मौत को गले लगा लिया है विवाहिता के मौत को गले लगाने के बाद पुलिस ने पति सास ससुर सहित 10 लोगों के विरुद्ध मुकदमा अपराध संख्या 0006 सन 2024 गंभीर धाराओं में दर्ज कर लिया है घटनास्थल पर मृतक विवाहिता के शव से आत्महत्या का पत्र भी मिला जिसे पुलिस ने अपने कब्जे में ले लिया विवाहिता की मौत को 5 महीने से अधिक बीत चुके हैं लेकिन विवाहिता के मौत के गुनहगारों को थाना पुलिस ने अभी तक

ससुराली जनों की अत्याचार पुलिस से दुत्कार के बाद विवाहिता ने ट्रेन के आगे छलांग लगाकर मौत को लगाया गले

जीवित रहते विवाहिता को न्याय न देने वाली पुलिस मरने के बाद भी विवाहिता को नहीं दे सकी न्याय

गिरफ्तार कर जेल नहीं भेजा है जिससे पुलिसिया कार्यवाही का अंदाजा लगाया जा सकता है इसी बीच विवाहिता के ससुराल वालो के खेत बिकने लगे खेत विकार पैसा कहां जा रहा है यह तो कोई बताने वाला नहीं है लेकिन गिरफ्तारी न होने से पुलिस पर सवाल खड़े हो रहे हैं विवाहिता के आत्महत्या पत्र को परिवार के लोगों ने प्रमाणित भी किया लेकिन विवाहिता के मौत के गुनहगारों को राहत देने के उद्देश्य से सैनी कोतवाल यह कह रहे हैं कि विवाहिता के आत्महत्या पत्र को प्रमाणित करने के लिए उसकी राइटिंग को फिंगरप्रिंट के पास भेजे हैं और जब विवाहिता का पत्र प्रमाणित होकर वापस लौटेगा तब गुनहगारों की गिरफ्तारी होगी लेकिन सवाल उठता है कि दहेज उत्पीड़न में मौत के गुनहगारों के मुकदमे की विवेचना क्षेत्राधिकारी स्तर से होती है फिर मृतक के पत्र को जांच में भेजने का कोतवाल को क्या अधिकार था इस पत्र को किस तारीख को किस प्रपत्र संख्या से परीक्षण के लिए भेजा गया है इसकी भी जानकारी उपलब्ध नहीं हो पा रही है विवाहिता के पिता ने सुसाइड नोट की फोटो स्टेट प्रति पुलिस से मांगी थी लेकिन उन्हें फोटो स्टेट प्रति भी नहीं उपलब्ध कराई गई है मृतक के पिता ने आशंका जाहिर की है कि विवाहिता के सुसाइड नोट से थाना पुलिस छेड़छाड़ कर सकती है पत्र बदल सकती है या गायब कर सकती है जिससे गुनहगारों को लाभ मिल सके उन्होंने सैनी कोतवाली पुलिस से न्याय की उम्मीद छोड़ दिया है विवाहिता के मौत के गुनहगारों की गिरफ्तारी न होने के मामले में जांच कराई तो सैनी कोतवाल का गुनह उजागर होना तय है।

प्रधानमंत्री कुसुम योजनान्तर्गत सोलर पम्प के लिए किसान करें आवेदन

सरकार किसानों की आय में वृद्धि के लिए संकल्पबद्ध

कौशाम्बी प्रधानमंत्री कुसुम योजनान्तर्गत सिंचाई की बेहतर सुविधा उपलब्ध कराने के लिए किसानों को प्रदेश सरकार द्वारा वर्ष 2023-24 में मामूली कीमत पर सोलर पम्प उपलब्ध कराने के लिए जनपद को 205 सोलर पम्प आवंटित हुए हैं। योजना का लाभ उठाने के लिए कृषकों को विभागीय वेबसाइट पर पंजीकरण होना अनिवार्य हैं। यह जानकारी उप कृषि निदेशक सतेन्द्र कुमार तिवारी ने देते हुए बताया कि किसानों की आय दोगुना करने के लिए सरकार संकल्पबद्ध है, इसके लिए प्रधानमंत्री कुसुम योजना के तहत शासन द्वारा जनपद में तीन हार्स पावर डीसी के 45, तीन हार्स पावर एसी के 40, पॉच हार्स पावर एसी के 90, साढ़े सात हार्स पावर एसी के 15 व दस हार्स पावर एसी के 15 कुल 205 सोलर पंप 60 प्रतिशत अनुदान पर किसानों की सुविधाओं के लिए लगाया जाना हैं। सोलर पंप के तीन व पॉच हार्स पावर के लिए 6 इंच तथा साढ़े 07 व 10 हार्स पावर के लिए 8 इंच की बोरिंग होना अनिवार्य है। किसान की स्वयं की बोरिंग होगी। सत्यापन के समय उपयुक्त बोरिंग न पाये जानें पर टोकन मनी की धनराशि जब्त कर ली जायेंगी एवं आवेदन निरस्त कर दिया जायेगा। कृषकों को ऑनलाइन बुकिंग के साथ रू0 5000 टोकन मनी के रूप में ऑनलाइन जमा करना होगा। टोकन कन्फर्म करने के एक सप्ताह के अन्दर कृषकों को अवशेष कृषक अंश की धनराशि का ऑनलाइन टोकन जनरेट कर चालान द्वारा इण्डियन बैंक की किसी भी शाखा में अथवा ऑनलाइन जमा करना होगा, अन्यथा कृषक का चयन स्वतः निरस्त हो जायेंगा एवं टोकन मनी की धनराशि जब्त कर ली जायेंगी।

निराश्रित महिला पेंशन पाने वाली लाभार्थी डीबीटी/ एनपीसीआई अवश्य करायें

कौशाम्बी जिला प्रोबेशन अधिकारी नीरज कुमार ने अवगत कराया है कि महिला कल्याण विभाग द्वारा संचालित पति की मृत्युपरान्त निराश्रित महिला पेंशन (विधवा पेंशन) प्राप्त कर रही समस्त लाभार्थियों का निदेशालय द्वारा आधार बेस्ड पेमेंट किया जाना है, जिन लाभार्थियों के बैंक खातों में डीबीटी0/एनपीसीआई नहीं होगा, उन लाभार्थियों को वित्तीय वर्ष 2024-25 के प्रथम तिमाही का भुगतान किया जाना संभव नहीं होगा। निराश्रित महिला पेंशन (विधवा पेंशन) प्राप्त कर रही समस्त लाभार्थी सम्बन्धित बैंक से अबिलम्ब डीबीटी/एनपीसीआई तत्काल करा लें, जिससे ससमय पेंशन की धनराशि का भुगतान किया जा सकें।

चित्रकूट से दर्शन कर वापस जा रहे श्रद्धालुओं की स्कॉर्पियो पेड़ से टकराई, कई घायल

कौशाम्बी चित्रकूट से दर्शन कर वापस ऊंचाहार रायबरेली जा रहे श्रद्धालुओं की स्कॉर्पियो गाड़ी अचानक अनियंत्रित होकर पेड़ से टकरा गई,हादसे में स्कॉर्पियो गाड़ी में सवार पांच लोग घायल हो गए,हादसे के बाद मौके पर पहुंचे ग्राम प्रधान ने एंबुलेंस को फोन कर सभी घायलों को इलाज के लिए जिला अस्पताल भेजा जहा उनका इलाज चल रहा है। रायबरेली के ऊंचाहार से कुछ लोग चित्रकूट दर्शन के लिए गए हुए थे,चित्रकूट से दर्शन कर वह वापस अपने घर ऊंचाहार जा रहे थे,मंझनपुर कोतवाली क्षेत्र के कोरंई के पास अचानक उनकी गाड़ी अनियंत्रित हो गई और पेड़ से टकरा गई,हादसे में पांच लोग घायल हो गए,वही हादसे के बाद मौके पर पहुंचे सेलरहा के ग्राम प्रधान ने सभी घायलों को एंबुलेंस से अस्पताल भेजा जहा उनका इलाज चल रहा है जबकि तीन लोगो को मामूली चोट आई है।

घर के सामने खड़ी ट्रैक्टर की ट्राली उठा ले गए चोर, पुलिस जांच में जुटी

अझुवा कौशांबी सैनी कोतवाली के आदर्श नगर पंचायत अझुवा से घर के सामने खड़ा ट्रैक्टर और ट्राली चोर उठा ले गए,सूचना पर पहुंची पुलिस जांच पड़ताल में जुट गई है। जानकारी के अनुसार धर्मेंद्र कुमार पुत्र अमृत लाल निवासी वार्ड नंबर 1 भौंतर जीटी मार्ग अझुवा गिट्टी बालू का कार्य करते हैं इनका गुप्ता ट्रेडर्स के नाम दुकान चलती है धर्मेंद्र ने बताया प्रत्येक दिन की तरह बीती शाम कार्य करके घर के सामने ट्रैक्टर और ट्राली खड़ा कर दिया रात 11.00 तक उसका ट्रैक्टर और ट्राली खड़ी थी इसके बाद भुक्तभोगी सो गया रात 3.30 बजे हल्की बरसात के बाद नींद खुली तो देखा ट्रैक्टर और ट्राली गायब थी भुक्त भोगी ने चौकी पुलिस को सूचना दी सूचना पर पहुंची चौकी पुलिस ने तमाम सीसीटीवी फुटेज खंगाले हैं जिसमे ट्रैक्टर ट्राली को ले जाते हुए फुटेज दिखाई दिए हैं खबर लिखे जाने तक ट्रैक्टर ट्राली का पुलिस सुराग नहीं लगा सकी है। पुलिस छानबीन में जुटी है।

अस्पताल में मरीजों को नहीं मिल रहा स्ट्रेचर

महगाव कौशाम्बी पीएचसी मूरतगंज में स्वास्थ्य सेवाएं पूरी तरह से धड़ाम हो गयी है मरीजों के लिए कोई सुविधाएं उपलब्ध नही है गंभीर मर्ज से पीड़ित मरीज स्ट्रेचर के लिए परेशान है उन्हें स्ट्रेचर नहीं मिल रहा है तो उन्हें इलाज कैसे इस अस्पताल में मिलेगा पीएचसी मूरतगंज की स्वास्थ्य व्यवस्था पूरी तरह से धड़ाम हो गयी है समय से चिकित्सक नहीं आते हैं कर्मी मरीजों को दवाई देते हैं अब तो इस अस्पताल में मरीजों को स्ट्रेचर भी नही मिल रहा है जिससे मरीज पीड़ा से कराहते हैं मरीज को स्ट्रेचर ना मिलने पर प्रभारी अधिकारी की बड़ी लापरवाही उजागर हो रही है प्रभारी की लापरवाही योगी सरकार को बदनाम करने में थोड़ा भी कसर नहीं छोड़ रही

13 विधुत पोल की 2500 मीटर विधुत तार काट ले गए चोर

कौशाम्बी कोखराज थाना क्षेत्र के नगर पालिका परिषद भरवारी के टिकडडीह में 13 विधुत पोल की 2500 मीटर विधुत तार काटकर रात में चोर उठा ले गए हैं विद्युत तार काटकर चोरी किए जाने के बाद ठेकेदार करन सिंह ने थाने में तहरीर दी मामले में पुलिस अधीक्षक ने जांच कर कार्यवाही का निर्देश दिया है मामले में किसी विद्युत कर्मी के संलिप्तता के बिना विद्युत तार की चोरी संभव नहीं दिखाई पड़ रही है विद्युत तार चोरी करने वाले लोगों का गिरोह विद्युत बिभाग में हो सकता है।

प्राण घातक हमला में मिट्टी खनन माफियाओं के विरुद्ध दर्ज मुकदमे के बाद नहीं हुई गिरफ्तारी

कौशाम्बी चरवा थाना क्षेत्र में सरकारी तालाब से मिट्टी खनन करने वाले लोगों की वीडियो बनाने पर कुलदीप वर्मा पर प्राण घातक हमला किया था जिससे उन्हें गंभीर चोट आई थी 04 मई को चरवा पुलिस ने 3 आरोपियों के विरुद्ध गंभीर धाराओं में अपराध संख्या 0096 सन 2024 में मुकदमा दर्ज कर लिया है लेकिन डेढ़ महीने से अधिक बीत जाने के बाद आरोपियों की गिरफ्तारी नहीं हो सकी है बताया जाता है कि मिट्टी खनन के मामले में इन आरोपियों का पूरा गैंग सक्रिय है इनके गिरोह में चर्चित अपराधी भी शामिल है जिससे इलाहाबाद पुलिस भी खौफ खाती है लोकसभा चुनाव के पहले इस अपराधी के खिलाफ पुलिस ने शिकंजा कसना शुरू किया था लेकिन इस अपराधी ने भाजपा का चोला ओढ़ लिया जिससे पुलिस ठंडी पड़ गई गिरोह के लोग क्षेत्र के लगभग 80 बीघा से अधिक सरकारी तालाब जमीन से करोड़ों की मिट्टी खनन कर बेच चुके हैं मिट्टी खनन से अपराधी गैंग के लोग मालामाल हो रहे हैं चरवा नगर पंचायत और उसके आसपास के कई सरकारी तालाबों से मिट्टी खनन माफियाओं ने दिन रात जेसीबी मशीन से करोड़ों की मिट्टी खनन कर बीच ली है चरवा नगर पंचायत अध्यक्ष और अधिशाषी अधिकारी की संलिप्तता से सरकारी जमीन

तालाब में पानी भरवा कर सबूत से छेड़खानी कर रहे हैं नामजद अभियुक्त पुलिस नहीं कर पा रही गिरफ्तार

से मिट्टी का खनन बीते कई महीने से बेखौ चल रही है सरकारी संपत्तियों को सुरक्षित न करने वाले भ्रस्टाचार में संलिप्त अधिशासी अधिकारी पर भी अभी तक मुकदमा दर्ज कराकर उनकी गिरफ्तारी नहीं कराई गई है मिट्टी खनन मामले में नगर पंचायत निवासी कुलदीप वर्मा मिट्टी माफिया को तालाब की मिट्टी निकालते हुए रात में अपने मोबाइल से वीडियो बनाने पहुँचा तो माफिया के गुर्गों ने उसके ऊपर जानलेवा हमला करते हुए उसके हाथ पैर तोड़ दिए कई दिन वह अस्पताल के बिस्तर पर जीवन मौत के बीच जूझ रहे थे तब उनकी जान बची कुलदीप ने बिना डरे इन माफियाओं के खिलाफ चरवा थाने में नामजद मामला दर्ज कराया। तहसील से लेकर मंडल तक और मंडल से लेकर लखनऊ तक इस पूरे मामले की जांच के लिए अधिकारियों और मंत्री मुख्यमंत्री तक इस मामले को संज्ञान में वह लाए मामले की गंभीरता को देखते हुए इस पूरे प्रकरण और तालाब में हुए खनन की जांच के लिए एक स्पेशल कमेटी का गठन किया गया। जिसकी जांच की तारीख 28 जून तय की गई। मगर अब इससे पहले ही खनन माफिया अपने को बचाने के लिए फिर सक्रिय हो गए। अवैध खनन को छुपाने के लिए इन तालाबों में चोरी छिपे रात में पानी भरा जा रहा है। ये पानी कौन भरवा रहा है किसकी इजाजत से पानी भरवाया जा रहा है कोई बताने के लिए तैयार नहीं है। मिट्टी माफिया अपने काम को अंजाम दे रहे हैं लेकिन नामजद अभियुक्तों की गिरफ्तारी पुलिस नहीं कर पा रही है भीषण गर्मी में पशु पक्षी प्यास से व्याकुल थे इन तालबों में दो महीने पहले ही पानी भरवाने की जरूरत थी जब मई जून महीने में आसमान से आग बरस रही थी। पशु पक्षी एक एक बूंद पानी को भटक रहे थे और अपने प्राण त्याग रहे थे। उस समय इन तालाबों में पानी की एक बूंद भी नही थी । तो आखिर वारिश शुरू होने के बाद तालाब में पानी भरवाने की अब कौन सी जरूरत आन पड़ी इन तालबों को नलकूप से पानी भरवाने की क्या जरूरत है ऐसे में सबसे बड़ा सवाल यही है कि आखिर इन माफियाओं के गठजोड़ को कौन पानी दे रहा है। लाखों करोड़ों के अपराध को आखिर किसकी सह से पानी पानी किया जा रहा है। आखिर संगीन धाराओं में चरवा थाने में मामला दर्ज होने के बाद भी अपराधी पर चरवा पुलिस क्यों मेहरबान है। इसका जवाब चरवा नगर पंचायत का हर पर्यावरण प्रेमी जवाब चाहता है?

हत्या के दोषी उम्रकैद की सजा काट रहे कैदी की मौत

जिला जेल में बिगड़ी तबीयत अस्पताल ले जाते समय हुई मौत

कौशाम्बी हत्या के दोषी आजीवन सजा काट रहे बंदी की मौत हो गई जेल के बैरक में बेहोशी की हालत में बंदी मिला था,जिसे एंबुलेंस से जिला अस्पताल लाया गया जहा डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया,सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया और परिजनो को सूचना देकर जांच में जुट गई।कौशाम्बी थाना क्षेत्र के उरई अशरफपुर गांव निवासी सोनपाल लोध पुत्र शिवलोचन उम्र लगभग 63 वर्ष को हत्या के जुर्म में न्यायालय ने 7 फरवरी 2024 को दोषी करार दिया और आजीवन कारावास की सजा सुनाई थी,जिसे पुलिस ने जेल में भेज दिया। बंदी सोनपाल की सोमवार की सुबह तबियत बिगड़ गई और वह अपने बैरक में बेहोश हो गया,साथी बंदियों ने देखा तो गार्ड को सूचित किया,गार्ड ने अधिकारियो को सूचित करते हुए सोनपाल को एंबुलेंस से जिला अस्पताल ले गए जहा डॉक्टर ने उसे ब्रॉन डेड घोषित कर दिया।सूचना पर पहुंची मंझनपुर कोतवाली पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया और परिजनो को सूचित करते हुए जांच में जुट गई।

आयुष्मान कार्ड की योजनाओं का मरीज को लाभ नहीं मिल रहा

एनआरएचएम घोटाले से कम नहीं हुआ आयुष्मान कार्ड योजना का घोटाला

कौशांबी केंद्र और प्रदेश सरकार ने गरीबों को आयुष्मान कार्ड उपलब्ध कराने का निर्देश मुख्य चिकित्सा अधिकारी को दिया है लेकिन मुख्य चिकित्सा अधिकारी आयुष्मान कार्ड की सफलता को लेकर गंभीर नहीं दिखाई पड़ रहे हैं एयर कंडीशन रूम में कुछ खास लोगों के साथ बैठकर योजना की सफलता का झूठा ढिंढोरा पीटा जा रहा है जमीनी हकीकत में योजना का लाभ गरीब कमजोर मजलूम को मिलता नहीं दिखाई पड़ रहा है आयुष्मान कार्ड बनाने की जिम्मेदारी जिस संस्था को सौंपी गई है उस संस्था में काम करने वाले लोग कंप्यूटर की योग्यता से पूर्ण परिपक्व नहीं है जिससे उनसे गलतियां होती हैं उनकी गलतियों का खामियाजा मरीज और उनके परिवार के लोगों को भुगतना पड़ रहा है संस्था की लापरवाही से योजना के पात्र लोगों को योजना का लाभ नहीं मिल रहा है आयुष्मान कार्ड बनाने में कर्मियों से बार-बार गलतियां हो रही है कई कई महीने और कई कई वर्ष दौड़ने के बाद भी गलत नाम मे संशोधन नहीं किया जा रहा है पूरे जिले में तमाम परिवार के लोग परेशान हैं आयुष्मान कार्ड से इलाज के दौरान कुछ अस्पतालों को चिन्हित किया गया है जहां मरीजों के साथ मनमानी होती है उनके आयुष्मान कार्ड से रकम तो निकाल लिया जाता है लेकिन इलाज के नाम पर मनमानी किया जाता है मरीज मर्ज से पीड़ित रहते हैं और सरकार के खजाने से रकम भी निकल जाती है बड़ी सेटिंग के चलते मुख्य चिकित्सा अधिकारी इन सब मामलों में गंभीर नहीं दिखाई पड़ रहे हैं आयुष्मान कार्ड योजना में मरीजों को लाभ न मिलने के इस मामले को केंद्र की मोदी सरकार को गंभीरता से लेते हुए इसकी उच्च स्तरीय जांच कर दोषियों को दंडित किए जाने की जरूरत है एनआरएचएम घोटाले से कम आयुष्मान कार्ड योजना का घोटाला नहीं हुआ है इस मामले में जांच हुई तो तमाम बड़े चेहरे बेनकाब होंगे इसी तरह का एक मंझनपुर का मामला सामने आया है जहां महिला गायत्री देवी उर्फ गुड़िया देवी मर्ज से पीड़ित है उन्हें इलाज की सख्त जरूरत है उनका आयुष्मान कार्ड तो बनाया गया है लेकिन आयुष्मान कार्ड में गुड़िया देवी के बजाय कर्मचारियों ने भूल से गायत्री देवी लिख दिया है जबकि उनके आधार कार्ड में गुड़िया देवी लिखा हुआ है आधार कार्ड और आयुष्मान कार्ड में नाम का मिलान ना होने से उन्हें आयुष्मान कार्ड के इलाज का लाभ नहीं मिल रहा है वह मर्ज से पीड़ित है कर्मचारियों की लापरवाही का खामियाजा मरीज और उनके परिवार के लोग भुगत रहे हैं बार-बार उनके परिवार के लोग मुख्य चिकित्सा अधिकारी और मुख्य चिकित्सा अधीक्षक से मिलकर आयुष्मान कार्ड में नाम संशोधन की मांग कर रहे हैं इलाज करने के लिए अनुरोध कर रहे हैं लेकिन स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी गुड़िया देवी उर्फ गायत्री देवी को इलाज नहीं दे सके हैं उनका मर्ज दिनों दिन बढ़ता जा रहा है पूरा परिवार परेशान हो चुका है लेकिन स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी कुंभकरण की नींद सो रहे हैं योजना की सफलता का झूठा ढिंढोरा पीट रहे हैं नगर और गांव क्षेत्र में रहने वाले गरीब कमजोर मजलूम की पीड़ा से एयर कंडीशन रूम में रहने वाले अधिकारी परिचित नहीं है या फिर वह जान बूझकर योजना की कमियों को दूर नहीं करना चाहते हैं यह बड़ी जांच का विषय है।

संपादक की कलम से

नई लोकसभा का पहला दिन : गांधी पीछे होंगे!

सांसद चाहे नए हों या पुराने परिवार मित्रों के साथ आने पर शुरूआत गांधी प्रतिमा से करते थे और समापन करते थे उनको सेन्ट्रल हाल में बिठाकर कुछ खिलाते पिलाते हुए। वह सेन्ट्रल हाल भी खत्म कर दिया गया है। वह जहां भारत का संविधान बना था। नेहरू ने भारत की आजादी की घोषणा करते हुए दुनिया के बेहतरीन भाषणों में से एक ट्रिस्ट विद डेस्टिनी (नियति से साक्षात्कार) दिया था। पहले नया संसद भवन बनाकर संसद के खुलेपन ताजगी को खत्म कर दिया और अब सौन्दर्यीकरण के नाम पर संसद के विशाल परिसर को एक रिक्त स्थान में परिवर्तित। 18 वीं लोकसभा का पहला सत्र सोमवार से शुरू हो रहा है। इसमें 280 सांसद यानि की आधे से ज्यादा पहली बार जीतकर आ रहे हैं। मगर वे संसद भवन जिसे अब पुरानी कहा जाने लगा है, के सामने बनी विशाल महात्मा गांधी की प्रतिमा के दर्शन नहीं कर सकेंगे। इसी तरह वहीं थोड़ी दूर पर मौजूद संविधान हाथ में लिए उंगली से उस पर चलने का रास्ता दिखाते हुए बाबा साहब डा. आम्बेडकर की चिर-परिचित खड़ी हुई उंची प्रतिमा भी दिखाई नहीं देगी। वह सारा स्थान एक रिक्ति की तरह शून्य की तरह बन गया है। उसे ही सौन्दर्यीकरण कहा जा रहा है। आप संसद के लिए आइये किसी गांधी को प्रणाम करने की जरूरत नहीं किसी आम्बेडकर से प्रेरणा लेने की जरूरत नहीं। सारी प्रतिमाएं गांधी, आम्बेडकर, ज्योतिबा फुले, मोतीलाल नेहरू के साथ महाराणा प्रताप और छत्रपति शिवाजी की भी संसद के सामने से हटाकर प्रधानमंत्री कार्यालय के पीछे पहुंचा दी गई हैं। इसे प्रेरणा स्थल का नाम दिया गया है। यह भी वैसा ही जैसा इंडिया गेट से अमर जवान ज्योति को हटाकर दूसरी जगह पहुंचा दिया गया है। उसका भी नया नाम वार मेमोरियल दे दिया गया है। मगर जैसे पहले जवानों को अपनी श्रृदांजलि देने लोग इंडिया गेट पहुंचते थे वैसे वार मेमोरियल नहीं जाते उसी तरह संसद जाने वाले लोग जिनमें छात्रों की तादाद बड़ी होती है अब कोने में पीछे बना दिए गए प्रेरणा स्थल नहीं जा पाएंग्हर सांसद गांधी जी को रोज देखता था। अपने साथ जब भी परिवार या मित्रों को लाता था गांधी प्रतिमा के साथ खड़े होकर फोटो खिंचवाता था। सेल्फी लेता था। ऐसे ही छात्र और अन्य आगंतुक गांधीजी को नमन करने के साथ फोटो खिंचवाते थे। दरअसल यह प्रतिमा संसद भवन में ठीक उस पत्थर के सामने लगी थी जिस पर अंग्रेजों ने संसद भवन के शिलान्यास की घोषणा खोदी थी। यह अंग्रेजों के मुंह पर करारा तमाचा था कि जिस संसद भवन को तुमने हमें गुलाम रखने के कायदे कानून बनाने के लिए बनवाया था उसी के ठीक सामने उन कानूनों की धज्जियां उड़ाकर जिस शख्स ने देश आजाद करवाया है वह बैठा है। मगर अब उस शख्स को, गांधी को पीछे धकेल दिया गया है। और 1921 में संसद के शिलान्यास का पत्थर सामने लगा हँस रहा है। अपने प्रधानमंत्री चर्चिल की वह बात याद करके कि भारत का शासन ऐसे लोगों के हाथों में चला जाएगा जो अपने छोटेपन से कभी मुक्त नहीं हो पाएंगे। हालांकि चर्चिल ने तो इससे बहुत ज्यादा खराब शब्दों में भविष्यवाणी की थी। जो लिखने लायक भी नहीं हैं। जैसा हमने बताया कि सांसद चाहे नए हों या पुराने परिवार मित्रों के साथ आने पर शुरूआत गांधी प्रतिमा से करते थे और समापन करते थे उनको सेन्ट्रल हाल में बिठाकर कुछ खिलाते पिलाते हुए। वह सेन्ट्रल हाल भी खत्म कर दिया गया है। वह जहां भारत का संविधान बना था। नेहरू ने भारत की आजादी की घोषणा करते हुए दुनिया के बेहतरीन भाषणों में से एक ट्रिस्ट विद डेस्टिनी (नियति से साक्षात्कार) दिया था। हमारे प्रधानमंत्री मोदी जी के लिए कहा जाता है कि बहुत भाषण देते हैं। दें! मगर उस जैसा संबोधन नियति से साक्षात्कार दुनिया में विरल माना जाता है। जब दुनिया बदलने वाले, उसे दिशा देने वाले, जनता की निराशा दूर करके उसमें उमंग और उत्साह भरने वाले भाषणों का जिक्र आता है तो उनमें मार्टिन लूथर किंग, लिंकन, लेनिन, कैनेडी जैसे विश्वविख्यात नेताओं के ऐतिहासिक भाषणों के साथ नेहरू के भाषण का भी नाम होता है। अब वह सेन्ट्रल हाल जो इस भाषण का गवाह था वीरान पड़ा है। जब नई लोकसभा का गठन होता था तो राष्ट्रपति यहीं इसी सेन्ट्रल हाल में संसद के दोनों सदनों को संबोधित करते थे। मगर इस बार 18 वीं लोकसभा के सदस्यों को और उनके साथ राज्यसभा सांसदों को वे नई संसद की लोकसभा के सदन में संबोधित करेंगी। नए संसद भवन में सेन्ट्रल हाल है ही नहीं। सेन्ट्रल हाल मतलब संसद की धड़कन। दोनों सदनों के सदस्य वहां आते थे बैठते थे। दलगत राजनीति खत्म हो जाती थी। तमाम विचारोत्तेजक बहसें होती थीं। संसद कवर करने वाले सीनियर पत्रकार भी वहां होते थे। कभी-कभी सोनिया जी भी आ जाती थीं। वाजपेयी जी आते थे। अरुण जेटली का तो वह अड्डा था। लालू जी भी खूब बैठकें जमाते थे। पत्रकार यहां इस और उस पार्टी को कवर करने वाले नहीं होते थे। हर पार्टी के नेता के साथ बैठकर चाय काफी पीते थे। कुछ ऐसे दुष्ट दोस्त नेता भी होते थे जो आपकी आखिरी सिगरेट भी छीनकर पी जाते थे। यह कहकर कि हाउस में जाना है तुम्हें क्या है बैठो यहां और मंगा लेना। यह उन दिनों की बात है जब सेन्ट्रल हाल में धूम्रपान की अनुमति थी और ज्यादातर पत्रकार पीते थे। बाद में एक स्मोकिंग रूम बगल में अलग कर दिया गया। और फिर तमाम नेताओं और पत्रकारों की भी सिगरेट छूटी। लेकिन रजनीगंधा तुलसी पर झपट्टा मारना चलता रहा। भैरोसिंह शेखावत बड़े शौकीन थे। लालू जी तो अपने पास एक कुल्हड़ रखकर बैठते थे। खैर, वह लोकतंत्र की जीवंतता हँसी ठहाके। अंदर की बातें। एक दूसरे पर विश्वास की बात बाहर नहीं जाएगी। छोटे-छोटे बिल के लिए लड़ना-झगड़ना कि मेरे पास नहीं हैं। और बिल से ज्यादा अपने प्रिय वेटरों को टिप दे देना सब अतीत की बातें हो गईं। नई संसद में ऐसी कोई जगह ही नहीं है जहां मिला-जुला जा सके। बंद डिब्बे जैसा बना है। किसी का भी मन वहां जाने को नहीं करता। अगर गुप्त मतदान करवा लिया जाए तो नई बिल्डिंग के पक्ष में मोदीजी के साथ एक-दो लोगों का ही वोट आएगा। सब वापस पुरानी संसद में जाना चाहते हैं। राहुल ने जब यह कहा कि अगर हम जीते तो पुरानी संसद में वापस जाएंगे तो उन्हें इतना समर्थन मिला कि इससे पहले किसी एक बात पर कभी नहीं मिला था।

भीषण गर्मी का सेहत और जीवन पर क्या असर होता है

पृथ्वी के उत्तरी गोलार्ध का ज्यादातर हिस्सा भीषण गर्मी का सामना कर रहा है। प्रशासन, सार्वजनिक स्वास्थ्य के विशेषज्ञ लोगों को सुरक्षित रहने के लिए चेतावनी दे रहे हैं। आखिर यह भीषण गर्मी इंसानों पर क्या असर डालती है। चीन, भारत, मध्य पूर्व, दक्षिणी यूरोप और अमेरिका के कई हिस्सों में ऊंचा तापमान नया रिकॉर्ड बनाने की आशंका पैदा कर रहा है। भीषण गर्मी सेहत पर कई तरह से असर डालती है। गर्मी की वजह से शरीर को थकावट का अनुभव होता है। इसमें सिरदर्द, चक्कर आना, प्यास और शरीर के लड़खड़ाने जैसी समस्याएं होती हैं। ऐसा किसी के भी साथ हो सकता है। आमतौर पर यह गंभीर नहीं होता है। 30 मिनट के अंदर अगर ठंडक मिल जाए तो ये समस्याएं अपने आप खत्म भी हो जाती है। सबसे गंभीर समस्या है लू लगना। यह स्थिति तब आती है शरीर के अंदर का तापमान 40.6 डिग्री सेल्सियस के पार चला जाता है। यह सेहत के लिए आपातकाल की स्थिति है। इसकी वजह से लंबे समय के लिए कोई अंग बेकार या फिर मौत भी हो सकती है। सांस की गति तेज होना, उलझन या फिर सदमा और मितली आना इसके सामान्य लक्षण हैं।

जलवायु परिवर्तन के कारण तापमान आने वाले सालों में लगातार बढ़ता ही जाएगा। ऐसे में नमी का खतरा भी बढ़ने की आशंका है। गर्म हवाएं ज्यादा नमी को रोके रख सकती हैं। हवा में ज्यादा नमी होने का मतलब है कि पसीना नहीं आएगा जिससे कि शरीर ठंडा हो और उसे राहत मिल सके।

बांग्लादेश में भीषण गर्मी से परेशान कपड़ा फैक्ट्री के कर्मचारी

गर्मी का सबसे ज्यादा खतरा किसे?

गर्मी का खतरा कुछ लोगों के लिए ज्यादा है. इसमें छोटे बच्चे और बुजुर्ग सबसे पहले आते हैं। इसके साथ ही उन लोगों के लिए भी ज्यादा खतरा है। जो ज्यादा देर तक गर्म वातावरण में काम करते या फिर रहते हैं जैसे कि बेघर लोगइन लोगों में अगर पहले से सांस या दिल की बीमारी हो या फिर डायबिटीज हो तो इनके लिए खतरा गर्मी की वजह से कई गुना ज्यादा बढ़ जाता है। कई देशों में गर्मी को मौत की खास वजह के रूप में दर्ज नहीं किया जाता। इस वजह से इन देशों में गर्मी का खतरा झेल रहे समुदायों के बारे में कोई आंकड़ा नहीं है। हालांकि 2021 में विज्ञान पत्रिका द लांसेट ने एक रिसर्च के जरिए बताया था कि हर साल लगभग पांच लाख लोगों की मौत अत्यधिक गर्मी की वजह से हो रही है. यह आंकड़े सही तस्वीर नहीं दिखाते क्योंकि कम आय वाले कई देशों में गर्मी से होने वाली मौत का आंकड़ा मौजूद नहीं है। भारत में भी गर्मी से सैकड़ों लोगों के मरने की बात कही जा रही है।

लोकसभा के सत्र नई उम्मीदों को पंख लगाये

– ललित गर्ग –

अठारहवीं लोकसभा का पहला सत्र सोमवार से शुरू चुका है, जिसमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लोकसभा के सदस्य के रूप में शपथ ली। तीन जुलाई तक दस दिन के लिये चलने वाले इस सत्र में दो दिन नए सांसदों को शपथ दिलाई जायेगी। बुधवार को नए लोकसभा अध्यक्ष का चुनाव होगा, जबकि गुरुवार को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू दोनों सदनों की संयुक्त बैठक को संबोधित करेंगी। लोकसभा सत्र में विपक्ष इस बार अपनी बढ़ी हुई शक्ति का एहसास कराते हुए आक्रामक होने से नहीं चूकेगा। यही वजह है विपक्ष ने सत्र से पहले परीक्षा में गड़बड़ी, अग्निवीर व प्रोटेम स्पीकर जैसे मुद्दों को लेकर आक्रामक रुख दिखाने की रणनीति बनाई है। लोकसभा अध्यक्ष के चुनाव में भी सत्ता पक्ष को घेरने की कोशिशें होती हुई दिख रही है। वैसे भी वह पहले ही सत्ता पक्ष के गठबंधन के सहयोगियों को लोकसभा अध्यक्ष पद की मांग के लिए उकसाने में लगा हुआ है एवं वहीं स्वयं के लिये लोकसभा के उपाध्यक्ष पद की मांग कर रहा है। विपक्ष ने प्रोटेम अध्यक्ष की नियुक्ति के अलावा नीट-यूजी पेपर लीक व अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के स्थगित होने के मामले में सरकार को घेरने एवं संसदीय कार्रवाई को बाधित करने की रणनीति बनाई है, जिससे पहले दिन ही हंगामे के परिदृश्य देखने को मिल रहे हैं। बेहतर संख्या बल के चलते विपक्ष का उत्साहित होना स्वाभाविक है और उसके नेताओं की ओर से विभिन्न ज्वलंत मुद्दों पर सरकार को कठघरे में खड़ा करने की तैयारी में भी कुछ अनुचित नहीं, लेकिन इस तैयारी के नाम पर संसद में हंगामा और शोरशराबा करके ऐसी परिस्थितियां नहीं पैदा की जानी चाहिए जिससे संसद चलने ही न पाए। एक लंबे समय से यह देखने में आ रहा है कि विभिन्न मुद्दों पर सरकार से जवाबदेही के नाम पर विपक्ष संसद में हंगामा और अव्यवस्था पैदा करना उचित समझता आ रहा है, उसके तेवर इस बार ज्यादा ही उग्र एवं उत्तेजिक दिख रहे हैं, जो संसदीय परम्परा के लिये दुर्भाग्यपूर्ण है। सांसद चाहे जिस दल के हो, उनसे शालीन एवं सभ्य व्यवहार की अपेक्षा की जाती है। लेकिन सांसद अपने दूषित एवं दुर्जन व्यवहार से संसद को शर्मसार करते हैं तो यह लोकतंत्र के सर्वोच्च मन्दिर की गरिमा के प्रतिकूल है।

संसद राष्ट्र की सर्वोच्च संस्था है। देश का भविष्य संसद के चेहरे पर लिखा होता है। यदि वहां भी शालीनता, मयार्दा एवं सभ्यता का भंग होता है तो दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र होने के गौरव का आहत होना निश्चित है। आजादी के अमृतकाल तक पहुंचने के बावजूद भारत की संसद यदि सभ्य एवं शालीन दिखाई न दे तो ये स्थितियां दुर्भाग्यपूर्ण एवं विडम्बनापूर्ण ही कही जायेगी। एक बार फिर ऐसी ही त्रासद स्थितियों से रू-ब-रू होने की स्थितियां बनना एक चिन्तनीय प्रश्न है। संसद की सार्थकता केवल इसमें नहीं है कि वहां विभिन्न मुद्दे उठाए जाएं बल्कि इसमें है कि उन पर गंभीर एवं शालीन तरीके से चर्चा होकर राष्ट्रहित में प्रभावी निर्णय लिये जाये। दुर्भाग्य से संसद में राष्ट्रीय महत्व के विषयों पर ऐसी कोई चर्चा कठिनाई से ही होती है जिससे देश को कोई दिशा मिल सके और समस्याओं के समाधान खोजे जा सके। उचित यह होगा कि संसद में दोनों ही पक्ष संसदीय कार्यवाही के जरिये एक उदाहरण पेश करें, नयी संभावनाओं एवं सौहार्द का वातावरण बनाते हुए नई उम्मीदों एवं संकल्पों के सत्र के रूप में इस सत्र एवं आगे के सत्रों का संचालन होने दें।

अठारहवीं लोकसभा के पहले सत्र को लेकर उत्सुकता एवं कुतूहल का वातावरण पक्ष-विपक्ष के नवनिर्वाचित सांसदों में ही नहीं, बल्कि आम जनता में भी है। गठबंधन की स्थितियों के कारण यह लोकसभा पिछली लोकसभा से भिन्न होगी। इस बार विपक्ष का संख्या बल कहीं अधिक है और सत्तापक्ष गठबंधन सरकार का नेतृत्व कर रहा है। यद्यपि यह गठबंधन सरकार अतीत की गठबंधन सरकारों से भिन्न है, क्योंकि उसका नेतृत्व करने वाला दल यानी भाजपा बहुमत से कुछ ही पीछे है। इसके बावजूद संसद में सत्तापक्ष और विपक्ष के बीच टकराव देखने को मिल सकता है। इस टकराव के आसार भी उभर आए हैं, क्योंकि विपक्ष को प्रोटेम स्पीकर के नाम पर आपत्ति है। विपक्षी इंडिया गठबंधन की मानसिकता संसदीय सत्रों में देश-विकास की योजनाओं पर निर्णय में सहभागिता से अधिक सत्ता पक्ष को घेरने एवं सरकार के कामकाज को बाधिक करने की ही अधिक दिखाई दे रही है। यह निश्चित है कि सार्वजनिक जीवन में सभी एक विचारधारा, एक शैली व एक स्वभाव के व्यक्ति नहीं होते। अतः आवश्यकता है दायित्व के प्रति ईमानदारी के साथ-साथ आपसी तालमेल व एक-दूसरे के प्रति गहरी समझ एवं सौहार्द भावना की। जनता के विश्वास पर खरे उतरते हुए नये भारत-सशक्त भारत को निर्मित करने की। राजनीतिक दल द्वंद्व, एक दूसरे की आलोचना एवं विरोध की स्थितियां चुनाव के मैदान तक सीमित करें, उन्हें संसद तक न लाये। संसद में तो सभी दल मिलकर राष्ट्र-निर्माण का काम करें। एक सांसद के साथ दूसरा सांसद जुड़े तो लगे मानो स्वेटर की डिजाईन में कोई रंग डाला हो। सेवा एवं जनप्रतिनिधित्व का क्षेत्र ह्मोजॉयकह्ल है, जहां हर रंग, हर दाना विविधता में एकता का प्रतिक्षण बोध करवाता है। अगर हम सांसदों में आदर्श स्थापित करने के लिए उसकी जुझारू चेतना को विकसित कर सकें तो निश्चय ही आदर्शविहिन असंतुष्टों की पंक्ति को छोटा कर सकेंगे और ऐसा करके ही संसद को गरिमापूर्ण मंच बना पायेंगे।

नरेन्द्र मोदी तीसरी बार सत्ता में लौटे हैं। मोदी का लोकसभा सदस्य एवं प्रधानमंत्री के रूप में यह तीसरा कार्यकाल है। उन्होंने वाराणसी सीट बरकरार रखी, जिसे वे 2014 से जीतते आ रहे हैं। पहली बार नए संसद भवन में शपथग्रहण हुआ। भारतीय संसदीय इतिहास में ऐसा दूसरी बार है कि जनता ने किसी सरकार को लगातार तीसरी बार शासन करने का अवसर दिया है। ये मौका 60 साल बाद आया है। अगर जनता ने ऐसा फैसला किया है तो उसने सरकार की नियत पर मुहर लगाई है। उसकी नीतियों पर मुहर लगाई है। जनता के फैसले का स्वागत होना चाहिए, लेकिन ऐसा न होना संसद के साथ-साथ भारत के लिये परेशानी का कारण है। आज भारत दुनिया की तीसरी आर्थिक महाशक्ति बनने के साथ अपनी स्वतंत्र पहचान बनाने की ओर गतिशील है। भारत की बात दुनिया बड़ी ध्यान से सुनती है, वही दुश्मन देश भारत पर तिरछी नजर डालने से पहले सौ बार सोचते हैं, यह भारत की बड़ी ताकत का द्योतक है, जिसे पक्ष एवं विपक्ष मिलकर सहेजे और नये आयाम उद्घाटित करें। इन विषयों पर गंभीर चिन्तन-मंथन की संसद के पटल पर अपेक्षा है। जबकि निश्चित ही छोटी-छोटी बातों पर अभद्र एवं अशालीन शब्दों का व्यवहार, हो-हल्ला, छींटाकशी, हंगामा और बहिर्गमन आदि घटनाओं का संसद के पटल पर होना दुखद, त्रासद एवं विडम्बनापूर्ण है। इससे संसद की गरिमा एवं मयार्दा को गहरा आघात लगता है। यह सिलसिला बंद होना चाहिए। जहां विपक्ष का यह दायित्व है कि वह प्रतियोगी परीक्षाओं के प्रश्नपत्र लीक होने की घटनाओं और अन्य ज्वलंत मुद्दों पर सरकार से जवाब तलब करे वहीं सत्तापक्ष की यह जिम्मेदारी बनती है कि वह विपक्ष के सवालों का जवाब देने के लिए तैयार रहे। यदि ऐसा नहीं होता तो यह निराशाजनक ही होगा।

राष्ट्रीय चरित्र का दिन-प्रतिदिन नैतिक ह्रास हो रहा है। हर गलत-सही तरीके से हम सब कुछ पा लेना चाहते हैं। अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए कर्त्तव्य को गौण कर देते हैं। इस तरह से जन्मे हर स्तर के अशालीन एवं असभ्य व्यवहार से राष्ट्रीय जीवन में एक विकृति पैदा होती है, संसद को ही दूषित कर दिया जाता है, अठारहवीं लोकसभा के सभी सत्र इस त्रासदी से मुक्त हो, यह अपेक्षित है। विपक्षी सांसदों की यह कैसी त्रासद मानसिकता है कि वे सब चाहते हैं कि हम आलोचना करें पर काम नहीं करें। हम गलतियां निकालें पर दायित्व स्वीकार नहीं करें। जरूरत इस बात की भी है कि संसद को शुद्ध सांसें मिले, संसदीय जीवन जीने का शालीन, मर्यादित एवं सभ्य तरीका मिले।

प्रेषकः

(ललित गर्ग)

लेखक, पत्रकार, स्तंभकार

ई-253, सरस्वती कुंज अपार्टमेंट

25 आई. पी. एक्सटेंशन, पटपड़गंज, दिल्ली-92

केरल से प्रियंका गांधी के चुनावी पदार्पण का महत्व

– पी. श्रीकुमारन

वायनाड से प्रियंका को मैदान में उतारने के फैसले से कांग्रेस को अपने सहयोगी इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग के मुकाबले मुश्किल स्थिति से उबरने में मदद मिली है। यह सभी जानते हैं कि आईयूएमएल वायनाड सीट पाने के लिए उत्सुक थी। अगर कांग्रेस ने वायनाड सीट जीतने का फैसला किया होता तो यह सीट उसके लिए बहुत बड़ी चुनौती होती अगर प्रियंका के अलावा कोई और उम्मीदवार होता। केरल में इन दिनों कांग्रेस नेताओं के चेहरे और उनकी आंखों में चमक साफ देखी जा सकती है। उत्साह का भाव स्वाभाविक है। पार्टी ने हाल ही में लोकसभा चुनावों में राज्य की 20 लोकसभा सीटों में से 18 पर जीत हासिल कर उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है। खैर, उत्साहित कांग्रेस के लिए यह दोहरी खुशी की बात है कि प्रियंका गांधी ने राज्य की वायनाड सीट से चुनावी पदार्पण करने का फैसला किया है। यह फैसला राहुल गांधी के वायनाड सीट छोड़ने और उत्तर प्रदेश की रायबरेली सीट पर बने रहने के फैसले के बाद लिया गया है। इस फैसले से कांग्रेस को इस आलोचना से बचने में मदद मिली है कि राहुल ने वायनाड के मतदाताओं को धोखा दिया है। अगर वायनाड से प्रियंका के अलावा कोई और उम्मीदवार उतारा जाता तो यह आलोचना जायज होती। प्रियंका के वायनाड पहुंचने से यह संदेश साफ तौर पर गया है कि नेहरू परिवार वायनाड के लोगों को छोड़ने का इरादा नहीं रखता, जिन्होंने मुश्किल और संकट की घड़ी में गांधी भाई के साथ खड़े रहे। यह कहने की जरूरत नहीं है कि यह फैसला कांग्रेस और पार्टी के नेतृत्व वाले यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट (यूडीएफ) के लिए मनोबल बढ़ाने वाला है, जो 2025 में स्थानीय निकाय चुनावों और 2026 में विधानसभा चुनावों में भी अपने प्रभावशाली प्रदर्शन को दोहराने की उम्मीद कर रहा है। कांग्रेस और यूडीएफ में प्रचलित धारणा यह है कि यूडीएफ के सत्ता में आने की संभावनाएं वास्तव में उज्ज्वल हैं। इस तर्क के समर्थन में कांग्रेस नेताओं का कहना है कि पार्टी ने राज्य की 140 विधानसभा सीटों में से 110 पर बढ़त हासिल की है। यह लोकसभा चुनावों में अल्पसंख्यक समुदाय के वोटों, खासकर मुसलमानों के कांग्रेस की ओर शिफ्ट होने से हासिल हुआ है। लेकिन जमीनी हकीकत कुछ और ही है। अब तक का पैटर्न यह रहा है कि यूडीएफ लोकसभा चुनाव जीतता है जबकि माकपा के नेतृत्व वाला वाम लोकतांत्रिक मोर्चा (एलडीएफ) राज्य विधानसभा की लड़ाई में जीतता है। कांग्रेस को लगता है कि 2026 के चुनावी युद्ध में यह पैटर्न टूट जायेगा। हालांकि, लाख टके का सवाल यह है कि क्या प्रियंका की मौजूदगी केरल में कांग्रेस के लिए अभिशाप बनी आंतरिक कलह के अंत का संकेत देगी? क्या वह कांग्रेस के युद्धरत गुटों को शांति का संदेश देकर एलडीएफ को चुनौती देने के लिए एकजुट ताकत के रूप में लड़ने के लिए राजी कर पायेंगी? कांग्रेस में गुटबाजी के पैमाने और उग्रता को देखते हुए यह काम बिल्कुल भी आसान नहीं है। पार्टी में मौजूदा स्थिति इस पर बिल्कुल भी भरोसा नहीं जगाती। समस्या की गंभीरता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि केरल प्रदेश कांग्रेस कमेटी (केपीसीसी) के अध्यक्ष के. सुधाकरन और विपक्ष के नेता वी. डी. सतीशन अलग-अलग दिशाओं में जा रहे हैं। सतीसन को के.सी. वेणुगोपाल का समर्थन प्राप्त है, जो राहुल गांधी के करीबी हैं और केरल में कांग्रेस की राजनीति पर उनका अंतिम फैसला माना जाता है। हालांकि, सुधाकरन अपने प्रतिद्वंद्वियों को खुश करने के मूड में नहीं हैं। के.पी.सी.सी. के अध्यक्ष, जो अपनी अड़ियल नीति पर अड़े हुए हैं, को वरिष्ठ कांग्रेस नेताओं ए.के. एंटनी और रमेश चेन्निथला का ठोस समर्थन प्राप्त है। यह एक खुला रहस्य है कि सतीसन सुधाकरन को बाहर करना चाहते हैं, और सतीसन के.पी.सी.सी. प्रमुख के पद से सुधाकरन को बाहर करने के लिए हर संभव प्रयास कर रहे हैं। यह घिनौना नाटक कैसे आगे बढ़ेगा, यह देखना बाकी है। दूसरे शब्दों में, पार्टी में पूर्ण एकता सुनिश्चित करना प्रियंका गांधी के लिए अपने नये अवतार में मुख्य चुनौती है। क्या वह वहां सफल हो सकती हैं, जहां अन्य वरिष्ठ कांग्रेस नेता विफल रहे हैं? जहां तक एल.डी.एफ. का सवाल है, मोर्चे के लिए काम कठिन है। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, एल.डी.एफ. को एक मजबूत उम्मीदवार, अधिमानत:वायनाड से एक नेता खोजना होगा। रिपोर्ट्स के अनुसार, सीपीआई की एनी राजा, जिन्होंने राहुल गांधी को कड़ी टक्कर दी थी, फिर से चुनाव लड़ने के लिए बहुत उत्सुक नहीं हैं।

इन परिस्थितियों में, सीपीआई द्वारा सबसे अच्छा उम्मीदवार सत्यनमोकेरी को उतारा जा सकता है, जिन्होंने 2014 के संसदीय चुनाव में वायनाड से दिवंगत कांग्रेस नेता एमआईशानवास को एक लाख मतों के जीत के अन्तर से 20,000 वोटों पर लाकर उन्हें डरा दिया था। मुकाबला कितना करीबी था, यह इस बात से स्पष्ट है कि सत्यन को 38.92प्रतिशत वोट मिले, जबकि शानवास को 41.21प्रतिशत वोट मिले।

भ्रष्टाचार का नीट लेकिन सियासत ढीट

@ राकेश अचल

नीट परीक्षा के प्रश्नपत्रों का लीक होना इस देश के लिए शायद कोई बड़ी समस्या नहीं है। इस मसले पर सियासत करने वाले ढीट हैं और सरकार असहाय। हालांकि मामला देश की सबसे बड़ी अदालत के साथ ही तमाम जांच एजेंसियों के पाले में है ,फिर भी इस मसले पर देश के प्रधानमंत्री मौन हैं। वे अंतर्राष्ट्रीय दिवस पर कश्मीर में योगासन लगा रहे हैं ,सेल्फियां ले रहे है। वे नीट भ्ष्टार्चार के गढ़ बिहार में नालंदा विश्व विद्यालय के नए परिसर का उद्घाटन भी कर आये ,लेकिन नीट पर वे कुछ नहीं बोल रहे। वे मणिपुर के मामले में भी कहाँ बोले थे ? उन्हें तो हौआ खड़ा करना आता है । मंगलसूत्र लूटने का हौवा,भैंस खोले जाने का हौवा ,मुसलमानों का हौवा। गनीमत है की उनकी सरकार के मानव संसाधन मंत्री धर्मेंद्र प्रधान जरूर बोल रहे हैं ,लेकिन वे क्या बोलते हैं ,किसी की समझ में नहीं आता।

नीट परीक्षा के प्रश्न-पत्रों के लीक होने के मामले में किसी के पास नया कुछ नहीं है कहने के लिए। मेरे पास भी नहीं ,लेकिन एक नयी बात ये है की देश में जितनी भी परीक्षाओं के प्रश्न-पत्र लीक होते हैं वे अक्सर उन राज्यों में हो रहे हैं जहाँ डबल इंजिन की सरकारें हैं। बिहार के दुस्साहस को देश वैसे ही परनाम करता हूँ । यहां चारा घोटाले से लेकर नीट घोटाला तक करने वाले लोग रहते है। लेकिन इससे पहले बाबा आदित्यनाथ का उत्तर प्रदेश भी पेपर लीक के मामले में विशेष कौशल हासिल कर चुका है। हमारा मध्यप्रदेश तो इस मामले में सबसे आगे है। यहां डाक्टर से लेकर पटवारी परीक्षा तक के पेपर लीक होते हैं और परीक्षाओं तक में घोटाले हो जाते हैं ,लेकिन कोई ईडी या सीबीआई यहां जांच करने नहीं आती।दुर्भाग्य ये कि इस मामले में कोई भागवत सरकार को बोलने के लिए नहीं कहता। कोई इंद्रेश कुमार घोटालों कि पालनहार सरकारों को उपदेश नहीं देता ।

नीट परीक्षा के प्रश्न -पत्र हों या किसी अन्य परीक्षा के उन्हें लीक करने का एक सुगठित व्यवसाय देश के अनेक राज्यों में चल रहा है । किसी भी प्रतियोगी परीक्षा की सुचिता की कोई गारंटी इस देश में कोई नहीं दे सकता । आम चुनाव के वक्त भी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और कांग्रेस के नेता राहुल गांधी ने तरह-तरह की गारंटियां जनता के सामने रखीं थीं ,किन्तु किसी ने भी प्रतियोगी परीक्षाओं में प्रश्न-पत्र लीक होने की गारंटी नहीं दी। कोई दे भी नहीं सकता । क्योंकि इस मामले में अधिकाँश राजनीतिक दल और उनके नेता,कार्यकर्ता और नौकरशाही शामिल है । बिहार के पूर्व उप मुख्यमंत्री और राजद के प्रमुख तेजस्वी यादव के निज सचिव तक का इस घोटाले में शामिल होना इस बात का संकेत देता है कि इस मामले में कोई भी दूध का धुला नहीं है।

दरअसल देश की राजनीति के गर्भ से ही ये भ्ष्टार्चार जन्म लेता है और फिर पूरे समाज में फैल जाता है। केंद्र सरकार हो राज्य सरकारें इस तरह के अनैतिक कारोबार को रोकने के लिए रोज नए कानून बनाती है लेकिन नतीजा कुछ भी नहीं मिलता। हम यानि हमारा समाज,हमारी राजनीति,हमारी कार्यपालिका,हमारी विधायिका ,हमारी न्यायपालिका में सुचिता सिरे से नदारद है ।ठीक वैसे ही जैसे की गधे के सिर से सींग गायब हो गए हैं। आप इस देश की संसद में या विधान सभाओं में लाख कानून बना लीजिये लेकिन जब तक समाज की रगों में बहते भ्ष्टार्चार के काले खून को डायलिसिस कर बाहर नहीं निकालते ,कुछ होने वाला नहीं है। पिछले दो दशक में देश के हर हिस्से में केवल शिक्षा के क्षेत्र में इतने घोटाले हुए हैं कि उनकी गिनती तक करना कठिन है। हम एक बार प्राण-वायु [आक्सीजन] के बिना जीवित रह सकते हैं लेकिन घोटालों के बिना नहीं।

शिक्षा जगत में होने वाले इन घोटालों की मार देश की उस युवा पीढ़ी को झेलना पड़ रही है जिसे हम और आप देश का भविष्य कहते हैं।इस घोटाले को खाद -पानी वे माध्यम वर्गीय लोग देते हैं जो भ्ष्टार्चार के जरिये होने वाली कमाई से लाखों रुपए देकर प्रश्न-पत्र लीक करने की कोशिश में लगे रहते हैं। चूंकि सब एक ही थैली के चट्टे -बट्टे हैं इसलिए कोई ,किसी को दोषी नहीं मानता दुर्भाग्य की बात ये है कि इस तरह के घोटालों के तार उस गुजरात से जुड़े निकलते हैं जो महात्मा गाँधी का गुजरात है,जो सरदार पटेल का गुजरात है ,जो प्रधानमंत्री नरेंद्र दामोदर दास मोदी का गुजरात है । हमारा अपना गुजरात है। ।

नीट घोटाले को लेकर न बिहार के किसी मंत्री ने अपना इस्तीफा दिया है और न केंद्र का कोई मंत्री इस्तीफा देगा । पद से इस्तीफा देने के लिए जिस नैतिकता की जरूरत हो चुकी है ,वो तो न जाने कब की काल कवलित हो चुकी है। देश में नैतिकता न सियासत में है ,न शिक्षा में ,न समाज में। हम एक अनैतिक व्यवस्था का अंग हैं और इस व्यवस्था में हम घोटालों से मुक्ति नहीं पा सकते। कोई अदालत ,कोई सरकार हमारे देश को,समाज को घोटाला प्रूफ नहीं बना सकती। अब कोई अदृश्य शक्ति ही इस विषय में हमारी मदद कर दे तो और बात है। मै अपने अनुभव के आधार पर कह सकता हूँ कि इस तरह के घोटालों को न ये सरकारें रोक सकतीं हैं और न नई पीढ़ी को इस बारे में कोई गारंटी दे सकती हैं ,क्योंकि रोजगार न दे पाने की वजह से परोक्ष रूप से वे भी इस घोटाले का एक अदृश्य अंग हैं। ये घोटाले सरकारों और सरकारों के संरक्षण में घोटाले करने वालों की आय का एक पुख्ता स्रोत जो बन चुके हैं।

गैरहाजिर अधिकारियों की भेजी जायेगी सूची

बैठक करते जिला जज आदि।

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण नई दिल्ली व उप्र राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के क्रम में जनपद न्यायाधीश/अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण विकास कुमार प्रथम की अध्यक्षता में 13 जुलाई को होने वाली राष्ट्रीय लोक अदालत की सफलता को राजस्व व अन्य अधिकारियों की बैठक हुई। सोमवार को जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सचिव/ अपर जिला जज श्रीमती नीलू मेनवाल ने ज्यादातर निस्तारण योग्य मामलों की चर्चा हुई। चिन्हित वादों की नोटिस तामीला दो बार कराने पर जोर दिया। बैठक में अधिशाषी अभियन्ता विद्युत दीपक सिंह, पूर्ति निरीक्षक दिलीप कुमार, पीटीओ डा सन्तोष तिवारी, जिला सूचना अधिकारी सुरेन्द्र कुमार मौजूद रहे। डीपीआरओ, जिला कृषि अधिकारी, जिला दिव्यांग अधिकारी, जिला प्रोबेशन अधिकारी, ईओ नगर पालिका बैठक से गैरहाजिर रहे। सर्वोच्च न्यायालय व उच्च न्यायालय इलाहाबाद के निर्देशों के क्रम में बैठक हुई थी। जनपद न्यायाधीश ने गैरहाजिर अधिकारियों के बैठक में न आने पर नोटिस जारी करने के निर्देश दिये। जिसकी सूचना जिलाधिकारी, पुलिस अधीक्षक व उप्र राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण को भेजी जायेगी।

29 जुलाई की लोक अदालत में निपटेंगे मामले

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव/अपर जिला जज श्रीमती नीलू मेनवाल ने बताया कि सर्वोच्च न्यायालय ने 29 जुलाई से तीन अगस्त तक होने वाले विशेष लोक अदालत में श्रम वाद, शमनीय आपराधिक वाद, धारा 138 एनआई एक्ट, मोटर एक्सीडेंट क्लेम वाद, अन्य क्षतिपूर्ति मामले, पारिवारिक मामले, सेवा संबंधी मामले, कर संबंधी मामले, शैक्षणिक मामले, भरण-पोषण संबंधी मामले, उपभोक्ता संरक्षण संबंधी मामले, स्थानांतरण याचिकायें, धन वसूली संबंधी मामले, अपराधिक शमनीय मामले, भूमि संबंधित मामले व अन्य दीवानी मामलों का निस्तारण किया जाएगा।

बूंद-बूंद पानी को तरस रहे मुख्यालय से सटे ग्रामीण

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिला मुख्यालय से सटे कालूपुर पाही गांव में पेयजल का भीषण संकट है। गांव में बिगडे हैंडपंप प्रधान ठीक नहीं करा रहा। अनुसूचित जाति बस्ती व लोधन बस्ती में एक हैंडपंप है। पचास-साठ परिवार पानी भरते थे, हैंडपंप बिगड़ने से पानी की भीषण किल्लत है। सोमवार को कालूपुर पाही गांव में प्रधान शहाना बेगम व ग्राम विकास अधिकारी मनीष कुमार हैं। प्रधानी का कार्य प्रधान के ससुर मो सलीम देखते हैं। मनमानी से हैंडपंप मरम्मत कराते हैं। जुगाड से ग्रामीण पानी की किल्लत दूर करते हैं। ग्रामीणों ने बताया कि प्रधानी का कार्य देख रहे मो सलीम से हैंडपंप मरम्मत को कई बार कहा। हैंडपंप मरम्मत नहीं करा रहे। ग्रामीणों ने आरोप लगाया कि मो सलीम कहते हैं कि हैंडपंप मरम्मत कराते-कराते थक गये हैं। अब हैंडपंप मरम्मत नहीं करायेंगे, जो करना है करो।

अनुसूचित जाति बस्ती के हैंडपंप कागजों में हैं। हकीकत से हैंडपंप कोसों दूर हैं। हैंडपंप रीबोर के नाम पर गायब कर दिये हैं या फिर कब्जा कर लिए गए हैं। पानी की किल्लत दूर करने को जिला प्रशासन के कड़े निर्देश हैं। कालूपुर पाही में प्रधान की मनमानी से ग्रामीणों को पानी नहीं मिल रहा। हैंडपंप मरम्मत बाबत सचिव मनीष कुमार से पूंछा गया तो कहा कि जल्द मरम्मत कराई जायेगी।

प्रधान की मनमानी से हैण्डपम्प खराब

बेकाबू ट्रक पलटने से दो विद्युत पोल टूटे

अखंड भारत संदेश

पहाड़ी/चित्रकूट। पहाड़ी थाना क्षेत्र के बाबूपुर मोड़ के पास बेकाबू होकर लोड ट्रक विद्युत पोल से टकराकर पलट गया। मेन लाइन के दो विद्युत पोल टूटकर गिर गये। इससे क्षेत्र की विद्युत आपूर्ति ठप हो गई।

ये घटना रविवार की रात हुई। बताया गया कि लोड ट्रक बेकाबू होकर विद्युत पोल से टकराकर पलट गया। मेन लाइन के दो विद्युत खम्भे टूटने से कस्बा पहाड़ी समेत क्षेत्र की विद्युत आपूर्ति ठप हो गई। विद्युत आपूर्ति बाधित होने से पहाड़ी में पेयजल आपूर्ति नहीं हो सकी। लोग बूंद-बूंद पानी को सवेरे हैंडपम्पों में लाइन लगाये नजर आये। बताया गया कि ट्रक ट्रेलर एमपी19 जेडसी-1275 के चालक विनोद कुमार मिर्जापुर सतना से सीमेंट पाउडर लोडकर अमेठी जा रहा था। बाबूपुर श्रमदान के पास पहुंचा तो पहाड़ी की ओर से तेज रफ्तार ट्रक ने साइड से सटा दिया। मजबूरी में उसने ट्रेलर पटरी की ओर किया। गीली मिट्टी धंसने से ट्रेलर पलट गया। इससे दो विद्युत पोल टूट गये। पूरी रात विद्युत आपूर्ति बहाल नहीं हो सकी। विद्युत आपूर्ति बहाल न होने से सवेरे लोग पीने के पानी को भटकते नजर आये। खंभे टूटने की जानकारी पर विद्युत जेई महेश कुमार मौर्य ने तत्परता से कार्य शुरू करा दिया है। बताया कि शाम चार बजे तक विद्युत आपूर्ति बहाल की जायेगी।

विद्युत आपूर्ति ठप, बूंद-बूंद पानी को तरसे लोग

महापुरुषों की बदौलत हैं विधायकः अनिल प्रधान

राष्ट्रीय बौद्ध चेतना संस्थान ने मनाया कबीर व शाहूजी जयंती

अखंड भारत संदेश

पहाड़ी/चित्रकूट। राष्ट्रीय बौद्ध चेतना संस्थान के अध्यक्ष कैलाश बौद्ध की अगुवाई में प्रसिद्धपुर गांव में कबीर महोत्सव व शाहूजी महाराज जयंती में बतौर मुख्य अतिथि सदर विधायक अनिल प्रधान ने कहा कि जातियों में बंटे समाज को एकत्र करना व शोषित-वंचितों के लिए शाहूजी महाराज ने बडे काम किये थे।

रविवार को सम्पन्न हुए कबीर महोत्सव व शाहूजी महाराज जयंती में विधायक अनिल प्रधान ने कहा कि शाहूजी की देन है कि दलितों-पिछड़ों को आज भी आरक्षण मिल रहा है। आरक्षण के जनक व संविधान में अधिकार देने का काम डॉ अम्बेडकर व शाहूजी ने दिलाया था। उन्हीं की बदौलत किसान-गरीब के बेटे को विधायक बनने का मौका मिला है। महोत्सव में उमड़े जनसैलाब को देख उत्साहित विधायक ने कहा कि ये जनसैलाब बता रहा है कि समाज परिवर्तन की राह पर है। समाज बदलाव चाहता है। इस कारवां को थमने नहीं देंगे। इसे आगे बढ़ायेंगे।

जयंती में बोलते विधायक अनिल प्रधान।

मुख्य संयोजक कैलाश बौद्ध ने कहा कि कबीर साहब की बाते साढ़े छह सौ साल बीतने के बाद भी प्रासंगिक है। कबीर ने अंधविश्वास पर गहरी चोंट की है। कबीर की कही बातों पर आज भी रिसर्च हो रहे हैं। कबीर अक्खड़ स्पष्टवादी कवि थे। कबीर के बीजक सखियों पर मिक्सिंग की गई है। कबीर कोई अवतार नही, बल्कि महामानव व बोधिसत्व थे। इस मौके पर आलोक पटेल, मान सिंह पटेल, ज्ञानेंद्र चैधरी, सुभाष पटेल, रमेश कुशवाहा, दशरथ महाविद्यालय के प्रबंधक इं गया प्रसाद कुशवाहा ने भी विचार रखे। कौशाम्बी से गायक अमित बौद्ध व अश्वनी बौद्ध ने शानदार प्रस्तुतियां दी। इसके बाद भंडारे में हजारों लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया। कार्यक्रम में अमित पटेल, छोटेलाल कोटार्य, गुलाब बौद्ध, जितेंद्र बाल्मीकि, सूरज पाल कोटार्य, सूरजबली कोटार्य, रामनारायण पटेल, उदयभान पटेल, बलराम पटेल, बलराम चंद्रवंशी समेत तमाम लोग मौजूद रहे। संचालन रमाकांत रंजन ने किया।

बैंक की जांच करते सीओ सिटी।

सीओ ने बैंकों की जांचकर देखे कैमरे

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह के निर्देश पर सीओ सिटी राजकमल की अगुवाई में बैंक/वित्तीय संस्थानों की जांच की गयी। जांच दौरान बैंक सुरक्षा रजिस्टर देखा। ड्यूटी में लगे पुलिस कर्मियों को सुरक्षा बाबत निर्देश दिये। सोमवार को सीओ सिटी राजकमल की अगुवाई में बैंकों की जांच की। बैंकों में सतर्कता से ड्यूटी करने के निर्देश दिये। बैंक में लगे अलार्म/सायरन, सीसीटीवी कैमरों को देखा। सही ढंग से कार्य न करने वाले कैमरों के दुरुस्त कराने को शाखा प्रबंधकों से वार्ता की। सुरक्षा बाबत भी चर्चा की। परिसर में संदिग्ध लोगों की जांच की। अनावश्यक रूप से बैंक के अन्दर व बाहर बैठे लोगों को परिसर से बाहर करने के निर्देश दिये।

33 क्वार्टर शराब समेत एक दबोचा

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह के निर्देश पर अवैध शराब निर्माण व बिक्री की रोकथाम को जारी अभियान में चैकी प्रभारी शिवरामपुर सत्यमपति त्रिपाठी की टीम ने मनीष पुत्र शिवबरन शिवरामपुर के कब्जे से 33 क्वार्टर देशी शराब समेत गिरफ्तार किया। उस पर आबकारी अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया है। टीम में चैकी प्रभारी शिवरामपुर सत्यमपति त्रिपाठी, दरोगा यूटी कुंवर प्रखर सिंह व सिपाही नरेन्द्र कुमार शामिल रहे।

युवकों की छेड़छाड़ से तंग छात्रा ने दी जान

छह माह से कर रहे थे परेशान, समय रहते पुलिस ने नहीं की कार्यवाही

अखंड भारत संदेश

मऊ/चित्रकूट। 10वीं की छात्रा ने छेड़छाड़ से तंग आकर फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। परिजनों ने छात्रा का शव कमरे में पंखे से फंदे में लटका मिला तो घर में कोहराम मच गया। परिजनों ने कहा कि बेटी को गांव के दो युवक छह महीने से तंग कर रहे थे।

आत्महत्या की ये घटना रविवार को देर शाम मऊ थाने के परदवां गांव में हुई। बताया गया कि बेटी के स्कूल आते-जाते समय गांव के रंगीलाल व मुन्नीलाल पुत्र द्वारिका प्रसाद छेडछाड करते थे।

रोती-बिलखती मां को ढांढस बंधाते विधायक।

पुलिस से शिकायत की तो, कोई कार्यवाही नहीं हुई। दो दिन पहले बेटी को इन युवकों ने तंग किया था। पुलिस ने कोई मदद नहीं की। बेटी कहती थी कि रोज-रोज के तंग करने से अच्छा है कि वे जान दे दे। अंततः बेटी ने आत्महत्या कर ली। पुलिस से शिकायत की थी तो पुलिस ने परिजनों से ही थाने में मारपीट की। शिकायती पत्र पुलिस ने फाड़कर फेंक दिया। कुछ देर बाद पुलिस ने मामला दर्जकर शव का पंचनामा कर पोस्टमॉर्टम को मर्चरी भेजा है।फिलहाल पुलिस ने दोनों आरोपियों को गिरफ्तार किया है। परिजनों ने आशंका जताई कि पुलिस उन्हें छोड देगी। पुलिस ने उन्हें छोड़ा तो वे परिजनों की हत्या कर देंगे। सपा सदर विधायक अनिल प्रधान घटना स्थल पहुंचे। उन्होंने पीड़ितों से भेंट की। पुलिस पर गंभीर आरोप लगाये। मुख्यमंत्री से मामले की जांचकर पीड़ितों को न्याय दिलाने की मांग की है।

छात्रा के पिता ने बताया कि उसकी बेटी कक्षा दस में पढ़ती थी। साइकिल से स्कूल आती-जाती थी। घर के काम भी साइकिल से करती थी। छेडछाड की बातें बेटी परिजनों से बताती थी। परिजनों ने कहा कि युवकों के भय से बेटी का स्कूल जाना बंद करा दिया था। घर से निकलने पर दोनों युवक बेटी को परेशान करने थे। दो दिन पहले बेटी से छेड़छाड़ हुई तो घर आकर बहुत रोई थी। कह रही थी कि वे कहते हैं कि तुम्हें मार देंगे। वह युवकों की छेडछाड से तंग आ चुकी थी। छात्रा की मां ने कहा कि पुलिस ने समय पर कार्रवाई की होती तो बेटी जिंदा होती।

आरोपियों पर कडी कार्यवाहीः सीओ

मऊ/चित्रकूट। इस मामले में सीओ राजापुर श्रीमती निष्ठा उपाध्याय ने कहा कि मामले की जानकारी मिली है। शव का पंचनामा कर पोस्टमॉर्टम को मर्चरी भेजा है। जो आरोप परिजन लगा रहे हैं, उनकी जांचकर कार्यवाही की जायेगी। आरोपियों पर कडी कार्रवाई होगी।

बच्चों को छलांग के बारे में बताते कोआर्डिनेटर।

समर कैम्प में बच्चों का हो रहा विकास

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। कर्वी ब्लाक के बरवारा गांव में प्रजायत्न संस्था के छलांग प्रोजेक्ट में समर कैम्प का समापन खेल मेला से हुआ। कैम्प में अतिथियों में प्रधान अभिलाष, शिक्षामित्र हीरालाल, आंगनबाड़ी कार्यकत्री श्रीमती सुनीता देवी ने सरस्वती चित्र में माल्यार्पण किया। संस्था के प्रोग्राम मैनेजर अमित ने परिचय देते हुए छलांग के बारे में जानकारी दी। बताया कि बच्चों में खेल से होने वाली शारीरिक शिक्षा, मानसिक शिक्षा से समझ स्पष्ट करने को मंच देना है।

सोमवार को संस्था के फील्ड कोआर्डिनेटर ने कम्पोजिट विद्यालय बरवारा में खेल गतिविधि करायी। अन्य दिनों में प्रधान की देखरेख में विद्यालय के नोडल टीचर खेल गतिविधि करायेंगे। प्रजायत्न संस्था कर्वी ब्लाक के 25 विद्यालय व पहाड़ी ब्लॉक के 25 विद्यालय में बच्चों के शारीरिक, मानसिक बौद्धिक, समाजिक विकास पर कार्य कर रही है।

स्वयंसेवक अभिषेक व अशोक समर कैम्प की छुट्टियों में बच्चों के साथ सप्ताह में तीन दिन खेल गतिविधि कराते थे। बच्चों को चार भागों में बांटकर खेल गतिविधि की जानकारी दी। छोटे बच्चों के साथ कोकला झपकी गेम कराया। बड़े बच्चों के साथ चैन गेम, लेट्स डू दी एडिशन, डोज हैंड बाल गेम कराया। 45 बच्चों में दस बच्चों के माता-पिता मौजूद रहे। प्रजायत्न संस्था छलांग प्रोजेक्ट से सूर्यकान्त, अनुज कुमार, प्रेमचंद, नीलू देवी ने बच्चों को बिस्कुट बांटकर कार्यक्रम का समापन किया।

अज्ञात कारणों से अधेड ने खाया जहर, मौत

अखंड भारत संदेश

पहाड़ी/चित्रकूट। पहाड़ी थाने के कस्बा पहाड़ी के राजापुर रोड के बरेठी चैराहा के रामबालक विश्वकर्मा (55) पुत्र छित्तू सोमवार को दोपहर में अज्ञात कारणों से जहरीला पदार्थ खा लिया। परिजनों ने सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहाड़ी में भर्ती कराया। हालत गंभीर होने से जिला अस्पताल रेफर हुआ। इलाज दौरान उसकी मृत्यु हो गई। परिजनों में हाहाकार मचा है। मृतक के एक पुत्र व तीन पुत्रियां हैं।

दलाली का अड्डा बना एआरटीओ कार्यालय, एआरटीओ पर आरोप

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी कार्यालय में इन दिनों खुलेआम दलाली को बढावा दिया जा रहा है। एआरटीओ खुद दलालों के जरिये फाइलें लाने को कहते हैं। आम जनता के सीधे कोई कार्य नहीं होते। सोमवार को एआरटीओ कार्यालय बाबत लोगों ने खुलासा किया। एआरटीओ कार्यालय बाबत अधिवक्ता अमिताभ ने कहा कि इन दिनों एआरटीओ कार्यालय दलाली का अड्डा बना है। कोई भी कार्य सीधे आम जनता के नहीं होते। कार्य कराने को फाइल लेकर जाने पर एआरटीओ दलाल के माध्यम से आने को कहते हैं। इस बात का ऑडियो भी मौजूद है।

सीधे फाइल लेकर जाने पर लोगों को भगा दिया जाता है। एआरटीओ कहते हैं कि दलालों से फाइल भेजिये, जो ऑनलाइन फीस दी जाती है, उसमें बची धनराशि नहीं लौटाई जाती। कहते हैं कि खुल्ला कराकर दीजिए। अन्यथा धनराशि लौटाई नहीं जायेगी। सारी फाइलें दलालों के माध्यम से एआरटीओ कार्यालय में निपटाई जाती हैं।

परिवार परामर्श केन्द्र ने दम्पति में कराई सुलह

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह के निर्देश पर सामाजिक रिश्तों को बचाने के प्रयास में पुलिस कार्यालय स्थित परिवार परामर्श केन्द्र में आपसी पारिवारिक विवाद को समाप्त कराकर एक परिवार में सुलह करा परिवार को टूटने से बचाया।

सोमवार को कोतवाली कर्वी के खोह गांव की श्रीमती किरन देवी पुत्री पूनी प्रसाद ने पति कुलदीप पुत्र मुन्ना गढ़चपा व ससुरालीजनों पर मारपीट, गाली-गलौज, दहेज की मांग बाबत पुलिस अधीक्षक को पत्र सौंपा था। पुलिस अधीक्षक ने पत्र निस्तारण को प्रभारी परिवार परामर्श केन्द्र भेजा। परिवार परामर्श केन्द्र प्रभारी श्रीमती गुड्डी देवी, महिला सिपाही शिवांगनी श्रीवास्तव, महिला सिपाही मंजूलता ने शिकायत को सुन-समझकर दूसरे पक्ष को पुलिस कार्यालय बुलाया। दोनों पक्षों को भविष्य में विवाद न करने व पारिवारिक कर्तव्यों का पालन करने की बात कही। आपसी सुलह होने पर दम्पति ने एक-दूसरे के साथ तालमेल से रहने का भरोसा दिया।

दम्पति में सुलह कराती पुलिस।

नाबालिग से दुष्कर्म आरोपी 24 घंटे में दबोचा

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह के निर्देश पर अपराधियों के खिलाफ जारी कार्यवाही में प्रभारी निरीक्षक मऊ अजीत कुमार पाण्डेय की टीम ने नाबालिग बच्ची से दुष्कर्म के आरोपी को गिरफ्तार किया।

ज्ञात है कि रविवार 23 जून को थाना मऊ में पीडित ने सूचना दी कि उसकी डेढ़ वर्षीय बेटी के साथ इतराज श्रीवास पुत्र पुरउहा श्रीवास कुम्हारन डेरा मजरा चित्रवार ने दुष्कर्म किया है। पुलिस ने तत्काल मामला दर्जकर आरोपी को दबोचा। टीम में प्रभारी निरीक्षक मऊ अजीत कुमार पांडे, निरीक्षक अपराध अभय राज सिंह, सिपाही प्रवीण कुमार पांडेय व राहुल पांडेय शामिल रहे।

पुलिस गिरफ्त में दुष्कर्म आरोपी।

तीन वारंटी दबोचे

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह के निर्देश पर वांछित/वारंटी की गिरफ्तारी को जारी अभियान में पुलिस ने तीन वारंटियों को दबोचा है। सोमवार को भरतकूप थाने के दरोगा बालकिशन ने महिला सिपाही दीपिका सिंह के साथ मारपीट, गाली-गलौज के वारंटी विष्णु व लाल पुत्र बच्चा यादव भारतपुर को गिरफ्तार किया। कोतवाली कर्वी के दरोगा श्यामदेव सिंह ने सिपाही शिवपूजन यादव के साथ सीआरपीसी के वारंटी राकेश सोनकर पुत्र चन्द्रपाल सोनकर शंकर बाजार को गिरफ्तार किया।

उत्तरी गाजा में इजराइली हमले में कम-से-कम 39 लोगों की मौत

गाजा। उत्तरी गाजा में शनिवार को इजराइल के हमले में कम-से-कम 39 लोगों की मौत हो गई है। एकदिन पहले ही दक्षिणी शहर राफा के करीब शरणार्थी शिविर पर हुए हमले में कम-से-कम 25 लोगों की मौत हुई थी। इजराइल ने शनिवार को कहा कि मध्य और दक्षिणी गाजा में अपना अभियान जारी रखेगा। फिलिस्तीनी और अस्पताल के अधिकारियों के अनुसार, शनिवार को उत्तरी गाजा में इजरायल के हमलों में कम से कम 39 लोग मारे गए हैं। गाजा सिटी में अल-अहली अस्पताल के निदेशक फादेल नईम के मुताबिक करीब 36 शव अस्पताल में पहुंचाए गए। इजराइल ने शनिवार को कहा कि उसके लड़ाकू विमानों ने गाजा सिटी क्षेत्र में हमास के दो सैन्य ठिकानों पर हमला किया। हालांकि इन हमलों को लेकर इजराइल की तरफ से अधिक जानकारी नहीं दी गई। एक दिन पहले ही दक्षिणी शहर राफा के पास तम्बू शिविरों पर हुए हमलों में कम से कम 25 लोगों की मौत और 50 लोग घायल हो गए थे।

उल्लेखनीय है कि 7 अक्टूबर को हमास आतंकियों ने दक्षिणी इजराइल पर हमला कर लगभग 1,200 लोगों की हत्या कर दी और लगभग 250 लोगों को बंधक बना लिया। इजराइल ने जवाबी कार्रवाई करते हुए गाजा क्षेत्र में व्यापक स्तर पर हमास आतंकियों के खात्मे के लिए अभियान शुरू कर दिया। गाजा के स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार, इजराइल के जवाबी हमलों में 37,400 से अधिक फिलिस्तीनियों की मौत हो चुकी है।

तिब्बती आध्यात्मिक गुरु दलाई लामा स्विट्जरलैंड पहुंचे, घुटने की सर्जरी के लिए अमेरिका होंगे रवाना

ज्यूरिख। तिब्बती आध्यात्मिक गुरु दलाई लामा स्विट्जरलैंड के ज्यूरिख पहुंच गए हैं। दलाई लामा अपने घुटने की सर्जरी करवाने के लिए ज्यूरिख से अमेरिका के लिए आज रवाना होंगे।

तिब्बती आध्यात्मिक गुरु दलाई लामा घुटने की सर्जरी के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका जाने के लिए 21 जून को धर्मशाला से नई दिल्ली के लिए रवाना हुए थे। बड़ी संख्या में तिब्बती उन्हें शुभकामनाएं देने के लिए कांगड़ा एयरपोर्ट पहुंचे थे। एक दिन दिल्ली में रहने के बाद वे स्विट्जरलैंड के ज्यूरिख पहुंच गए। यहां से आज अमेरिका के लिए रवाना होंगे।

ज्यूरिख पहुंचने पर एक होटल में पारंपरिक तिब्बती तरीके से उनका स्वागत करते हुए गानों और नृत्य की प्रस्तुति दी गई। तिब्बती आध्यात्मिक गुरु को देखने के लिए होटल की लॉबी में उनके शुभचिंतकों बड़ी संख्या में पहुंचे। बड़ी संख्या में सड़कों पर उनके शुभचिंतक देखे गए।

उल्लेखनीय है कि इसी हफ्ते की शुरूआत में माइकल मैककॉल के नेतृत्व में एक द्विदलीय अमेरिकी कांग्रेस प्रतिनिधिमंडल ने धर्मशाला में दलाई लामा से मुलाकात की थी। प्रतिनिधिमंडल का हिस्सा रहीं पूर्व अमेरिकी सदन अध्यक्ष नैंसी पेलोसी ने तिब्बत के लोगों के लिए कांग्रेस के समर्थन की दृढ़ता से पुष्टि की।

नेपाल सरकार के मुख्य सचिव के खिलाफ भ्रष्टाचार मामले में चार्जशीट दाखिल

काठमांडू। नेपाल सरकार के मुख्य सचिव के खिलाफ भ्रष्टाचार के मामले में आरोप पत्र दायर किया गया है। रेवेन्यू स्टीकर छापने को लेकर हुए आर्थिक अनियमितता पर जांच पूरी करने के बाद एंटी करप्शन ब्यूरो की तरफ से चार्जशीट दाखिल की गई थी।

ब्यूरो के आयुक्त जयबहादुर चन्द ने कहा कि मुख्य सचिव बैकुंठ अर्याल पर उनके संचार सचिव रहते हुए सिक्योरिटी प्रिंटिंग प्रेस खरीद मामले और रेवेन्यू स्टीकर की छपाई के मामले में भ्रष्टाचार करने का आरोप लगाया गया है। इस मामले में मुख्य सचिव के खिलाफ एंटी करप्शन ब्यूरो ने विशेष अदालत में चार्जशीट दायर की है। यह पहला मौका है जब ब्यूरोक्रेसी के सबसे बड़े अधिकारी के खिलाफ भ्रष्टाचार का आरोप लगा है। नेपाल की संवैधानिक व्यवस्था के मुताबिक किसी भी अदालत में चार्जशीट दायर होते ही पद स्वतः निलम्बित हो जाता है।

रूस के दागिस्तान में आतंकी हमला, सात लोगों की मौत

मॉस्को। रूस के दागिस्तान में रविवार रात बड़ा आतंकी हमला हुआ है। इस हमले में एक पादरी और पुलिस कर्मियों सहित कुल सात लोगों की मौत हुई है जबकि रूस के सुरक्षाबलों ने दो हमलावर आतंकियों को भी मार गिराया है। देश के आंतरिक मामलों के मंत्रालय ने यह जानकारी दी है।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक प्रार्थना घर और चर्च दोनों ही दागिस्तान के डर्बेंट शहर में स्थित हैं। यह मुख्य रूप से मुस्लिम बहुल उत्तरी काकेशस का इलाका है, जहां प्राचीन यहूदी समुदाय के लोग रहते हैं। आतंकियों ने दागिस्तान की राजधानी माखचकाला में पुलिस चौकी पर भी हमला बोला, जो यहां से लगभग 125 किलोमीटर (75 मील) दूर है। स्थानीय लोगों ने बताया कि हमले के बाद प्रार्थना घर में आग लग गई और चर्च से भी धुआं उठता हुआ दिखाई दिया। डर्बेंट में चर्च पर हुए हमले में 66 वर्षीय एक ऑर्थोडॉक्स पादरी की मौत हो गई है। दागिस्तान के प्रमुख सर्गेई मेलिकोव ने कहा कि रविवार रात डर्बेंट और माखचकाला में अज्ञात लोगों ने सार्वजनिक स्थिति को अस्थिर करने का प्रयास किया। दागिस्तान के पुलिस अधिकारी उनके रास्ते में खड़े थे। उनमें से कुछ हताहत हुए हैं। सभी सेवाएं निर्देशों के अनुसार काम कर रही हैं। हमलावरों की पहचान की जा रही है।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
RNI No: UPHIN/2001/09025
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।

नौकरों के शोषण का मामला: हिंदुजा परिवार बरी, शिकायतकताओं ने वापस लिए आरोप

लंदन। भारतीय मूल के बिजनेसमैन ब्रिटेन के सबसे अमीर हिंदुजा परिवार के 4 सदस्यों को नौकरों के शोषण मामले में सभी आरोपों से बरी कर दिया गया है। एक दिन पहले 21 जून को निचली अदालत ने हिंदुजा परिवार के चार सदस्यों को जेल की सजा सुनाई थी। अब ऊपरी अदालत ने 22 जून को इस परिवार के सदस्यों को सभी आरोपों से बरी कर दिया।

निचली अदालत के फैसले में प्रकाश हिंदुजा और उनकी पत्नी कमल हिंदुजा को साढ़े चार साल की सजा मिली थी। उनके बेटे अजय और बहू नम्रता को चार साल की सजा सुनाई गई थी। उनके मैनेजर नजीब जियाजी को भी 18 महीने की सजा हुई थी। परिवार ने फैसले को उच्च अदालत में चुनौती दी थी।

हिंदुजा परिवार के प्रवक्ता के मुताबिक उच्च अदालत ने सभी गंभीर आरोप खारिज कर दिए हैं। प्रवक्ता के मुताबिक शिकायतकताओं ने आरोप वापस ले लिए हैं। अदालत को उन्होंने बताया कि उन्हें ऐसे बयानों पर साइन करने के लिए गुमराह किया गया था, जिन्हें वे नहीं समझते थे। उनका न तो ऐसा इरादा था और न उन्होंने ऐसी कार्यवाही शुरू की थी।उल्लेखनीय है कि प्रकाश हिंदुजा, कमल, अजय और बहू नम्रता पर आरोप हैं कि उन्होंने स्विट्जरलैंड के जिनेवा स्थित अपने बंगले में काम करने वाले कामगारों का शोषण और गैरकानूनी तरीके से कर्मचारियों को काम पर रखा। उन्हें कम वेतन पर 18 घंटे तक काम कराया गया। उन्हें बहुत कम या बिल्कुल भी छुट्टी नहीं दी जाती थी तथा स्विस कानून के तहत अपेक्षित वेतन के दसवें हिस्से से भी कम था।

सऊदी में इस साल भीषण गर्मी, 1301 हज यात्रियों को गंवानी पड़ी जान

रियाद (सऊदी अरब)। सऊदी अरब में इस साल अत्यधिक गर्मी के कारण काफी संख्या में हज यात्रियों को जान गंवानी पड़ी है। रविवार को सऊदी अरब की तरफ से इस संबंध में जानकारी दी गई कि हज यात्रा के दौरान इस साल कम से कम 1301 लोगों की मौत हुई है। इनमें भीषण गर्मी के चलते काफी संख्या में लोगों की जान गई। बीते सोमवार मक्का में तापमान 51.66 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। मरने वालों में 98 भारतीय यात्रियों की भी मौत हुई है। सबसे ज्यादा मिस्र के लोगों की मौत हुई।

सऊदी अरब सरकार की तरफ से जारी की गई जानकारी के मुताबिक, इस साल भीषण गर्मी ने स्वास्थ्य प्रणाली को प्रभावित किया। अफसोस की बात ये है कि इस दौरान 1,301 लोगों की मौत हो गई। सऊदी अरब के स्वास्थ्य मंत्री फहद बिन अब्दुर्रहमान अल-जलाजेल के मुताबिक मरने वालों में 83 प्रतिशत लोग हज करने के लिए अनधिकृत थे और पर्याप्त आश्रय या आराम के बिना, सीधी धूप में लंबी दूरी तय कर रहे थे। मृतकों में बुजुर्ग और लंबे समय से बीमार लोग भी शामिल हैं। पहचान की प्रक्रिया में देरी हुई क्योंकि मरने वालों के पास अधिकृत दस्तावेज नहीं थे लेकिन अब सभी मृतकों की पहचान कर ली गई है।

मंत्री के अनुसार 95 हज यात्रियों का अस्पतालों में इलाज किया जा रहा है, जिनमें से कुछ को राजधानी रियाद में इलाज के लिए हवाई मार्ग से ले जाया गया है। उन्होंने बिना कोई ब्यौरा दिए कहा कि मृतकों को मक्का में दफनाया गया। इस साल सऊदी अरब प्रशासन ने दुनियाभर के 18 लाख लोगों को हज पर आने की इजाजत दी थी। इसमें सैकड़ों ऐसे यात्री भी शामिल हुए जिन्हें हज के लिए लाइसेंस नहीं दिया गया था। जिसके चलते उन्हें हज यात्रियों जैसी सुविधाएं नहीं मिली। ऐसी स्थिति में वे खुले आसमान में रहने को मजबूर हुए। साथ ही उन्हें अधिकृत रूप से हाजियों को ले जाने वाली बसों में भी यात्रा का लाभ नहीं मिला। जिसके चलते ये लोग गर्मी का शिकार हो गए और कई लोगों की जान चली गई।

भारतीय विदेश मंत्रालय की तरफ से इस संबंध में कहा गया कि हर साल की तरह इस साल भी एक लाख 75 हजार भारतीय श्रद्धालु हज करने के लिए सऊदी अरब पहुंचे हैं, इनमें 98 लोगों की मौत हो चुकी है। विदेश मंत्रालय के मुताबिक पिछले साल 187 भारतीय नागरिकों की हज यात्रा के दौरान मौत हुई थी।

श्रीलंका: गंभीर आर्थिक संकट के उबरते देश में इस साल छह माह में 9 लाख पर्यटक पहुंचे

कोलंबो। दो वर्षों के गंभीर आर्थिक संकट और राजनीतिक अस्थिरता का सामना करने के बाद श्रीलंका की अर्थव्यवस्था तेजी से पटरी पर आ रही है। देश में पर्यटकों की लगातार बढ़ती संख्या इसका संकेत है। राष्ट्रपति रानिल विक्रमसिंघे इसी सप्ताह सार्वजनिक रूप से स्वीकार कर चुके हैं कि भारत से मिली आर्थिक मदद की वजह से श्रीलंका दो साल के संकट के दौर से उबरने की दिशा में है।

पर्यटन पर काफी निर्भर श्रीलंका की अर्थव्यवस्था के लिए अच्छे संकेत दिख रहे हैं। कोरोना काल में चौपट हुए पर्यटन की वजह से देश को दो-तीन साल तक गंभीर आर्थिक संकट सामना करना पड़ा। एकबार फिर श्रीलंका में पर्यटकों की दिलचस्पी वापस आ रही है। श्रीलंका पर्यटन विकास प्राधिकरण के अनुसार, इस वर्ष अब तक 966,604 पर्यटक देश में आ चुके हैं। अकेले जून में अब तक 69,825 पर्यटक आ चुके हैं। इस साल जनवरी में 208253 पर्यटक, फरवरी में 218350 पर्यटक, मार्च में 209181 पर्यटक, अप्रैल में 148867 पर्यटक और मई में 112128 पर्यटक श्रीलंका आए हैं। श्रीलंका पर्यटन विकास प्राधिकरण के मुताबिक इस देश में रूस, भारत, जर्मनी, ब्रिटेन, चीन, फ्रांस, ऑस्ट्रेलिया आदि से अधिक पर्यटक आए हैं। 2023 में श्रीलंका आने वाले पर्यटकों की संख्या 14 लाख 87 हजार रही।

उल्लेखनीय है कि पिछले शनिवार को श्रीलंका के राष्ट्रपति रानिल विक्रमसिंघे ने कोलंबो में आयोजित 31वीं अखिल भारतीय साझेदार बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि दो मुश्किल वर्षों से गुजरने के बाद, मुझे यह स्वीकार करना होगा कि यह इसलिए संभव हुआ क्योंकि भारत ने हमें 3.5 अरब डॉलर का ऋण दिया था। वह सब चुका दिया जाएगा।

नेपाल सरकार से नियुक्त दक्षिण कोरिया के राजदूत सुशील प्याकुरेल ने ठुकराया पद

काठमांडू। दो दिन पहले नेपाल सरकार द्वारा सिफारिश किए गए 8 राजदूतों में से एक ने यह पद लेने से इंकार कर दिया है। दक्षिण कोरिया के लिए राजदूत नियुक्त किए गए सुशील प्याकुरेल ने सरकार की प्रक्रिया पर सवाल उठाते हुए पद को ठुकराने की बात कही है। प्रधानमंत्री पुष्पकमल दाहाल ह्यप्रचंडह्ण की अध्यक्षता में शुक्रवार को हुई कैबिनेट बैठक में भारत, अमेरिका, यूके, इजराइल, दक्षिण कोरिया सहित आठ देशों में राजदूत नियुक्ति की सिफारिश करने का फैसला लिया गया था। इनमें से दक्षिण कोरिया के लिए राजदूत नियुक्त किए गए सुशील प्याकुरेल ने सरकार से इस सिफारिश को वापस लेने का अनुरोध किया है। प्याकुरेल पूर्व राष्ट्रपति विद्या भंडारी के प्रमुख सलाहकार रह चुके हैं तथा मानवाधिकार संबंधी गैर सरकारी संगठन से जुड़े हैं। सुशील प्याकुरेल ने प्रधानमंत्री प्रचंड को भेजे पत्र में लिखा है कि बिना उनसे संपर्क और सलाह के ही उनकी नियुक्ति की गई है, जो सही नहीं है। सरकार की तरफ से राजदूत पद के लिए सिफारिश की प्रक्रिया पर सवाल खड़े करते हुए उन्होंने लिखा है कि बिना किसी योग्यता और क्षमता के तथा बिना संबंधित देश की राजनीतिक भौगोलिक, आर्थिक, भूराजनीतिक ज्ञान के किसी भी व्यक्ति को उस देश में सिर्फ राजनीतिक आस्था के आधार पर भेजना ठीक नहीं है। नेपाल सरकार ने दो दिन पहले आठ राजदूतों में से एमाले पार्टी को 5, माओवादी के कोटे से 1, जनता समाजवादी पार्टी के कोटे से 2 राजदूतों की नियुक्तियां की गई थी।

नेपाल : ॐ शब्द हटाने के सरकार के फैसले को सुप्रीम कोर्ट ने रद्द किया

काठमांडू। नेपाल सरकार के तरफ से शब्दकोश से ॐ शब्द को हटाने के फैसले को सुप्रीम कोर्ट ने रद्द कर दिया है। कोर्ट ने ॐ के साथ ही कोई भी संयुक्ताक्षर को शब्दकोष से हटाने के आदेश को निरस्त कर दिया है। सन् 2012 में शिक्षा मंत्रालय के अन्तर्गत रहे पाठ्यक्रम विकास केन्द्र ने एक निर्णय करते हुए शब्दकोश से ॐ शब्द को हटाने का निर्णय किया था। केन्द्र के इस फैसले को सही ठहराते हुए तत्कालीन शिक्षा मंत्री दीनानाथ शर्मा ने सभी पाठ्य पुस्तक से ॐ शब्द को हटाने का लिखित निर्देश दिया था। शिक्षा मंत्री के इसी फैसले के खिलाफ में सुप्रीम कोर्ट में रिट दायर किया गया था। 09 अगस्त 2012 को शिक्षा मंत्री के द्वारा दिए गए निर्देश पर 13 अगस्त 2012 को रिट दायर की गई था। करीब 12 साल के बाद आज सुप्रीम कोर्ट ने इस पर अपना फैसला दिया है। सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश जस्टिस सपना प्रधान मल्ल और जस्टिस सारंगा सुवेदी की डबल बेंच में इस रिट पर अपना अन्तिम फैसला दिया है। अपने फैसले में सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि पाठ्यक्रम विकास केन्द्र का काम पाठ्यक्रम बनाना है, नीति बनाना है। कोर्ट ने कहा कि पाठ्यक्रम विकास केन्द्र का काम व्याकरण बनाना नहीं है। सरकार के तरफ से जो दलील कोर्ट में दी गई थी उस पर कोर्ट ने सख्त टिप्पणी करते हुए पाठ्यक्रम विकास केन्द्र को अपनी हदें पार करते हुए व्याकरण में बदलाव करने का कोई अधिकार नहीं है। इसके अलावा कोर्ट ने तत्कालीन शिक्षा मंत्री के निर्देश को भी निरस्त कर दिया। कोर्ट ने यह भी कहा कि शिक्षा मंत्री के लिखित आदेश का कोई मतलब नहीं है। शब्दकोष से ॐ शब्द को हटाने के सभी स्तर के फैसले और निदेर्शों को तत्काल प्रभाव से निरस्त करने का आदेश कोर्ट के तरफ से दिया गया है।

साउथ कोरिया: बैटरी फैक्टरी में आग लगने के बाद मिले 20 शव

सियोल। दक्षिण कोरिया में एक बैटरी संयंत्र में आग लगने की घटना में कम से कम 20 लोगों की मौत हो गई है। सोमवार को सियोल के दक्षिण में ह्वासोंग में लिथियम बैटरी प्लांट में आग लगने के बाद लापता 23 लोगों में से अब तक मौके से 20 शव बरामद किए गए हैं। राष्ट्रपति यूं सुक योल ने लापता लोगों की तलाश और बचाव के लिए हर संभव प्रयास करने का निर्देश दिया है।

अग्निशमन कर्मियों के मुताबिक बैटरी प्लांट में आग लगने के बाद पूर्णकालिक और अंशकालिक श्रमिकों की दैनिक सूची भी आग में नष्ट हो गई है, इसलिए हताहतों की वास्तविक संख्या का पता नहीं चल पा रहा है। फिर भी लापता हुए 23 लोगों में से मौके से 20 शव बरामद किए गए हैं, जिससे मृतकों की संख्या और बढ़ने की आशंका है। उन्होंने कहा कि लापता हुए 23 लोगों में से 20 विदेशी हैं, जिनमें चीनी नागरिक भी हैं। सियोल से 45 किलोमीटर दूर दक्षिण में ह्वासोंग में लिथियम बैटरी निमार्ता एरिसेल के प्लांट में सुबह करीब 10:30 बजे लगी। अग्निशमन कर्मियों ने दोपहर 3 बजे तक मुख्य आग पर काबू पा लिया और प्लांट में जाकर 20 शव बरामद किये। टीवी फुटेज में जलते हुए प्लांट में छोटे-छोटे विस्फोट होते हुए दिखाई दिए और चिंगारी निकलती रही। यह तीन मंजिला प्लांट मजबूत कंक्रीट की इमारत में है, जिसका कुल क्षेत्रफल लगभग 2,300 वर्ग मीटर है। इसीलिए अग्निशामकों को आग बुझाने में कठिनाई हुई।आग बुझाने के दौरान जलती हुई लिथियम बैटरियों को संभालना मुश्किल हो गया। प्लांट की दूसरी मंजिल से भागकर आए एक चश्मदीद ने ह्वासोंग फायर स्टेशन को बताया कि आग लगने के समय एक बैटरी सेल में विस्फोट हुआ था। आग तेजी से फैली, क्योंकि अंदर बैटरी सेल लगातार फट रहे थे, जिससे बचावकर्मियों के लिए अंदर जाकर तलाशी लेना मुश्किल हो गया। माना जाता है कि प्लांट के अंदर कम से कम 35,000 बैटरियां हैं।